॥ श्रीः ॥

ललितललाम

ललितकौमुदी टीका सहित।

प्रसिद्ध कवि श्रीमतिरामजी के ललितललाम
ग्रन्थ की टीका।

जिसे

बूंदी राज्य प्रतिष्ठित वालटरकृत राजपूत-
हितकारिणी सभा तथा कौंसिल के
मेम्बर श्रीकविराज रावगुलाबसिंहजी
ने कविता प्रेमियों के हितार्थ रची,

और जिसे

बाबू रामकृष्णवर्म्मा भारतजीवनसम्पादक
ने उक्त कविराज जी की सहायता से
प्रकाश किया।

काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई।

सम्वत् १९५४।

प्रथम बार १००० मूल्य ॥/

धन्यवाद ।

आज हम अत्यन्त कृतज्ञता और धन्यवाद-पूर्वक निवेदन करते हैं कि इस अनूठे ग्रन्थ के प्रकाश करने में बूँदीनरेश श्री १०८ महाराज रघुबीरसिंह जी ने हमारी बहुत ही सहायता की है। महाराज जैसे विद्यानुरागी हैं वैसेही गुणग्राही भी हैं; इनकी गुणग्राहकता हमारे भारतबर्ष में सर्वत्र प्रसिद्ध है और उदारता बीरता सुजनतादि गुणों से तो महाराज परम्परा से भूषित चले आते हैं। ये समस्त गुण तो महाराज के वंश के पूर्वपुरुषों मे ऐसे विराजमान थे मानो उन्हीं के लिये इन गुणों की सृष्टि हुई थी। अंग्रेजी सर्कार मे भी श्री १०८ महाराज रघुबीरसिंह जी का बहुत मान्य है। यह इनकी अनूठी सुशीलता विद्यानुरागिता तथा गुणग्राहकताही का कारण है कि एक से एक भारी

सर्दार और विद्वज्जन महाराज के दर्बार में शोभा पा रहे हैं। हम अन्तःकरण से श्रीमहाराज को धन्यबाद देते हैं और जगदीश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमारेसुयोग्य महाराज बहादुर चिरायु होकर देशहितसाधनपूर्वक सदा प्रजा का पालन करते रहें।

रामकृष्णवर्म्मा
भारतजीवनसम्पादक
काशी।

ललितललाम के टीकाकार श्रीरावजी साहिब श्रीकविराज गुलाबसिंहजी का जीवनचरित्र।

ये कबिराजजी इन दिनों श्रीमन्महाराज बूंदीन्द्र शील-समुद्र श्री१०८ रघुबीरसिंहजी के दर्बार को भूषित करते हैं। इनके पूज्य पितामह श्रीसेढूरामजी को अलवर के महाराज श्रीबख़ावरसिंहजी ने सुकविजी की पदवी दी थी और इनके पूज्य पिताजी का नाम श्रीमहताबसिंहजी है। कविराजजी का जन्म अलवर राज्य के प्रथम स्वस्थान राजगढ़ में श्री सम्बत् १८८७ के भादों सुदी १ को हुआ। पाँचही वर्ष की अवस्था में पढ़ने लिखने का शौक़ अधिक हुआ, भाषा काव्य और संस्कृत में सारस्वतचन्द्रिका कण्ठस्थ कर गये थे। तदुपरान्त अलवर में आकर रावजी ने श्रीपूर्णमल्लजी से भाषा ग्रन्थ और संस्कृत ग्रन्थ अर्थ सहित पढ़े। फिर पण्डित जगन्नाथ जी से कुवलयानन्द काव्यप्रकाश आदिक ग्रन्थ भली प्रकार पढ़े। इसके अनन्तर अलवर महाराज श्रीशिवदानसिंहजी की महाराणीजी झालावाड़ की के श्रीमहाराजकुमार भये उनकी बधाई के अन्त में रावजी साहिब को पूरी इज्जत

और पूरी जीविका होने का बिचार हो गया था। उस समय से चन्द रोज पहिलेही एजण्टी हो गई जिससे कुछ दिन पीछे रावजी साहिब अलवर महाराज की सम्मति से सम्बत् १९१८ में झालावाड़ को चले, तब गैल में करौली महाराज श्रीजयसिंहपालजी से मिल वहां दस रोज रह कर आगे को चले तो बूंदी के महाराज श्री १०८ रामसिंह जो संस्कृत प्राकृति अपभ्रंस पिंगलादि भाषाओं के जानने वाले येइनकी बिद्या और काव्यशक्ति को देख बहुतही प्रसन्न हुये और भली प्रकार सत्कार देकर उन्होंने इनको अपने दर्बार में रख लिया, तब से ये कविराजजी आज पर्य्यन्त बूंदी दर्बार को ही सुशोभित कर रहे हैं। श्रीमहाराज बहादुर ने प्रसन्न हो कर इनको जलोदो और बाँक्यों दो ग्राम दिये और सालगिरह के उत्सव में बनी हुई बहुत लागत की खास पोशाक के दस्तूर से अधिक पाँच सौ रुपये का दुशाला घर के बिना धारण करा बख्शी फेर ताजीम और सिरपेचादि उत्तम भूषण छड़ी आदि सत्कार कर साखत सहित हाथी बख्शी उसपर इनको चढ़ा लवाजमा साथ देकर इनकी हवेली पहुंचाया फेर महाराज बहादुर श्री १०८ रघुबीरसिंहजी ने पगन के वास्ते सुवर्ण कड़ा बख्शा। राजपूताने में यह इज्जत बहुतही बड़ी गिनी जाती है और कठिनता से प्राप्त होती है। कविराजजी वाल्टर संस्थापित राजपूतहितकारिणी सभा के और कौंसिल

के मेम्बर हैं और महकमा रजिस्टरी के हाकिम हैं, और स· हर्ष प्रकाश करने में आता है कि हमारे काशीकविसमाज के एक मात्र भूषण हैं। बूंदी में उनकी बड़े सर्दारों में गि· नती है; ऐसा उत्तम विभव पाने पर भी श्रीराव साहब की सुशीलता और मिलनसारी प्रशंसा के योग्य है, । रावजी साहिब के रचित ग्रन्थ ये हैं। रुद्राष्टक १ रामाष्टक २ गङ्गा, ष्टक ३ शारदाष्टक ४ बालाष्टक ५ पावसपचीसी ६ प्रेमप· चीसी ७ रसपचीसी ८ समस्यापचीसी ९ गुलाब कोष कांड चार १० नामचन्द्रिका ११ नाम सिंधुकोश भाग चार १२ व्यंग्यार्थचन्द्रिका १३ वृहद्व्यंग्यार्थचन्द्रिका १४ भू षणचन्द्रिका १५ ललितकौमुदी १६ नीतिसिंधु खंड चार १७ नीतिमंजरी १८ नीतिचन्द्र भाग दोय १९ काव्यनियम २० बनिताभूषण २१ वृहद्बनिताभूषण २२ चिन्तातत्व २३ मू· र्खशतक २४ ध्यानरूप सवति का बहुकृष्णचरित्र २५ आदि त्यहृदय २६ कृष्णलीला २७ रामलीला २८ सुलोचनालीला २९ बिभीषण लीला ३० दुर्गास्तुति ३१ लक्षणकौमुदी ३२ कृष्णचरित्र में गोलोकखंड । वृन्दाबनखंड । मथुराखंड द्वारिकाखंड । बिज्ञानखंड । ३३ । कृष्णचरित्र सूची ३४ । इन्होंने अपने भाई के पुत्र श्रीरामनाथजी को गोद लिया है ये भी सिद्धान्तकौमदी आदि संस्कृत के ग्रन्थ और भाषा के ग्रन्थ बहुत पढ़े हैं। अच्छी कविता करते हैं इन्होंने स मस्यासार १ सतीचरित्र २ रामनीति ३ नीतिसार ४ शंभु

दशक ५ परमेश्वराष्टक ६ ये ग्रंथ बनाये हैं। राव जी के घर में भाषाकाव्य का ऐसा प्रचार है कि उनकी घरकी दासी-पुत्री चन्द्रकला बाई की कविता जिससे हमारे कविसमाज के सभी लोग पढ़ चुके हैं वास्तव में प्रशंसा के योग्य होती है। क्यों न हो. विद्वान का साहचर्य्य भी दूसरों को विद्वान कर देता है। श्रीचन्द्रकलाबाई के बनाये ग्रंथ जमुनाशतक १ रामचरित्र २ पदवीप्रकाश ३ महोत्सवप्रकास ४ ये उत्तम हैं हम लोग इनग्रंथो कोदेख चुके हैं और इनके विद्यार्थी अलवर में उमराव हैं किसनपुर के ठाकुर चहुवाण श्रीबिड़दसिंह जी इनके छोटे भाई श्रीईश्वरीसिंहजो ये अलवर महाराज श्री मङ्गलसिंह जी के साला हैं और धवाला केठाकुरन रूका श्रीहनुवतसिंहजो आदि बहुत ग्रंथ करता हैं। बूंदो में चौबे श्रीजगन्नाथजी आदि ग्रंथकर्त्ता हैं। जगदीश्वर श्री राव जी साहब को चिरायु करैं।

रामकृष्ण वर्म्मा।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ ललितललाम ।

कवि गुलाबराय कृत ।

ललितकौमुदी टीका सहित ।

दोहा ।

गणप गिरा गिरिजा गिरिश ग्रहपति गुरु गोपाल ।
राम सिया राधा रमा मो पर होहु कृपाल ॥१॥
हाथ जोरि बिनती करौं बार बार सिर नाय ।
टीका ललितललाम की तुमही देहु बनाय ॥२॥

अथ नृपबंशवर्णन – दोहा ।

है बूँदी अमरावती सुर से मनुज तमाम ।
तहँ सुरपति सम होत भौ भावसिंह मतिधाम ॥
शर शशि ऋषि भू * वर्ष मैं भावसिंह भौ भूप ।
भयो तिनहि के समय मैं ललितललाम अनूप ॥
भावसिंह नृप को तनय कृष्णसिंह बलवान ।
भौ हिन्दुन की रीति को रचक राम समान॥५॥

---

* १७१५ ।

कवित्त ।

एक समैं साह की पठाई फौज आई घोर पट्टन मैं मन्दिर के तोरन कौं ह्वै हथ्यार । सो सुनि सुजान कृष्णसिंह जू ने जाय तहाँ लीनौ घेरि केशव को मन्दिर महा उदार ॥ सुकवि गुलाब खग्ग खोलि धार बारिधि मैं खलन डुबाय छीनि लीने सब के हथ्यार । मन्दिर बचाय कित्ति कीनी महिमण्डल मैं राखी हद्द हिन्दुन की पैज बाँधि कै कुमार ॥ ६ ॥

कृष्णसिंह सूनु अनिरुद्धसिंह महाबीर दच्छिण मै जाय मरहट्ट जीते तीन बार । चौथे अवरङ्गजेब साह सुत आजम की बेगम कौं छीनि भये दक्खनी गरूरदार ॥ तब करि कोप खग्ग खोलि खल मौलि तोरि बेगम छिनाय जङ्ग जीति कित्ति कै अपार । रज रजपूतन की राखि लाज साहन की ता समै भयो सपूत हाडा हिन्दु को अधार ॥७॥

दोहा ।

सुत अनिरुद्ध भुवाल को भौ बुधसिंह नरेश ।
तिनकी कीरति जोन्ह सी फैली देश विदेश ॥८॥

छप्पय–एक दिना दरबार साहआलम के जातैं ।

मिल्यो यवन मदमत्त बकत कछु अनमिल बातैं॥
तीजी ड्योढ़ी माँहि खोज तहँ भूपहि आई ।
मारि कटारी राव देह खल खेह मिलाई ॥
पुनिससुतआजमहिमारिरनजयजसआलमकौदियो
तब पञ्चहजारी आप बुध महाराव राजा भयो ॥

दोहा ।

भयो भूप बुधसिंह को सुत उम्मेद भुवाल ।
जीति खग्ग बल सबल रिपु लीनौं सुजस बिसाल॥

कवित्त ।

काहू समै पाय भूलि भूमि बुधसिंह जू की खलन छिनाय रिपु रीति कछु काल की । तब करि कोप पैज रोपि श्री उमेदसिंह खग्ग खर धारन तैं खोन खल खाल की ॥ सुकवि गुलाब बिचलाय अरि सैन सब भूमि अपनाय द्विज दीन प्रतिपाल की । संग हित हाल करि जाचक निहाल करि नृपता बहाल करि कीरतिबिसाल की॥

दोहा ।

पुनि अजीत कौं राज दै धरि मन बिमल बिचार ।
सब तीरथ करि राजऋषि बसत भये केदार॥१२॥

कवित्त ।

प्रबल प्रतापी महिपाल श्रीउमेद-सुत महाराव राजा भे अजीतसिंह महाराज। तखत बिराजे पाय आयु साल अष्टादश तीखे, तेग धारि भये राजन के सिरताज ॥ सुकवि गुलाब कहै अधिक उपाधिकारि मैना मारि मारि करे अखिल अभूत काज। अकस बिचारि रान अरुसी सँघारि पुनि वय बीस साल माँझ लीनौं जाय सुरराज ॥ १३ ॥

दोहा ।

सुत अजीत को विष्णु वय मास चार दिन तीन।
किय राजर्षि उमेद नैं नाती तखतनसीन ॥१४॥

कवित्त ।

भयउ अजीत सुत विष्णुसिंह महावीर द्युति मैं दिवाकर सो कमनीय काम सो। सिन्धु सो गँभीरता मैं वीरता मैं पारथ सो बचन विशेषता मैं गुरु मतिधाम सो ॥ सुकवि गुलाब प्रजापालन मैं माधव सो बलि सो बिनै मैं अरि-नासन मैं बाम सो। धरमधुरीण धीर बलाबन्ध पातसाह सरल स्वभाव माँहि राव राजा राम सो ॥ १५ ॥

दोहा।

विष्णुसिंह के सुत भयो राम धर्म्म-अवतार ।
ज्यौं दशरथ के राम भौ सुमति जगत हितकार॥

कवित्त।

सोभा मै निसाकर सो तेज मैं दिवाकर सो दान मैं उमाबर सो कीरति को धाम है। रूप मैं मनोज सो अलिप्त मैं सरोज सो है भोज काव्य मौज माँहि चोजही सौं काम है॥ सुकवि गुलाब कहै ज्ञान मैं जनक सो है बनक सरीर को सुरेस सो तमाम है॥ बैरिन मैं विप्रराम नीति माँहि जदुराम बुँदीनाथ राजा राम शील माँहि राम है॥ १७॥

पूरन गँभीर धीर बहुबाहिनी को पति धारत रतन महा राखत प्रमान है। लखि द्विजराज करै हरष अपार मन पानिप विपुल अति दानी क्षमावान है॥ सुकवि गुलाब शरनागत अभयकारी हरि उरधारी उपकारीहू महान है। बलावन्ध शैल पतसाह कवि कौल भानु रामसिंह भूतलेन्द्र सागर समान है॥ १८॥

दोहा।

रामसिंह नृप के प्रथम जुग सुत भये सुजान ।
भीमसिंह बलधर्म अरु रङ्गनाथ छबि-थान ॥१९॥

कवित्त।

दीनदयाधारी देखि विक्रम बिचार्‌यो सब हर अनुमान्यौं लखि बीरता की बार मैं। धीरता निहारि राम जान्यौं कविराजन नैं सुरतरु ठान्यौ दीह दान निरधार मैं॥ सुकवि गुलाब आब देखि देखि आनन की मदन बखान्यौं मनमोहन बिचार मैं। बल बिसतार माँहि मान्यौं भीम भीमसिंह पारथ पिछान्यौ धनु बान के प्रचार मैं॥२०॥

बालक सुरेश को सो पालक अशेषन को टालक दुनी दुख को छबिधाम काम सो। तेज मैं दिनेश सो गणेश सो बिचार माँहि वचन विशेषता मैं गुरु अभिराम सो॥ सुकवि गुलाब कनकाचल सो धीरता मैं सिन्धु सो गँभीरता मैं बीरता मैं बाम सो। श्याम सो सुजान खलहरन कलान माँहि पितु अनुशासन मैं रङ्गनाथ राम सो॥ २१ ॥

दोहा।

इन जुग राजकुमार नैं पितु आगैही जाय ।
बास कस्यो सुरलोक मैं अनुचित समय बसाय ॥
ता पाछै नृप राम कै उपजे चार कुमार ।
नखशिख शुभलच्छण भरे छत्र धर्म अवतार॥२३॥

कवित्त।

शील सुधी अधिक उदार रघुवीरसिंह परम दयालु गुणधाम काम अवतार। रङ्गराजसिंह मतिसागर उदार अति द्विजहितकार खलटारक अरि विदार॥ सुकवि गुलाब रघुराजसिंह महा धीर सरल सुशील प्रजापाल दीनदुखहार। रघु-बरसिंह सिंह सोहै रन-कानन को दुज्जन कौं दायक प्रबाह खर खग्गधार ॥२४॥

करन समान मन पारथ सो पूरो पन काम सो अनूप तन पृथु सो पृथी को वर। बलि सो बिचार उपकार-कर विक्रम सो हरि सो हुस्यार कार हर सो दया को घर॥ सुकवि गुलाब रण-धीर रघुबीरसिंह सिन्धु सो गँभीर द्विज दीन उर पीर-हर। परम प्रतापी अरि-तापी निज हुक्म-थापी दुज्जन उथापी जुवराज सुत राम कर॥२५॥

दोहा।

रामसिंह नृप के प्रथम जुग सुत भये सुजान ।
भीमसिंह बलधर्म अरु रङ्गनाथ छवि-थान ॥१६॥

कवित्त।

दीनदयाधारी देखि विक्रम विचाज्यो सब हर अनुमान्यौं लखि बीरता की बार मैं। धीरता निहारि राम जान्यौं कविराजन नैं सुरतरु ठान्यौ दीह दान निरधार मैं॥ सुकवि गुलाब आब देखि देखि आनन की मदन बखान्यौं मनमोहन विचार मैं। बल विसतार माँहि मान्यौं भीम भीमसिंह पारथ पिछान्यौ धनु बान के प्रचार मैं॥२०॥

बालक सुरेश को सो पालक अशेषन को टालक दुनी दुख को छविधाम काम सो। तेज मैं दिनेश सो गणेश सो विचार माँहि वचन विशेषता मैं गुरु अभिराम सो॥ सुकवि गुलाब कनकाचल सो धीरता मैं सिन्धु सो गँभीरता मैं बीरता मैं बाम सो। श्याम सो सुजान खलहरन कलान माँहि पितु अनुशासन मैं रङ्गनाथ राम सो॥ २१॥

दोहा।

इन जुग राजकुमार नैं पितु आगेही जाय ।
बास कर्यो सुरलोक मैं अनुचित समय बसाय॥
ता पाछै न्टप राम के उपजे चार कुमार ।
नखशिख शुभलच्छण भरे छत्र धर्म अवतार॥२३॥

कवित्त।

शील सुधी अधिक उदार रघुवीरसिंह परम दयालु गुणधाम काम-अवतार। रङ्गराजसिंह मतिसागर उदार अति द्विजहितकार खलटारक अरि विदार॥ सुकवि गुलाब रघुराजसिंह महा धीर सरल सुशील प्रजापाल दीनदुखहार। रघु-बरसिंह सिंह सोहै रन-कानन को दुज्जन कौं दायक प्रवाह खर खग्गधार॥२४॥

करन समान मन पारथ सो पूरो पन काम सो अनूप तन पृथु सो पृथी को वर। बलि सो बिचार उपकार-कर विक्रम सो हरि सो हुस्यार कार हर सो दया को घर॥ सुकवि गुलाब रण-धीर रघुबीरसिंह सिन्धु सो गँभीर द्विज दीन उर पीर-हर। परम प्रतापी अरि-तापी निज हुक्म-थापी दुज्जन उथापी जुवराज सुतराम कर॥२५॥

जौलौं या मही मैं शशि सूर को प्रकाश होय जौलौं ईस सीस पै प्रबाह गङ्गपानी को। जौलौं नभमण्डल मैं थान रहै तारन को जौलौं जग बीच है बिचार बर बानी को॥ सुकवि गुलाब जौलौं शेष पै धरातल है जौलौं है पुरान मैं नि-सान बलि ज्ञानी को। जौलौं करैं परम अनन्द चव नन्दन रु तौलौं होहु अचल प्रताप राम दानी को॥ २६॥

दोहा।

सभा माँहि इक दिवस यह दियो हुक्म नृपराम।
कियो ग्रन्थ मतिराम नैं नीको ललितललाम॥
पै टीका काहु न करी जो अब टीका होय।
कठिन अर्थ आशयहु मैं तौ समुझैं सब कोय॥
कोविद कवि गुरु शुक्र से जद्यपि हुते अपार।
तदपि अल्पमति मैं धरी आज्ञा सीस उदार॥
सम्बत्*शशि दिशनिधि अवनि क्वारमास रविवार।
कृष्णपच्छ दशमी बिषै भौ टीका अवतार॥३०॥

अथ कविबंश वर्णन—कवित्त।

बन्दीबंश माँहि भये प्रगट अनन्तराम पट्टन

* १९४१।

सैं तौरनाथ माने मुख्य मन्त्रकार। जैपुरादि रा-
जनहू ताजीमादि मानजुत दीनें दान तिनही
कौं योग्य जानि केही बार॥ तिहिँ सुत सेढूराम
आये अलवर माँझ सुकवि बखानि कियो बखतेश
सतकार। कवि महताब भये तासु पुत्र शीलसिंधु
तिनकै गुलाब भयो ग्रन्थ को प्रकासकार॥३१॥

बालकपने सैं मन खींचि जग कामन सौं
सुरनर बानी विषै कीनौं श्रम को समाज। अल-
वरनाथ करी प्रीति औ प्रतीति अति तौहू सीख
लेय कियो देशाटनही को साज॥ प्रथम करोली-
नाथ दीनौं सनमान अति दिन दश बसि बूँदी
मारग लियो दराज। तहँ हित ठानि सनमानि
रुजगार करि महाराव राजाराम राखि लियो म-
हाराज॥ ३२॥

दोहा।

बहुरि खास पौसाकहू सालगिरह की बेस।
विन धारन कीनी हरषि दीनी राम नरेश॥३३॥
सहजादे साहिब कियो मेल आगरै चार।
बहुरि लाठ साहिब कियो दिल्ली मधि दरबार॥
राम शिविर अँगरेज नृप तहँ आये जिहिँ बार।

तब हौंहू हाजिर रह्यो आदर सहित उदार॥३५॥
पुनि सम्बत चौंतीस मैं दियो जलोदो ग्राम ।
अरु अटोक ड्योढ़ी करी पैठत वखत तमाम॥५६॥
पुनि दीनी ताजीम अरु ग्राम दूसरो दीन ।
साखति जुत गज एक दिन दीनें राम प्रवीन॥३७॥
देलवाज मो साथ अरु सादर गज चढ़वाय ।
खिलत सहित नृपराम नै दियो सदन पहुँचाय॥
अब करि पञ्च मुसाहिब रु सामिल राखि सलाह ।
दियो प्रकृति अधिकार मुहि रामसिंह नरनाह ॥
श्रीजुत जसजुत विजयजुत जुत मन बाँछित काम।
राजौ महि सिर शेष लौं सुतन सहित नृपराम॥

अथ ललितकौमुदी टीका सहित ललितललाम ।

दोहा ।

सुखद साधुगन कौं सदा गजमुख दानि उदार ।
सेवनीय सब जगत को जग मा बाप कुमार॥४१॥

यह मङ्गलाचरण है मङ्गलाचरण वह कहावै जो ग्रन्थ के आदि में विघ्ननिवारण के अर्थ इष्टदेव कौं मनाइये सो तीन प्रकार को है जामें वस्तु को जतायबो होय सो वस्तु निर्देशात्मक १ जामें आशीर्वाद होय सो आशीर्वादात्मक २ जामें नमस्कार होय सो नमस्कारात्मक ३ । यहां केवल वस्तु निर्देश है जय नमः वाचक शब्द नहीं यातें यह वस्तु निर्देशात्मक मङ्गलाचरण है । साधुन के गन कौं सदा सुखदायक है गज को मुख सो मुख है दानी है उदार दक्षिण है अथवा बड़ो दानो है सब जगत के सेवन करिवे योग्य है, जगत् के मा बाप जो पार्वती शिव तिनको कुमार है । उदारो दातृमहतोर्दक्षिणेऽचाभिधेयवत् । इति मेदिनी ।

दोहा ।

कवि मतिराम गणेश कौं सुमिरत सुख सरसात ।
श्रौंन पौंन लागें विघन तूल तूल उड़ि जात॥४२॥

मतिराम कवि कहै हैं गणेश कौं सुमिरतें सुख सरसावत है कानन की पवन लगतैंही विघ्न प्रत्यूहन को तूल लम्बाव

अर्थात् फैलाव सोई भयो तूल रूई सो उड़ि जात है, अथवा विघ्न है सो रूई के तुल्य उड़ि जात है यहां सुमिरत सुख सरसात में हेतु, विघ्न में रूपक, तूल तूल में जमकालङ्कार है।

दोहा।

मदरसमत्तमिलिन्दगनगानमुदित गणनाथ ।
सुमिरत कविमतिराम कौं ऋद्धिसिद्धि निधि हाथ॥

मद जल करिकै मस्त जो भ्रमरन के समूह तिनके गुञ्जार करिकै प्रसन्न जो गणेश तिनकौं सुमिरतैं मतिराम कवि कौं सम्पूर्ण ऋद्धि आठौं सिद्धि नवनिधि हाथ मैं हैं। हेतु अलङ्कार है॥ ४३॥

सवैया।

पारबती के पयोधर के पय ज्योति जगै अति उज्जल जो है। ईश के सीस शशी सुरसिन्धु अमीजुत पावन पाप वियो है॥ सिद्धिवधू कुच मण्डन को मतिराम मनौं मुकता मन मोहै। साधुन को सु बसी करतार करीमुख के कर शीकर सोहै॥ ४४॥

साधुन कौं भली प्रकार बस करिबे वारो और तारिबे वारो करीमुख जो गणेश ताके सुंड पै सीकर जो जलकन सोहै है सो कैसो है पार्वती के कुच के ऊपर दुग्ध बिन्दु है जाकी जोति जगै है फेरि जलकन कैसो है, मस्तक पै

मानौ चन्द्रमा है फेरि महादेव के मस्तक पै सुरसिंधु गंगा हैं। शशि कैसो हैं अमृत सहित है। गंगा कैसी हैं पवित्र हैं और पापन कों दूर करै हैं। मतिराम कहै है सिद्धि है साई भई स्त्री ताके कुच के मंडन को मानो मुक्ता है मन कों मोहै है। उक्तास्पदावस्तूत्प्रेक्षालंकार है॥ ४४॥

छप्पय।

मुकुट मोर पर पुञ्ज मञ्जु सुरधनुष बिराजत।
पीतबसन छिन२ नवीन छिनछबि छबि छाजत॥
बचन मधुर गंभीर घोष बरषत प्रमोदबर।
ब्रन्दावन बर बाल-बेलिवृन्दनविलासकर॥
मतिराम सकल सन्तापहर भावसिंह भूपाल-मन।
गोविन्द नंदनन्दन सुखद घन सुन्दर आनंदघन॥

महाराज भावसिंहजी के आनन्दघन नामक सुन्दर इष्टदेव ठाकुर हैं जिनकी अब भी पूजा होती है तिनको घन समान रूपक करिकै वर्णन है; सो कैसे हैं गोविन्द हैं नँद के नन्दन हैं सुख के दाता हैं। मोर की पाँखन के समूह को सुन्दर मुकुट है सो इन्द्र को धनुष बिराजै है छिन २ मैं नवीन पीतबसन है सो छिनछबि जो बीजुरी ताकी छबि छाजै है, मधुर गम्भीर बचन हैं सो घोष नाम गर्जना है सुन्दर प्रमोद है सो बर्षा है ब्रन्दावन की सुन्दर बनिता हैं सोई भई बेलिन को समूह तिनसें बिलास को

करिवेवारो है, मतिराम कवि कहै है भावसिंह राजा के मन के सम्पूर्ण सन्तापन कौं हरिवेवारो है सम अभेदरूप-कालङ्कार है ॥ ४५ ॥ दोहा ।

जगत-विदित बूँदीनगर सुख सम्पत्ति को धाम ।
कलिजुगह्रु मैं सत्यजुग तहाँ करत विश्राम ॥

बूंदीनगर है सो जगत् मैं प्रगट है सम्पूर्ण सम्पदान को घर है। जहां कलिजुग मैं भी सत्यजुग आराम करै है॥४६॥

पढ़त सुनत मन दै निगम आगम स्मृति पुरान ।
गीत कवित्त कलान के जहँ सब लोग सुजान ॥

जहां बूंदी मैं मन लगाय कै लोग निगम आगम स्मृति पुराण पढ़ते सुनते हैं गीत कवित्त कलान मैं सब लोग सुजान हैं ॥ ४७ ॥

सरद-बारिधर से लसत अमल धौरहर धौल ।
चित्रनि-चित्रित सिखर जहँ इन्द्रधनुष से नौल॥

सरदऋतु के मेघ से निर्म्मल धौले महल लसत हैं जहँ बूंदी मैं तस्वीरन करिकै चित्रित सिखर हैं सो नवीन इन्द्र-धनुष से हैं । पूर्णोपमालङ्कार है ॥ ४८ ॥

महलनि ऊपर जहँ बने कञ्चनकलस अनूप ।
निज प्रभानि सौं करत हैं गगन पीत अनुरूप ॥

जहँ बूंदी मैं महलनि के ऊपर कञ्चन के सुन्दर कलस बने हैं अपनी कान्ति सौं आकास कौं पीत रङ्ग करत हैं ॥

जहँ बिमान-बनितान के श्रमजल हरत अनूप ।
सौध-पताकनि के बसन होइ बिजन अनुरूप ॥

जहां देवाङ्गनान के श्रमजल कौं भली प्रकार हरैं हैं महलनि की पताकान के वस्त्र पङ्खा के म्वाफिक हो कर ॥

बीनाबेनु-निनाद म्रग मोहि अचल करि चन्द ।
सौध-सिखर ऊपर जहाँ दम्पति करत अनन्द ॥

बीना और बेन के शब्द सें मृगन कौं मोहि कै चन्द्रमा कौं अचल करिकै जहां बूंदी मैं दम्पति महलनि के शिखर के ऊपर आनन्द करते हैं। अर्थात् चन्द्रमा के रथ कै मृग बाहन हैं उनके मोहे तैं रथ रुकत है ॥ ५१ ॥

जहाँ छहौं ऋतु मैं मधुर सुनि म्रदङ्ग म्रदु सोर।
सङ्ग ललित ललनानि के नृत्य करत ग्रह-मोर॥

बूंदी मैं छहू ऋतु मैं मीठे कोमल पखावजन के शब्द सुनि कै सुन्दर स्त्रियन के साथ पाले मयूर नाच करते हैं। भ्रमालङ्कार है। मोरन कौं मृदङ्गरव मैं घनरव को भ्रम है॥

मरकत लाल प्रबाल मनि मुकुत हीर अवदात।
ललित राजपथ मैं जहाँ जरकस बसन बिकात॥

पन्ना लाल मूंगा मणि मोती हीरा उज्ज्वल बूंदी मैं सुन्दर बाजार मैं जरी के वस्त्र बिकते हैं ॥ ५२ ॥

मद जल बरषत भूमि कैं जलधर सम मातङ्ग ।
बिना परनि कै खग जहाँ सुन्दर तरल तुरङ्ग ॥

पृथ्वी के मेघ समान हाथी हैं सो मस्ती के पानी कौं बर्षते हैं, बूंदी में सुन्दर चञ्चल घोड़े हैं सो बिना पाँखन के पक्षी हैं। न्यून अभेदरूपकालङ्कार है॥ ५४॥

सदा प्रफुल्लित फलित जहँ द्रुम बेलिन के बाग।
अलिकोकिलकलधुनिसुनतलहतश्रवनअनुराग॥

बूंदी में वृक्ष वेलड़ीन के बाग हैं सो सदा फूलैं फलै हैं भौंर कोकिलन के सुन्दर शब्द सुनि कै कान अनुराग कौं प्राप्त होते हैं॥ ५५॥

कमल कुमुद कुवलयन के परिमल मधुर पराग।
सुरभि-सलिल-पूरे जहाँ वापी कूप तड़ाग॥५६॥

कमल कुमुद कुवलयन के सुगन्ध और मीठे पराग हैं सुन्दर जल के पूरे बूंदी में बावड़ी कुवां तालाब हैं॥ ५६॥

शुक चकोर चातक चुहिल कोक मत्त कलहंस।
जहँ तरवर सरवरन के लसत ललित अवतंस॥

सुवा चकोर पपीहा चुहिल करते हैं चकवा हंस मस्त हैं बूंदी में तालावन के वृक्ष सुन्दरन के शिरोमणि लसते हैं।

अक्षयबट बालक-उदर ज्यौं संसार समाय।
सकलजगत-पानिप रह्यो बूँदी मैं ठहराय॥५८॥

प्रलयकाल मैं अक्षयबट मैं नारायण बाल रूप धरि कै रहै हैं ताके पेट मैं जैसे संसार समावे है तैसे सम्पूर्ण जगत् को पानी अर्थात् तेज बूंदी मैं ठहरि रह्यो है, दृष्टान्तालङ्कार।

तामैं प्रतिबिम्बित मनौं सम्पतिजुत सुरलोक ।
घर घर नर नारी लसैं दिव्य रूप के ओक॥५९॥

ता पानिप में मानौं सम्पति सहित देवलोक झलकै है। घर घर के नर नारो हैं सो दिव्यरूप के लसैं हैं और ओक स्थान भो दिव्यरूप के लसैं हैं अर्थात् मनुष्य मकान सुरलोक कैसे हैं ॥ ५९ ॥

चन्द्रमुखिन के भौंहजुग कुटिल कठोर उरोज ।
बाननि सौं मन कौं जहाँ मारत एक मनोज ॥

स्त्रियन की भौंह दो यही कुटिल हैं. कठोर कुचही हैं बूंदो मैं एक मनोजही बाननि सौं मन कौं मारे है अर्थात् कुटिल कठोर मारक कोई नहीं है। परिसंख्यालङ्कार॥६०॥

जहाँ चित्त-चोरी करै मधुर-बदन-मुसकानि ।
रूप ठगत है हगन कौं और न दूजो जानि॥६१॥

बूंदो मैं मधुर मुख मुसकानि है सो चित्त की चोरी करै है नैननि कौं रूप है सो ठगै है और दूसरो नहीं जानौं अर्थात् चोर ठग नहीं हैं। परिसंख्यालङ्कार॥ ६१ ॥

ता नगरी को प्रभु बड़ो हाड़ा सुरजनराव ।
रच्यो एक सब गुननि को बर बिरञ्चि समुदाव॥

ता नगरी को स्वामी समर्थ हाड़ो सुरजनराव होत भयो सो मानौं विधि नैं सब गुनन को सुन्दर एक समुदाव रच्यो है ॥ ६२ ॥

छप्पय।

एक धर्म्म ग्रह खम्भ जम्भरिपु-रूप अवनि पर ।
एक बुद्धि गम्भीर धीर बीराधि बीरवर ॥
एक ओज अवतार सकल सरनागतरच्छक ।
एक जासु करवाल निखिल खलकुल कहँ तच्छक॥
मतिरामएकदातानिमनिजगजसअमलप्रगट्टियउ।
चहुवानबंश-अवतंस डमि एक राव सुरजन भयउ॥

धर्म्म घर को थम्भ एक भयो, पृथ्वी पै इन्द्र समान एक भयो, बुद्धिमान गम्भीर धीरवान बीरन को अधिबीरन को पति एक भयो, प्रताप को अवतार और सम्पूर्ण सरनागतन को रच्छक एक भयो, जाको खड्ग सम्पूर्ण दुष्टन के समूह कौं सर्प एक भयो, मतिराम कहै है दातान में मणि एक भयो जगत् मैं निर्म्मल जस प्रगट कियो चहुवानबंश को शिरोमणि या प्रकार एक सुरजनराव भयो ॥ ६२ ॥

मनहरन।

दान समै गनै धन टन सों कुबेरहू को तनक सुमेरु महादानि ऊँचे मन को । पृथु सों प्रथित पृथ्वी प्रबल प्रतापवन्त प्रभु पुरहूत सों प्रगट पूरे पन को ॥ मतिराम कहै बैरी-बारन बिदारिबे कौं रूप धरें राजै मृगराज रनबन को।

दुरजनबधू-उरजन को सिँगारहर ऐसो जस गावैं
सुरजन सुरजन को ॥ ६४ ॥

दान समय मैं कुबेर क धन कौं भी तृन सम गिनै है, सुमेरु कौं भी छोटो गिनै है ऊँचा मन को महादानी है, पृथ्वी पै पृथु राजा सों स्थित है प्रबल प्रतापवन्त है इन्द्र सो प्रभु है प्रगटही पूरेपन को है। मतिराम कहै है शत्रु हैं सोही भये हाथी तिनके बिदारिबे कौं मानौं रूप धरें हुये रनरूपी बन को सिंह राजै है बैरीन की स्त्रियन के कुचन के सिँगार कौं दूर करत है। अर्थात् बैरीन कौं मारि गेरै तब बैरी-बधू हार उतारि गेरैं देव औ मनुष्य सुरजनसिंह को ऐसो जस गावैं हैं। बैरी बारनरूपक, सुरजन सुरजन जमक॥६४॥

दोहा।

भयो भोज सुरजन-तनै अतुल ओज की खानि।
हिन्दुन की राखी सरम निज मूँछन मैं आनि॥

सुरजनसिंह को सुत भोज भयो सो अप्रमाण प्रताप की खानि भयो हिन्दुन की लाज अपनी मूंछन मैं लाय राखी अर्थात् बादशाह की माता मरी तब सब राजान की मूंछ डाढ़ी मुड़ाइवे को हुक्म भयो तासौं सब राजान ने मूंछ डाढ़ो मुंड़वाई ,भोज ने नहीं मुंड़वाई ॥ ६५ ॥

मनहरन।

जेते ऐंड़दार दरबार-सिरदार सब ऊपर प्रताप दिल्लीपति को अभङ्ग भो । मतिराम कहै

करवार के कसैया केते गाडर से मूँड़े जग हाँसी को प्रसङ्ग भौ ॥ सुरजन-सुत रज-लाज-रखवारो एक भोजही तैं साहि को हुकम-पग पङ्ग भौ । मूँछनि सौं राव मुख लाल रंग देखि मुख औ-रनि को मूँछनि बिनाही स्याम रंग भौ ॥ ६६ ॥

जितने अकड़वाले साहो को सभा के सर्दार थे उन सब के ऊपर दिल्लीनाथ को प्रताप अभङ्ग भयो अर्थात् कोई पै मूंछ मुड़ावा को हुक्म मेट्यो नहीं गयो। मतिराम कहै है कितनेही खडग बाँधनेवाले भेंड़ की तरह मूंड़े. जगत् में हाँसी को जिकर हुये सुरजनसिंह को पुत्र रजपूती की लाज को रखनेवाला एक भोजही से पातसाह को हुक्म पंग, पाँगलो भयो अर्थात् भोज ने हुक्म नहीं मान्यौं, मूंछनि सहित राव को मुख लालरङ्ग को देखिके औरनि को मुख मूंछनि बिनाही श्यामरङ्ग भयो। गाडर से मूंड़े पूर्णोपमा ६६

दोहा।

वंश-बारिनिधि-रतन भौ रतन भोज को नन्द ।
साहनि सौं रन रंग मै जीत्यौ बखतबिलन्द ॥

वंश है सोही भयो समुद्र तामे रत्न भयो भोज को सुत, रत्नसिंह है सो पातसाहन सौं संग्राम के रङ्ग में बखतबि-लन्द जीत्यो। रूपक ॥ ६७ ॥

मनहरन ।

बिगर हथ्यारन हजूर आइबे को हुक्म मान्यौं नहि दिल्लीपति आलमपनाह को । मतिराम कहै दल दक्खिनी समेत साहिजहाँ सो हटायो बीर बारिधि उछाह को ॥ भोज को सपूत भयो फौज को सिंगार अति ओज को दिनेश दुरजन दिलदाह को । रावरतनेश कर ओट राख्यो करि वार करिवार-ओट राख्यौ कोट पातसाह को ९८

हथियारन बिना दर्बार में आइबे को हुक्म नहीं मान्यौं दिल्लीनाथ जगत के रक्षक को, अर्थात् पातसाह ने हुक्म दियो हो कि सब राजा बिना शस्त्र दर्बार मैं आया करैं सो रतेश ने नहीं मान्यौ । मतिराम कहै है दक्षिण की फौज समेत शाहजहाँ हटा दियो बीर और उछाह को समुद्र भोज को सपूत है सो फौज को सिंगार भयो, प्रताप को सूरज, बैरीन के मन कौं जराइबोवारो रावरतनेश ने हाथ में खड्ग झेलि राख्यौ और वार करिकै पातसाह को कोट आड में राख्यौ अर्थात् खडग चलाय कै कोट बचायो । करि वार करिवार जमक ॥ ९८ ॥

दोहा ।

भयो राव रतनेश को गोपीनाथ कुमार ।
सुजस अपार बखानिये दान कृपान उदार ॥ ९९ ॥

राव रत्नेश कै कुमार गोपीनाथ भयो जाको सुजस अपार बखानिये है, दान कृपान मैं उदार भयो ॥ ६९ ॥

मनहरन ।

संगर मैं सिंह-सम कीनें करिवर सुरपुर के निवासी सूर शत्रुन के साथ के। कहै मतिराम गज गाँव दै निवाजि कीनें सकल निहाल जे ग-वैया गुनगाथ के॥ राव रतनेश के कुमार के सु-जस फैलि रहे पुहुमी मैं ज्यौं प्रवाह गंग पाथ के। रीझ खीज मौज फौज दान औ कृपान ऊँचे जगत बखानैं दोऊ हाथ गोपीनाथ के ॥ ७० ॥

संग्राम मैं सिंहसमान गोपीनाथ ने, शत्रुन के साथ के सूर जे हैं तेही भये हाथी तिनकौं देवलोक के बासी किये अर्थात् मारि नांखे मतिराम कहै है निवाजि कै गज ग्राम दे करिकै गुन कथान के गानेवाले सब निहाल किये। राव रत्नेश के सुत के सुजस हैं सो पुहुमी मैं फैलि रहे हैं, जैसे गङ्गा के जल के बहाव । रीझ मैं खीज मैं मौज मैं फौज मैं दान मैं और कृपान मैं जगत् है सो गोपीनाथ के दानौं हाथ ऊँचे बखानै है। लुप्तोपमारूपक ॥ ७० ॥

दोहा ।

गोपीनाथ-तनै भयो पानिप-पारावार ।
शत्रुशाल छितिपालमनि छत्रधर्म्म-अवतार ॥७१॥

गोपीनाथ कै सुत शत्रुशाल भयो सो छबि को समुद्र भयो पृथ्वीपालकन मैं मनि औ छत्र धर्म्म को अवतार भयो॥

मनहरन।

पण्डित सुकवि भाट चारन को गुन समुझैया सावधान सदा सुजस विधान मैं। कवि मतिराम जाको तेजपुञ्ज दिनकर दुज्जन को दाहकर दसहूँ दिसान मैं ॥ गोपीनाथ-नन्द चित चाही बकसीसनि सौं जाचक धनेश कीनें सकल जहान मैं। ज्ञान मैं दिवान शत्रुशाल सुरुगुरु साहिबी मैं सुरपति सुर-तरवर दान मैं ॥ ७२ ॥

पडित सुकवि भाटचारन इनके गुन को समुझैया सदा सुजस की बिधि मैं सावधान। मतिराम कहै है जाको प्रताप गन सूर्य है सो दशों दिशान मैं दुर्जन कौं जराइवेवारो है, गोपीनाथ के नन्द नैं चित्त को चाही बकसीसन सौं संपूर्ण जगत के जाचक कुबेर किये, दिवान शत्रुशाल है सो ज्ञान मैं बृहस्पति है प्रभुता मैं इन्द्र है दान मैं कल्पवृक्ष है। रूपक अत्युक्ति उल्लेखालङ्कार है ॥ ७२ ॥

सवैया।

औरँग दारा जुरे दोउ जंग भये भट युद्ध बिनोद बिलासी। मारू बजै मतिराम बषानैं भई अति अस्त्रनि की बरखा सी। नाथ-तनै तिहिँ ठौर

भिर्यो जिय जानि कै छचिन कौं रन कासी ॥
सीस भयो हर हार सुमेरु छता भयो आपु सुमेरु
को बासी ॥ ७३ ॥

औरंगजेब और दारा साह दोनों जंग मैं जुरे भट हैं सो युद्ध के बिनोद के बिलासी भये मारू राग बजै है, मतिराम बषानै है अस्त्रनि की अति बर्षा सो भई तिहि ठौर मैं गोपीनाथ को सुत भिर्यो जीव मैं छत्रीन कौं रन है सो कासी जानि कै अर्थात् मुक्तिदाता समुझि कै शत्रुशाल को सीस है सो महादेव के हार को सुमेर भयो अर्थात् मुंडमाल को सुमेर और राजा आपु सुमेर को बासी भयो अर्थात् देवता भयो ॥ ७३ ॥

दोहा।

शत्रुशाल सुत सत्य मैं भावसिंह भूपाल ।
एक जगत मैं जगत है सब हिंदुन की ढाल ॥७४॥

शत्रु शाल को सुत भावसिंह भूपाल है सो सत्यही जगत मैं सब हिंदून की एक ढाल जगमगावै है ॥ ७४ ॥

छप्पै।

तिमिरतुलित तुरकान प्रबल दिशि बिदिशि प्रगट्टत। चलत पंथ पंथीन धरम श्रुति करम निघट्टत। लखत न लोचन लोक अवनिपति मोह नींद रस। धरनि बलय सब करत जानि कलि-

काल आप बस। मतिराम तेज अति जगमगत भावसिंह भूपाल महँ। दिनकर दिवान दिन दिन उदित करत सुदिन सब जगत कहँ ॥ ७५ ॥

अन्धकार तुल्य प्रबल मुसलमानो दिशा विदिशान मैं प्रगटतैं धर्म श्रुति कर्मरूप पन्थ के मिटतैं धर्मात्मा पथिकन के न चलतैं भूमिपाल राजा हैं सो अज्ञान रूप नींद के रस मैं लोक कौं नैनन सौं नहीं देखतैं कलिकाल मैं सब पृथ्वी मंडल कौं अपने बस करत जानि करिकै। मतिराम कहै है तेज अत्यन्त जगमगावै है, भावसिंह भूपाल मैं दिनकर समान दिवान है सो नित्यप्रति अपनौं उदय करतो भयो सब जगत कौं सुन्दर दिन करै है। उपमालङ्कार है ॥

मनहरन।

परम प्रवीन धीर धरमधुरीन दीनबन्धु सदा जाकी परमेसुर मैं मति है। दुज्जन बिहाल करि जाचक निहाल करि जगत मैं कीरति जगाई जोति अति है। राव शत्रुशाल को सपूत पूत भावसिंह मतिराम कहै जाहिँ साहिबी फबति है। जानपति दानपति हाड़ा हिन्दुवानपति दिल्लीपति-दलपति बलाबन्धपति है ॥ ७६ ॥

अति चतुर है, धीर है, धर्म की धूर कौं धारण करिबे वारो है, दीनन को सहायक है जाकी सदा नारायण मैं

बुद्धि है, अर्थात् परमेश्वर में प्रीति है दुर्जनन कौं बिगारिवे वारो है, जाचकन कौं निहाल करिबेवारो है, जगत में जस की अति जोति जगाई है। मतिराम कहै है राव शत्रुशाल को सपूत पूत भावसिंह है, ताकौं साहिबी सोहै है, सुजान को पति है, दान को पति है, हाड़ान को पति है, दिल्लीनाथकी फौजको पति है, बलाबन्ध पर्वतको पति है॥

सवैया॥

मौजन सौं मतिराम कहै कबि लोगन कौं जिमि भोज बढ़ावै। रोस किये रनमण्डल मैं खल-देह की खालनि भूमि मढ़ावै॥ रीझहू खीज मैं राव सता-सुत कीरति मैं अति जोति चढ़ावै। भाऊ दिवान गुरू सब भूपर भूपन दान कृपान पढ़ावै॥ ७६॥

मतिराम कहै है मौजन सौं कवि लोगन कौं भोज की तरह बढ़ावै है अर्थात् भोजवत्सत्कार बकसीस करै है, रोस करने पै संग्राम मंडल मैं दुष्टन की देह की खालनि सौं पृथ्वी कौं मढ़ावै है अर्थात् मारि कै जमीन पै पटकि दे है, रीझ मैं भी खीझ मैं भी राव शत्रुशाल को सुत है सो कीरति मैं अत्यन्त जोति चढ़ावै है। दिवान भावसिंह है सो सब धरा पै गुरु है राजान कौं दान कृपान पढ़ावै है अर्थात् वे सब इनकौं देखि कै दान बीरता करैं हैं॥७७॥

दोहा।

भावसिंह की रीझ कौं कविता भूषन-धाम ।
ग्रन्थ सुकवि मतिराम यह कीनौं ललितललाम॥

भावसिंह की रीझ के वास्तै कबिता अलंकारन को घर उत्तम कवि मतिराम ने यह ललितललाम ग्रन्थ कियो॥

अथ अलँकार लक्षण दोहा।

रस अर्थन तैं भिन्न जो शव्द अर्थ के माहिँ ।
चमत्कार भूषन सरिस भूषन मानत ताहि ॥१॥

अथ अलंकारांगकथन दोहा।

मुख चषादि उपमेय हैं शशि झषादि उपमान।
समानार्थ बाचक लखौ धर्म एक गुन जान ॥२॥

चौपाई।

है उपमेय बिषय अरु बर्ण्य। उपमानतु बिषयी रु अबर्ण्य ॥ प्रासंगिक कह प्रस्तुत जानि। अप्रसंग अप्रस्तुत मानि ॥ भेद्य बिशिष्य बिशेषण भेदक। बहु व्यापक सामान्य अखेदक ॥ अल्प व्यापक आहि विशेष। भूषण भाषक नाम अशेष॥

दोहा।

जाको बर्नन कीजिये सो उपमेय प्रमान।
जाकी समता दीजिये ताहि कहत उपमान॥

जिसको बर्नन करिये सो उपमेय मानते हैं जिनको बराबरी दीजिये तिसकों उपमान कहते हैं ॥ ७९ ॥

उपमालंकार लच्छन दोहा ।

जहां बनिये दुहनि को सम छबि को उल्लास ।
पंडित कबि मतिराम तहँ उपमा कहत प्रकास ॥

जहां उपमेय उपमान को समान छबि को उल्लास बनिये मतिराम कहै है तहां प्रगटही पंडित कबि उपमा अलंकार कहते हैं

उदाहरन मनोहर ।

एक रजपूत है दिवान भावसिंह जाको जंग जुरैं चौगुनो चढ़त चित चाव मैं । शत्रुशाल नंद को सुजस मतिराम यातैं फैलत महीपति-समाज समुदाव मैं ॥ दिल्ली के दिनेश के प्रचंड तेज आंच लागे पानिप रह्यो न काहू भूपति तलाव मैं । ऐसे सब खलक तैं सकल मकिलि रही राव मैं सरम जैसैं सलिल दरयाव मैं ॥ ८१ ॥

एक दिवान भावसिंह रजपूत है जाको चित्त जंग जुरें पै चौगुनें चाव मैं चढ़ै है मतिराम कहै है याही तैं शत्रुशाल के नन्द को सुजस है सो राजान के समाज के समूह मैं फैले है । दिल्ली के सूर्य के प्रचंड तेज की आंच लगने सैं कोई राजा रूप तलाव मैं पानिप नहीं रह्यो अर्थात्

सब राजा पातसाह से दबि गये, सब जगत सैं संपूर्ण लाज सिमटि कै राव भावसिंह मैं ऐसैं रही जैसे समुद्र मैं पानी अर्थात् पातसाह के तेज सें सबकी मर्जाद राव में रही जैसैं ग्रीषम मैं समुद्र मैं पानी रहै है इहां राव उपमेय समुद्र उपमान को समान बर्नन है यातैं उपमा है ॥ ८१ ॥

सवैया ।

प्रानपियारो मिल्यो सपने मैं परी जब नै-
सुक नीद निहोरें । कंत को आइबो त्यौंही
जगाय सखी कहि बैंन पियूषनिचोरें ॥ यौं मति-
राम भयो हिय मैं सुख बाल के बालम सौं दृग
जोरें । ज्यौं पट मैं अतिही चटकीलो चढ़ै रंग
तीसरी बार के बोरें ॥ ८२ ॥

सखी-उक्ति सखी सें, प्रानप्यारो सपने मैं मिल्यो जब निहोरे से नेक नींद आई तब तैसेही सखी ने जगाय के पति के आइवे के बचन अमृत के निचोड सो कह्यो मति राम कहै है बालम सौं नेत्र मिलतेही नायिका के हिये मैं ऐसें सुख भयो जैसें तीसरी बार के डुबेवे सों बस्त्र मैं अत्यन्त चटकदार रंग चढ़ै है अर्थात् नायिका कौं तीन बार सुख भयो स्वप्न मैं, सखी के कहे सैं, देखि से, इहां नायिका उपमेय पट उपमान को समान बर्णन है यातैं उपमा है ॥८२॥

पूर्णोपमा लच्छण दोहा ।

वाचक अरु उपमेय जहँ साधारन उपमान ।
पूरन उपमा कहत हैं तहँ मतिराम सुजान ॥८३॥

जहां बाचक और उपमेय साधारन धर्म उपमान ये च्यारी होंय मतिराम कहै है सुजान लोग तहां पूर्णोपमा कहते हैं ॥ ८३ ॥

उदाहरण मनोहर।

आलस बलित कोरैं काजर-कलित मतिराम वै ललित अति पानिप धरत हैं। सारस सरस सोहैं सलज सहास सगरब सबिलास ह्वै मृगनि निदरत हैं॥ बरुनी सघन बंक तीछन कटाछ बड़े लोचन रसाल उर पीरही करत हैं। गाढ़े ह्वै गड़े हैं न निसारे निसरत मैन-बान से बि-सारे न बिसारे बिसरत हैं॥ ८४ ॥

आलस करिकै वेष्टित कोर हैं काजरजुक्त हैं मतिराम कहै है वै अति सुन्दर हैं पानिप कौं धारण करैं हैं कमल सौं अधिक सोहैं हैं लाजसहित हास्यसहित गर्वसहित बिलाससहित होय कै मृगन को निरादर करैं हैं बरुनी सघन और बांको हैं, कटाच्छ पैनें हैं, लोचन बड़े और रसाल हैं, सो उर मैं पीड़ा कौं करैं हैं मजबूत होय कै गड़े हैं निकासे पै निकसै नहीं हैं कामदेव के सर से बिष वारे हैं भूलने से भूले नहीं जाते हैं। इहां नैन उपमेय कामवान उपमान से बाचक बिसारे धर्म है यातैं पूर्णोपमा है ॥ ८४ ॥

दोहा।

भौंह कमान कटाच्छ सर समर-भूमि बिचलैं न।
लाज तजैंहू दुहनि के सलज सूर से नैंन ॥८५॥

भौंह कमान हैं कटाच्छ सर हैं ठौर समर है तहां सें डिगै नही हैं लाज तजे पै भी नायक नायिका के नैन हैं सो लाज सहित सूर से हैं अर्थात् निलज सिपाही भागै हैं सलज भागै नही, इहां नैंन उपमेय सूर उपमान, से बाचक ठहरिबो धर्म है यातैं पूर्णोपमा है ॥ ८५ ॥

अथ लुप्तोपमा लच्छण दोहा।

होत एक द्वै तीन कों इन चारिहु में लोप ।
तहँा होत लुप्तोपमा बरनत कबि मति-ओप ८६

उपमेय उपमान बाचक धर्म इन चारिन में सौं एक को दोय को तीन को लोप होय तहां लुप्तोपमा होय है मति की ओप सें कबि बरनत हैं ॥ ८६ ॥

उदाहरण मनोहर।

सत्ता को सपूत भावसिंह भूमिपाल जाकी किर्त्ति जौन्ह करत जगत चित चाव है। कबिन को मतिराम कामतरू ऐसो कर अंगद को ऐसो रण में अडोल पांव है॥ चंद कैसो जोति चंड-कर कैसो तेज पुरहूत कैसो पुहमी में प्रगट प्रभाव है। अरजुन पन मुनि मन धनपति धन जग पति तन मृगपति रन राव है॥ ८७॥

शत्रुशाल को सपूत भावसिंह भूमिपाल है जाकी कीर्ति चन्द्रिका है सो जगत के चित्त कौं चाव करै है मति

जहां प्रथम उपमेय है सो उपमान हो तो जाय तहां रसनोपमा कहत हैं मतिराम कहै है सुजान जे हैं ते ॥९१॥

उदाहरण मनोहर।

काहू को न बड़ो कुल काहू को न बड़ो भाग देखे बर भूमिपाल सकल जहान के। काहू को न बड़ो हियो काहू को न बड़ो हाथ काहू के न बड़े हाथी सुकबि बखान के॥ कहै मतिराम सब राजत अनूप गुन राव भावसिंह बलाबंध सुलतान के। बंश सम बखत बखत सम ऊंचो मन मन सम कर कर सम करी दान के ९२

कोई को बड़ो कुल नहीं है कोई को बड़ो भाग नही है सब जगत के सुंदर राजा देखे कोई को हियो बड़ो नही है कोई को हाथ बड़ो नहो है कोई के हाथी बड़े नहीं हैं सुकबिन के बषान योग्य मतिराम कहै हैं सब गुन अनूप राजते हैं राव भावसिंह बलाबन्ध के पातसाह के बंश समान बखत है बखत समान ऊंचो मन है मन समान ऊचे कर हैं कर सम दान के हाथी ऊंचे हैं। यहां बंश उपमेय है बखत उपमान है यातें रसनोपमा है॥ ९२॥

अनन्वय लक्षण दोहा।

जहाँ एकही बात कों उपमेयो उपमान।
तहाँ अनन्वय कहत हैं कबि मतिराम सुजान॥

जहां एकही बस्तु कौं उपमेय उपमान कहैं तहां अनन्वयालंकार कहतें हैं मतिराम कबि कहै है सुजान जे हैं ते ॥ ९३ ॥

उदाहरण कबित्त ।

सुरजन कैसी सुरजनही में साहिबी है भोज कैसी भोज में अकड वड़ भाल मैं । रतनेस कैसी रतनेस मैं कहत मतिराम करतूति जीति जाके करवाल मैं ॥ गोपीनाथ कैसी गोपीनाथ मैं सपूती भई शत्रुशाल कैसी रजपूती शत्रुशाल मैं । भूमि सब देखी और काहू मैं न पेखी छबि भावसिंह कैसी भावसिंह भूमिपाल मैं ॥ ९४ ॥

सुरजनसिंह की सो साहिबी सुरजनसिंह मैं ही है भोज कीसो अकड़ बड़ भागी भोज मैंहो ही, मतिराम कहै है रत्नेश कैसी करतूति रत्नेश मैं ही रही जाके खड्ग मैं जीतिहो गोपीनाथ की सी सपूतो गोपीनाथ मैं भई शत्रुशाल कोसो रजपूती शत्रुशाल मैं भई सब पृथ्वी देखी और कोई मैं नहीं परषो, भावसिंह कीसी छबि भावसंह मैं है इहां सुरजन भोज रत्नसिंह गोपीनाथ शत्रुशाल भावसिंह येही उपमेय येही उपमान हैं यातें अनन्वयालंकार है ॥

अथ उपमेयोपमान लक्षण--दोहा ।

जहां होत है परसपर उपमेयो उपमान ।
तहँ उपमेयुपमान कहि बरनत सुकबि सुजान ॥

जहां परस्पर उपमेय उपमान होत हैं तहां उपमेय उपमान होत हैं तहां उपमेयुपमान कह करि सुजान बर्नते हैं ॥ ९५ ॥

उदाहरण सवैया ।

बारंग ते बकसै जिनकी समता न लहै बढ़ि बिंध्य समूचो । कित्ति सुधा दिगभित्ति पखारत चन्द-मरीचिन को करि कूचो ॥ राव सता-सुत कौं मतिराम महीपति क्यौं करि और पहूंचो । भूपर भाऊ भुवप्पति को मन सो कर औ कर सो मन ऊंचो ॥ ९६ ॥

ते हाथी बकसै हैं जिनकी बराबरी नहीं पावै बढ़ि करिकै संपूर्ण बिंध्याचल कीर्ति सुधा है सो दिशा भी तिनकौं धोवै है चन्द्रमा की किरनन को कूचो बनाय कै अर्थात् बहुत फैलि रही है मतिराम कहै है राव शत्रुशाल के सुत कौं और राजा कैसैं पहुंचैं पृथ्वी पै भावसिंह भूपति के मन सो ऊंचो हाथ है हाथ सो ऊंचो मन है अर्थात् इन सम तृतीय नहीं यहां मन कौं कर की उपमा लगी करको मन को उपमा लगी यातैं उपमानोपमेयालंकार है ॥ ९६ ॥

अथ प्रतीप लक्षण दोहा ।

जहँ प्रसिद्ध उपवर्न कौ पलटि कहत उपमेय ।
बरनत तहां प्रतीप हैं कबि जन जगत अजेय ॥

जहां प्रसिद्ध उपमान कौं पलटि कै उपमेय कहैं तहां प्रतीप बरनति हैं जगत में अजीत कबिजन हैं ते ॥ ९७ ॥

उदाहरण कवित्त ।

जाकी खीज भूपति भिखारी से निहारे होत भूप से भिखारी जाकी रीझ पै सराह की। नृपति को थप्पन उथप्पन समर्थ शत्रुशालसुत करै करतूति चित चाह की। कहै मतिराम फैली चहूं चक्क आन चहुवान कुलभानु भावसिंह नरनाह की ॥ राव सरिबर उमराव कैसे पावैं पातसाह सरि पावै बलाबंध पातसाह की ॥९८॥

जाके कोप सै राजा हैं सो भिखारी सें होते देखे, भिक्षुक हैं सो राजा से होते देखे जाकी रीझ ऐसो तारीफ की है. राजान कौं बनावा बिगाड़वा मैं समर्थ है शत्रुशाल को सुत है सो चितचाहो करतूति करै है मतिराम कहै है चारौं ओर दुहाई फैली है चहुवान-कुल के सूरज भावसिंह राजा की राव की बराबरी पातसाह के उमराव कैसैं पावैं पातसाह समता पावै बलाबंध नाम पर्बत की पातसाह की। इहां पातसाह उपमान हो सो उपमेय कियो यातैं प्रतीप है अधिक गुनवारो उपमान होय है यातैं पातसाह उपमान मान्यौं पतीप नाम उलटा को है सो पाचौं भेदन मैं उलटो चाहिये ॥ ९८ ॥

दूजो प्रतीप लक्षण दोहा ।

जहां और उपमान लहि बर्न्य अनादर होय ।
तहौं प्रतीपहि कहत हैं कबि कोबिद सब कोय ॥

जहां और उपमेय लहि याको अर्थ उपमान उपमेयता कों पावै मुख्य उपमेय को अनादर होय तहां भी प्रतीप ही कहते हैं कबि पंडित सब कोई ॥ ९९ ॥

उदाहरण कबित्त ।

सागर मैं गहिराई मेरु मैं उचाई रति-नायक मैं रूप की निकाई निरधारिये । दान देव-तरु मैं सयान सुरगुरु मैं प्रसाद गंगनीर मैं सु कैसे कै बिसारिये ॥ तरनि मैं तेज बरनत मति-राम जोति जगमगै जामिनीरमन मैं बिचारिये । राव भावसिंह कहा तुमही बड़े हौ जग रावरे के गुन और ठौरहू निहारिये ॥ १०० ॥

समुद्र में गम्भीरता है, सुमेरु में उचाई है, कामदेव में रूप की निकाई निश्चय है, सुरतरु में ज्ञान है, प्रसन्नता गंगा के जल में है, सो कैसे करि भूलिये । मतिराम कहै है रवि में तेज बरनत हैं, निशापति में जोति जगमगावै है सो बिचारि लीजे । हे राव भावसिंह कहा जगत में तु-मही बड़े हौ? आप के गुन और ठौर भी देखिये है, इहां सिंधु सुमेरु काम सुरतरु गुरु गंगाजल रवि शशि आठौ

उपमान उपमेय भये मुख्य उपमेय भावसिंह को अनादर भयो यातैं द्वितीय प्रतीप है ॥ १०० ॥

तृतीय प्रतीप लक्षण दोहा ।

जहँा अनादर आन को उपावर्ज्य उपमेय ।
बरनत तहँा प्रतीप हैं कोऊ सुकवि अजेय॥१०१॥

जहां उपमेय कौं उपमेय बर्नि कै आन जो उपमान है ताको अनादर होय तहां भी प्रतीप बरनत हैं कोई अजीत सुकवि ॥ १०१ ॥

उदाहरण दोहा ।

जलधर छोड़ि गुमान कौं हौंही जीवनदानि ।
तोसो ही पानिप भयौ भावसिंह को पानि ॥

हे मेघ इस गरूर कौं छोड़ि कि मैंही जीवन को दानी हौं, भावसिंह को हाथ तो समान ही पानिप को भयो है इहां पानि उपमेय सें जलधर उपमान को अनादर है ।

प्रश्न । प्रतीप नाम उलटा को है उलटो भये प्रतीप अलंकार होय पहिले दूसरे भेदन मैं उपमान उपमेय भयो या उलटापन तैं प्रतीप भयो, तीसरा भेद में उपमेय उपमेय ही रह्यौ तो प्रतीप कैसे भयो । उत्तर । दूसरे भेद में उपमान से उपमेय को अनादर है यामें उपमेय है उपपावकों अनादर है यह उलटो भयो यातैं प्रतीप है ॥ १०२ ॥

चतुर्थ प्रतीप लक्षण दोहा ।

जहँा वर्न्य सो और को उपमा बचन न होय ।
ताहू कहत प्रतीप हैं कबि कोबिद सब कोय ॥

जहां उपमेय की समान और को उपमान कहबो नहीं होय ताकौं भो प्रतीप कहत हैं कवि पंडित सब कोई ॥

उदाहरण कवित ।

बिक्रम मैं बिक्रम धरमसुत धरम मैं धुन्ध-मार धीर मैं धनेस वारौं धन मैं । मतिराम क-हत प्रियब्रत प्रताप मैं प्रबल बल पृथु पारथहि वारौं पन मैं ॥ शत्रुसाल नन्दरैया राव भावसिंह आजु मही के महीप सब वारौं तेरे तन मैं । नल वारौं नैननि मैं बलि वारौं बैननि मैं भीम वारौं भुजनि मैं करन करन मैं ॥ १०४ ॥

पराक्रम मैं विक्रमादित्य कौं वारौं, धर्म मैं युधिष्ठिर कौं वारौं धीरज मैं धुन्धमार कौं वारौं, धन मैं कुबेर कौं वारौं । मतिराम कहत है प्रबलप्रताप मैं प्रियब्रत कौं वारौं बल मैं पृथु कौं वारौं, पन मैं पारथ कौं वारौं हे शत्रुसाल के नन्द राजान के राजा भावसिंह पृथ्वी के सब राजा तेरे तन मैं वारौं, नैननि मैं नल कौं वारौं, बचननि मैं बलि कौं वारौं, भुजानि मैं भीम कौं वारौं, हाथनि मैं करन कौं वारौं अर्थात बिक्रम, युधिष्ठिर, धुन्धमार, कुबेर, प्रियब्रत, पृथु पारथ वर्त्तमान सब राजा नल, बलि, भीम, करन ये भावसिंह से नहीं इहां सब राजा उपमान हैं, ते उपमेय भये और भावसिंह मुख्य उपमेय की समतायोग्य नहीं यातैं चतुर्थ प्रतीप है ॥ १०४ ॥

 पंचम प्रतीप लच्छण दोहा।

कहा कछु न उपमान को यों जहँ करत बखान।
तहों प्रतीपहि कहत हैं कोऊ कवि सज्ञान॥

कहा है? कछु नहीं है, ऐसे जहां उपमान को बर्नन करैं तहां प्रतीप ही कहत हैं कोई ज्ञानवान कवि॥ १०५॥

उदाहरण कवित्त।

दिन दिन दीबे दूनी सम्पति बढ़त जाति ऐसो याको कछू कमला को वर बर है। हेम हय हाथी हीर बकसि अनूप जिमि भूपनि को करत भिखारिन को घर है॥ कहै मतिराम और जाचक जहान सब एक दानि शत्रुसालनन्दन को कर है। राव भावसिंह जू के दान की बड़ाई देखि कहा कामधेनु है कछू न सुरतरु है॥

दीबे सें राज रोज दूनो सम्पति बढ़ती जाती है, इस तरह को याकों लक्ष्मी को सुन्दर बरदान है, सुबर्ण घोड़ा हाथो हीरा बकसि कै जैसो सुन्दर राजान को घर है तैसो भिक्षुन को घर करै है। मतिराम कहै है और सब जहानं जाचक है, एक शत्रुसालनन्दन को हाथ दानी है, राव भावसिंह जी के दान की बड़ाई देखि कै कामधेनु कहा है? कल्पवृक्ष कछू नहीं है। इहां कामधेनु सुरतरु उपमान है सो उपमेय भये और हाथ उपमेय के आगे कहा कछू न शब्द करि कै व्यर्थ भये, यातैं पंचम प्रतीप है॥ १०६॥

पुनः दोहा।

कहा दवागनि के पियें कहा धरें गिरि धीर।
बिरहानल में जरत ब्रज बूड़त लोचननीर ॥

दावानल के पिये सें कहा भयो? है धीर पर्वत धारण करे सें कहा भयो? ब्रज है सो बिरह को अग्नि मैं जरे हैं नेत्रन के जल मैं बूड़े है अर्थात् बिरहानल सों दावानल नहीं लोचन जल सो इन्द्रकोप जल नहीं, इहां बिरहानल नैन जल उपमेय हैं सो उपमान भरे, दावानल इन्द्र जल कहा शब्द करि कै व्यर्थ दिखाये, यातें पंचम प्रतीप है॥

अथ रूपक लक्षण दोहा।

वरनत विषयी विषय कों करि अभिन्न तद्रूप।
अधिक हीन सम उक्ति सों रूपक त्रिविधि अनूप॥

उपमान उपमेय कों अभिन्न तद्रूप करि कै बरनन तें सुन्दर रूपक होय है सो अधिक न्यून सम उक्ति करि कै तीन भाँति को है, अर्थात् उपमान उपमेय मिले पै रूपक होय है सो यदि दोनून मैं भेद नहीं रहै तब तौ अभेद रूपक और एक उपमान उपमेय मैं मिल्यो रहै, एक उपमान न्यारो रहै सो तद्रूप इन दोनून के ये षट भेद हैं, अधिक अभेद १, न्यून अभेद २, सम अभेद ३, अधिक तद्रूप १, न्यून तद्रूप २, सम तद्रूप ३ ॥ १०८ ॥

समोक्ति अभिन्न रूपक कवित्त।

मौज-दरियाव राव शत्रुशाल तनै जाको ज-

गत मैं सुजस सहज सीतभान है। बिबुधसमाज सदा सेवत रहत जाहि जाचकनि देत जो मनोरथ को दान है॥ जाके गुनसुमन सुबास ते मुदित मन साच मतिराम कबि करत बखान है। जाकी छाँह बसत बिराजै ब्रजराज यह भावसिंह सोई कलपद्रुम दिवान हैं॥ १०९॥

यह दिवान भावसिंह सोई कल्पवृच्छ है, मौज जो दान ताको दर्याव जो समुद्र राव शत्रुसाल ताको पुत्र है, सुरतरु समुद्र को सुत है, भावसिंह को और कल्पवृच्छ को सुजस है सो सहज में ही जगत मैं चन्द्रमा है अर्थात् दोमून को जस बहुत है, भावसिंह कों बिबुध जो पंडितन के समूह सदा सेवते रहते हैं, कल्पवृच्छ कों बिबुध जो देवतान के समूह सदा सेवते रहते हैं दोनूही जाचकन कों मन वांछित दान देते हैं। भावसिंह रूप कल्पवृच्छ के गुन हैं सोई भये सुमन फूल तिनको सुवास तें मन प्रसन्न रहै है। मतिराम कबि है सो साचो बखान करै है, भावसिंह की छाया मैं बसतो भयो ब्रज को राजा जो पातशाह है सो बिशेष राजै है, कल्पवृच्छ को छाया मैं ब्रजराज कृष्णचन्द बिशेष राजै हैं। अर्थात् सत्यभामा के आंगन मैं कल्पवृच्छ है ताके नीचे कृष्णचन्द बैठें हैं। इहां भावसिंह उपमेय, कल्पद्रुम उपमान मैं भेद नहीं यातें अभेद। सिंधु शत्रुसाल

बिबुध मनोरथ दानि गुन सुमन ब्रजराजादि पदन करि कै समता है यातैं समोक्ति भिन्न रूपक है ॥ १०९ ॥

हीनोक्तिअभिन्नरूपक उदाहरण दोहा ।

महादानि जाचकन कौं भाऊ देत तुरंग ।
पच्छनि बिगिर बिहंग हैं सुण्डन बिगिर मतंग ॥

महादानी भावसिंह जाचकन कौं तुरंग देत है सो बिना पांखन के पच्छी हैं, और बिना सुंडन के हाथी हैं। इहां तुरंग बिहंग मतंगन मैं भेद नहीं, पच्छ सुंड हीन हैं यातैं हीनोक्ति अभिन्नरूपक है ॥ ११० ॥

अधिकोक्तिअभिन्नरूपक उदाहरण सवैया ।

जंग मैं अंग कठोर महा मदनीर झरै झरना सर से हैं। झूलनि रंग घने मतिराम महीरुह फूल प्रभा निकसे हैं ॥ सुन्दर सिन्दुरमण्डित कुम्भनि गैरिकशृङ्ग उतंग लसे हैं । भाऊ दिवान उदार अपार सजीव पहार करी बकसे हैं ॥

संग्राम मैं अंग महा कठोर है, मदजल गिरै है सो झरना समान है। मतिराम कहै है झूलनि मैं घने रंग है, सो वृच्छन के फूलनि की प्रभानि सें कसे हैं, कुम्भनि मैं सुन्दर सिन्दूरमंडित हैं सो गेरून के सिखर ऊंचे लसे हैं । दीवान भावसिंह उदार ने बहुत हाथी जीवदार पहार बकसे हैं। इहाँ हाथी पहारन मैं भेद नहीं सजीव अधिकता है यातैं अधिकोक्ति अभिन्नरूपक है ॥ १११ ॥

समोक्ति तद्रूपक उदाहरण सवैया।

छाँह करैं छितिमण्डल कौं सब ऊपर यौं मतिराम भये हैं। पानिप कौं सरसावत हैं सगरे जग के मिटि ताप गये हैं॥ भूमि-पुरन्दर भाऊ के हाथ पयोदनहीं बर काज ठये हैं। पन्थिन के पथ रोकिबे कौं घने बारिद ब्रन्द वृथा उनये हैं॥ ११२॥

भूमण्डल कौं छाया करै हैं। मतिराम कहै है याही तैं सबके ऊपर भये हैं, पानिप कौं सरसावते हैं, सगरे जगत के ताप मिटि गये हैं, भूमि के इन्द्र भावसिंह के हाथ हैं सोई भये मेघ उनहीं सैं अच्छे काम हुये हैं, पन्थीन के मार्ग रोकिवे कौं बहुत मेघन के समूह वृथा उमड़े हैं। इहाँ भूमिपुरन्दर वा पुरन्दरहाथ पयोद वा पयोद यह तौ तद्रूप छांह करिबो सब ऊपर पानिप सरसाइबो ताप मिटाइबो इत्यादि समता है यातै समोक्ति तद्रूप रूपक है॥

हीनोक्ति तद्रूपरूपक उदा॰ दोहा।

विप्रनि के मन्दिरन तजि करत ताप सब ठौर।
भावसिंह-भूपाल को तेज-तरनि यह और॥

ब्राह्मणन के मकाननि कौं छोड़ि कै सब ठौर ताप करै है, भावसिंह भूप को प्रताप रवि और है, इहाँ एक तेज-तरनि एक और तरनि यह तौ तद्रूप द्विजघरन पै ताप नहीं करै यह हीनता है यातैं हीनोक्तितद्रूपरूपक है॥

अधिकोक्ति तद्रूपरूपक उदा० कबित्त ॥

दूरि भयो अधरम-अन्धकार अति सब मुदित निहारि द्विज-चक्कनि को गोत है। बैरिबधू-बदन कलानिधि मलीन भयो सकल सुखानौ परपानिप को सोत है॥ कहै मतिराम राव शत्रुसाल-नन्दन को प्रबल प्रताप पुंज आतप उदोत है। भावसिंह भानु बलाबन्ध को दिवान तपै आठऊँ पहर दुपहर दिन होत है॥ ११५॥

सब अधर्म रूप अन्धकार है सो अत्यन्त दूरि भयो, देखि कै द्विजरूप जो चक्रवाक है तिनको गन मुदित भयो अरि-तियन को मुखरूप चन्द्रमा है सो मलीन भयो शत्रु रूप पानी को सोत है सो सब सूखि गयो। मतिराम कहै है राव शत्रुसाल के सुत को प्रबलप्रतापगन रूप आतप को उदोत रवि है, बलाबंध को दिवान राव भावसिंह तपै है, सो आठौं पहर दुपहर दिन होय है। इहाँ प्रताप कौं आतप अथवा आतप उदोत रवि दूसरो आतप-रवि यह तौ तद्रूप आठौं पहर उदित रहिबो अधिकता है यातैं अधिकोक्ति तद्रूपरूपक है॥ ११५॥

अथ परिणाम लक्षण दोहा।

बिषयी बिषय अभेद सौं जहाँ करत कछु काज।
बरनत तहँ परिनाम हैं कबि कोविद सिरताज॥

उपमान उपमेय अभेद सौं जहाँ कछू काम करैं तहाँ परिनाम बरनते हैं कबि पंडित सिरताज हैं ॥ ११६ ॥

उदाहरण कबित्त।

बाजत नगारे जहाँ गाजत गयन्द तहाँ सिंह सम कीनो बीर संगर बिहार हैं। कहै मतिराम कबि लोगनि कौं रीझि करि दीने ते दुरद जे चुवत मदधार हैं ॥ शत्रुसालनन्द राव भावसिंह तेग त्याग तोसे और औनि तल आजु न उदार हैं। हाथिनि बिदारिबे कौं हाथ हैं हथ्यार तेरे दारिद बिदारिबे कौं हाथिये हथ्यार हैं ॥११७॥

जहाँ नगारे बाजते हैं हाथी गाजते हैं, हे बीर तहाँ संग्राम में सिंह समान बिहार किये हैं। मतिराम कहै है कबि लोगनि कौं रीझि करिकै वे हाथी दिये जे मद की धारा चुवते हैं, हे शत्रुसाल के नन्द राव भावसिंह तेग और त्याग में आज तो समान उदार पृथ्वीतल में और नहीं है, हाथीन के चीरिबे कौं तेरे हाथ में हथ्यार हैं, दारिद दूरि करिबे कौं हाथीही हथ्यार हैं। इहाँ हाथी उपमान नैं हथियार उपमेय होय कै दारिद बिदारिबे की क्रिया करी यातैं परिणाम है ॥ ११७ ॥

अथ द्विबिध उल्लेख लक्षण दोहा।

कै बहुते कै एक जहँ एकहि को उल्लेष।
बहुत करत उल्लेष तहँ कहत सुकबि सबिशेष ॥

जहाँ एकही कौं बहुत जनें बहुत करिकै बर्नन करैं सो प्रथम भेद और जहाँ एकही कौं एक जनो बहुत करि कै बरनै सो दूसरो उल्लेख ॥ ११८ ॥

प्रथमोदाहरण दोहा ।

कबिजन कलपद्रुम कहैं ज्ञानी ज्ञानसमुद्र ।
दुरजन के गन कहत हैं भावसिंह रन-रुद्र ॥

कबि लोग कल्पवृक्ष कहते हैं ज्ञानी हैं सो ज्ञान को समुद्र कहते हैं, दुर्जन के समूह कहते हैं कि भावसिंह संग्राम में शिव है। इहाँ कवि ज्ञानी दुर्जन बहुतनि नै एक भावसिंह को बड़ाई करी यातैं उल्लेख है ॥ ११९ ॥

द्वितीयोदाहरण कबित्त ।

सत्ता को सपूत राव संगर को सिंह सोहै जैतवार जगत करेरी किरवान को। कहै मतिराम अवलम्ब राजै धरम को महोदधि मरजाद मेरु परिवान को ॥ कीरति की कौमुदी सु छाई छिति छोरनि लौं बिमल कलानिधि है कुल चहुवान को। दानि-कलपद्रुम सुजानमनि भावसिंह भानु भूमितल को दिवान हिंदुवान को ॥

शत्रुशाल को सपूत राव है सो संग्राम को सिंह सोहै है, जग को जीतिवेवारो है, कठिन तरवारि को है। मतिराम कहै है धर्म को अधार राजै है, मर्यादा को समुद्र है,

प्रमाण को सुमेरु है, कीरति चाँदनी है सो भूमि के ओरन ताई छाय रही है, चहुवान कुल को निर्मल चन्द्रमा है। दानीन में कल्पवृच्छ है, सुजाननि में मनि है, भावसिंह है सो भूतल को रवि है, हिन्दुस्तान को दिवान है। इहाँ भावसिंह एक कौं बहुत भाँति करि बर्न्यौ यातें द्वितीय उल्लेख है ॥ १२० ॥

बनिताभूषण प्रादुर्भूतमनोभवाद्दितीयउल्लेख उदा॰ दोहा।

कामकलान भरी तिया रति मैं रति दरसाय।
छबि मैं गिरिजा गुन गिरा पालत रमा लखाय॥

अथ सुमरन भ्रम संदेह लच्छण दोहा।

एक वस्तु लखि आन को सुमरन भ्रम सन्देह।
बरनत भूषन तीन विधि जे कविजन मतिगेह॥

एक वस्तु कौं देखि कै और वस्तु को सुमरन भ्रम सन्देह होय तहां येही तीन प्रकार अलंकार बरनते हैं जे कवि लोग बुद्धि के सदन हैं, अर्थात् स्मृति विद्यमान होय सो स्मृतिमान भ्रान्ति विद्यमान होय सो भ्रान्तिमान संदेह हाय सो संदेहालङ्कार है ॥ १२१ ॥

सुमरन उदा॰ दोहा।

सोय संग सुख जागि दुख लहि समुझ्यौ निरधार।
छीन पुन्य सुरलोक तें लेत अवनि अवतार॥

स्वप्न में पति संग सोय कै सुख पाय कै फेरि जागि कैं

दुख पाय कै निश्चय समुझ्यौ, कौन पुन्य भए पै स्वर्ग सैं भूमि मैं जन्म लेते हैं, । इहां संयोग सुख, बियोग दु:ख सैं स्वर्गबास औ भूमिबास को सुमरन भयो, यातैं सुमरन है ॥

भ्रम उदा० दोहा ।

उँजियारी मुख इंदु की परी उरोजनि आनि ।
कहा अँगोछति मुगुध तिय पुनि२ चन्दन जानि॥

मुखचन्द की चांदनी कुचनि पै आनि परी है । हे अजान तिय! चन्दन जानि कै बारबार काँई पोंछै है ? इहां उजियारी कौं देखि कै चन्दन को भ्रम भयौ, यातैं भ्रमालङ्कार है ॥ १२४ ॥

पुन: दोहा ।

आभा तरिवन-लाल की परी कपोलनि आनि ।
कहा छपावति चतुर तिय कन्त-दन्त-छत जानि॥

तरौंना के लाल की प्रभा गालनि पै आनि परी है, हे चतुर तिय पति के दन्तन का घाव जानि कै काँई दुरावै है? । इहां लाल की आभा देखि कै दन्तछत को भ्रम भयो यातैं भ्रम है ॥ १२४ ॥

सवैया ।

स्नान कियो सपने मैं सुहागिन भौंहैं चढ़ीं मतिराम रिसौंहैं । बातैं बनाय मनाय लई मन-भावन कण्ठ लगाय हसौंहैं ॥ येते अचानक जागि परी सुख ते अँगिरात उठी अलसौंहैं । लालन

कै लखि लोचन लाज ते होत न बाल कै लोचन सौंहैं ॥ १२५ ॥

सुहागनि ने सपना में मान कियो, मतिराम कहै है रिसौंहै भौंहैं चढ़ी मनभावन नैं बात बनाय के मना करि के हँसिकै कंठ सें लगा लोनी. इतने में अचानक ही जागि कै सुख से अलसाई हुई अंगराई लेती उठी, कृष्ण के नैन लाजते हुए देखि के बाल के लोचन सन्मुख नहीं होते हैं। यहां स्वप्न में नायक कौं सापराध देखि जागी पै भी भ्रम भयो, यातैं भ्रम है अथवा उत्तमा नायिका ने स्वप्न के मान कौं जागिवे को मान मान्यौ यातै भ्रम ॥ १२५ ॥

संदेह उदा० दोहा ।

परचि परै नहि अरुण रँग अमलअधरदलमाझ ।
कैधौं फूली दुपहरी कैधौं फूली सांझ ॥१२६॥

लाल रंग पहिचानि नहीं परै निर्मल अधर रूपी पत्र में, कै जानैं दुपहरी फूली है, कै सन्ध्या फूली है, इहां दुप· हरी सन्ध्या में संदेह रह्यौ, यातैं संदेहालङ्कार है ॥१२६॥

कवित्त ।

बानी को बसन कैधौं बात के बिलास डोलै कैधौं मुखचन्द-चारु-चन्द्रिका प्रकास है । कबि मतिराम कैधौं काम को सुजस कै पराग-पुंज प्रफुलित-सुमन सुबास है ॥ नाक नथुनी के गज-

मोतिन की आभा कैधौं देहवन्त प्रगटित हिये
को हुलास है। सीरे करिबे कौं पियनैन घनसार
कैधौं बाल के वदन बिलसत मृदुहास है॥

कै जानैं सरस्वती को वस्त्र पवन के जोर से डोलै है.
कैधौं मुखचन्द्रमा की सुन्दर चांदनी को उजास है, मति
राम कहै है कैधौं कामदेव को सुजस है. कै पुष्परज को
पुंज है. तामें फूले फूलनि की सुबास है, नासिका की नथ
के गजमोतीन की आभा है, कैधौं हिया को हर्ष देहवन्त
प्रगट भयो है. कै जानै पीतम के नेत्र सीरे करिबे कौं घन-
सार है, कै नायिका के मुख मैं कोमल हांसी विशेष लसै
है, इहां हांसी है कि और वस्तु है, निश्चय नहीं भयो, यातैं
संदेहालंकार है॥ १२७॥

बनिताभूषण गाढ़ तारुण्या संदेह उदा॰ दोहा।

बंक दीठि दृग मदभरे कुच नितम्ब लखि पीन।
अलि मानत यह रति रमा उमा गिरा कि प्रवीन॥

अथ शुद्धापन्हुति लक्षण दोहा।

औरै को आरोप करि साँच छपावत धर्म।
शुद्धापन्हुति कहत हैं जे प्रवीन कविकर्म॥

और कौं ठहराय के साच धर्म कौं छपावे, तहां शुद्धा
पन्हुति कहते हैं। जे कवि काम मै प्रवीन हैं ते॥ १२८॥

उदाहरण कवित्त।

पारावार पीतम कों प्यारी ह्वै मिली है गंग बरनत कोऊ कवि कोविद निहारि कै। सो तो मतो मतिराम के न मनमानै निजमति सौं कहत यह बचन बिचारि कै। जरत बरत बड़वानल सौं बारिनिधि बीचिनि के सोर सौं जनावत पुकारि कै। ज्यावत बिरंचि ताहि प्यावत पियूष निज कलानिधि मण्डल कमण्डल तें ढारि कै॥

समुद्ररूपो प्रीतम कों गंगा है, सो प्यारी होय कै मिली है कोई पंडित देखि कै बरनते हैं, सो मत तो मतिराम के मन में नहीं आवै अपनो बुद्धि सौं बिचारि करिकै यह बचन कहत है वा बड़वाग्नि सौं जलती दुखित होय कै समुद्र है सो तरंगनि के शब्द सौं पुकारि कै जनावै है। ताकों ब्रह्मा है सो जिवावै है और प्यावै है, अमृत अपने चन्द्रमंडल रूप कमंडल सें गेरि कै। इहां सत्य गंगा कों अमृत ठहरायो यातें शुद्धापन्हुति॥ १२९॥

अथ हेत्वपन्हुति लक्षण दोहा।

युक्ति सहित मतिराम जँह शुद्धापन्हुति होय।
हेतु अपन्हुति कहत हैं तहां सुकबि सब कोय॥

मतिराम कहै है यह शुद्धापन्हुति युक्ति समेत होय तहां हेतुअपन्हुति कहते हैं। सुकवि सब कोई॥ १३०॥

उदाहरण दोहा।

बालबदन-प्रतिबिम्ब बिधु उयो रह्यौ तिहिं संग।
उयो रहत अब रजनि दिन तपन तपावत अंग॥

चन्द्रमा बाल के मुख को प्रतिबिम्ब हो सो ताही बिम्ब के साथ रह्यौ, अब राति दिन रवि उग्यो रहै है सो अंगनि कौं तपावै है। इहां सत्य चन्द्रमा कौं प्रतिबिम्ब युक्ति सौं तपन ठहरायो, यातैं हेत्वपन्हुति है॥ १३१॥

पर्यस्तापन्हुति लच्छण दोहा॥

धर्म और मैं राखिये धर्मी साचु छपाय।
पर्यस्तापन्हुति कहत ताहि बुद्धि सरसाय॥

साचो धर्मी को धर्म छपाय कै और मैं राखियै ताकौं पर्यस्तापन्हुति कहते हैं बुद्धि बढ़ाय कै॥ १३२॥

उदाहरण दोहा।

कोमल कमलन से कहैं तिन्है न नैक सयान।
होत पार लागत हिये नैन मैन के बान।१३३।

कमल से नरम कहते हैं, तिनकौं कुछ स्यानप नहीं है लगतैंही हिया मैं पार हो जाते हैं, सो नैन तो मैन के तीर हैं। इहां सत्य नैनन को हिया मैं पार होबो धर्म, कामबान मैं ठहरायो यातैं पर्यस्तापन्हुति है॥ १३३॥

भ्रान्तापन्हुति लच्छण दोहा।

जहाँ और शङ्का भये करत झूठ भ्रम दूरि।
भ्रान्तापन्हुति कहत हैं तहां सुकवि मतिभूरि॥

जहां और कै शंका भये पै झूठे भ्रम कौं दूर करै तहां भ्रांतापन्हुति कहते हैं बड़ी मतिवारे सुन्दर कवि ॥

उदाहरण सवैया ।

सेवत हैं बिबुधै मतिराम सदा गुरु-बैन प्रमान कै मान्यौ । कोप किये सब भूतल के अरि भूभृत पच्छनि को गन भान्यौ ॥ पानिप पूरत बारिद हाथनि ताप हर्‌यौ जग मैं जस ठान्यौ । तैं समुझे पुरहूत के रूपहि मैं प्रभु भाऊ दिवान बखान्यौ ॥ १३५ ॥

कोई नै कोई सौं भावसिंह के गुनबर्नन कर्‌यो, सुननेवाले नैं इन्द्र के गुन समुझ्यौ । इन्द्रपच्छ अर्थ यों है, मतिराम कहै है. सदा बिबुध देवता ही सेवते हैं, सदा गुरु बृहस्पति को बचन सत्य करिकै मान्यौ है. रोस करे पै संपूर्ण पृथ्वीतल के बैरी भूभृत पर्बत तिनको पांखन कों समूह काटनो, बारिद मेघ रूप हाथन सौं पानी गेरै है, ताप दूर करै है, जगत मैं जस रोप्यो है. या भांति अर्थ समुझि कै सुननेवाले नै इन्द्र जान्यौ, तब कहनेवालो कहै है. तैंने इन्द्र के रूपन कौं समुझे मैने समर्थ भावसिंह दिवान बर्न्यौ है, भावसिंह पच्छ मै अर्थ यों है मतिराम कहै है । सदा बिबुध पंडित सेवते हैं, सदा गुरु जो मंत्रविद्यादातादि को बचन सत्य करि कै मान्यौ है कोप करे पै संपूर्ण पृथ्वीतल

के बैरी भूभृत जो राजा तिनके पच्छीन को समूह काटनो संकल्पदाता है सो हाथन सें संकल्प पानी कौं पूरै है अर्थात दान बहुत करै है, ताप जो कष्ट है सो दूर करै है, जगत मैं जस करै है इहां इन्द्र कौं समुझने वाले को भ्रम दूर कर्यो यातैं भ्रान्तापन्हुति है ॥ १३५ ॥

छेकापन्हुति लच्छण दोहा ।

जहाँ और की शंक ते साँच छपावत बात ।
छेकापन्हुति कहत हैं तहाँ बुद्धि अवदात॥ १३६॥

जहां और को शंका सैं सांची बात कौं दुरावै, तहां छेकापन्हुति कहते हैं, उज्ज्वल मतिवाले ॥ १३६ ॥

उदाहरण दोहा ।

ओठ खंडिबे कौं अर्यौ मुख-सुबास-रस-रत्त ।
स्यामरूपनँदलालअलि नहि अलिअलि उनमत्त॥

अधर खंडित करिबे कौं अड़ि रह्यौ है, मुख की सुगन्ध के रस मैं लीन होय कै स्यामरूप है तब और सखी नै सुनि कै कहो, हे अलि नन्दलाल है? नहि सखि उनमत्त भ्रमर है। यहां सखी की शंका सैं सांची बात दुराई यातैं छेकापन्हुति है ॥ १३७ ॥

पुन: सवैया ।

पावस भीति बियोगिनी बालनि यौं समुझाय सखी सुख साजैं । जोति जवाहिर की मतिराम

नहीं सुर-चाप छिनौछवि छाजैं ॥ दन्त लसैं बक पाँति नहो धुनि दुन्दुभी को न घने घन गाजैं । रीझि कै भाऊ नरिन्द दिये कबिराजनि के गज-राज बिराजैं ॥ १३८ ॥

वर्षा सें डर्पी हुई बिरहिनी नायिकान कौं ऐसे समुझाय कै सखी हैं सो सुख साजे हैं मतिराम कहे है । हाथीन के लगो हुई जवाहिरन की जोति है, सुरचाप और छिनौछबि बीजुरी नहीं छाजे हैं, हाथीन के दन्त लसै हैं, बकुलान की पंति नहीं है ध्वनि दुन्दुभी की है घने मेघ नहीं गाजै हैं अर्थात कबिराजन कै भावसिंह के दिये घने हाथी हैं जिनमैं कितने ही हाथीन पर नगारे बजते हैं, रीझि कै भावसिंह राजा नैं दिये ते कविराजन के गजराज विराजे हैं । इहां सत्य पावस कौं हाथी ठहराये यातैं छेकापन्हुति है ॥ १३८ ॥

छलापन्हुति लक्षण दोहा ।

जहँ छल आदिक पदनि सौं साँच छपावत बात।
तहँ छलपन्हुति कहत है कबिजनमति अवदात॥

जहां छल व्याज कैतवादि पदनि सौं सांची बात कौं छपावे तहां छलापन्हुति कहते हैं उज्ज्वल मति के कबि लोग जे हैं ते ॥ १३९ ॥

उदाहरण कवित्त ।

सुन्दरबदनि राधे सोभा को सदन तेरो ब-
दन बनायो चारिवदन बनाय कै । ताकी रुचि
लैन कौं उदित भयो रैनपति मूढ़मति राख्यो
निज कर बगराय कै ॥ मतिराम कहै निसिचर
चोर जानि याहि दीनी है सजाइ कमलासन
रिसाय कै । रातौं दिन फेरै अमरालय के आस
पास मुख मैं कलंक मिसि कारिख लगाय कै ॥

हे सुन्दरबदनी राधे चतुर्मुख नैं छबि को घर सुधारि कै तेरो मुख बनायो ताकी कान्ति लेवा कौं निसानाथ उदित भयो, मूढ़मति नैं अपने कर फैलाय राखे मतिराम कहै है, याकौं रात्रिचर चोर जानि कै कमलासन नें रोस करि कै सजा दीनी है, रात दिन देवालय के ओर पास फेरै है. मुख मैं कलंक के मिस करिकै कालौस लगाय कै। इहां मिस पद करि कै कलंक कौं कारिख ठहरायो. यातै छलापन्हुति ॥ १४० ॥

अथ उत्प्रेक्षा लक्षण दोहा ।

जहँ कीजे संभावना सो उत्प्रेक्षा जानि ।
वस्तु हेतु फल रूप ते ताकों त्रिबिधि बखानि ॥

जहां संभावना करिये सो उत्प्रेक्षालंकार जानो, वस्तु हेतु फल रूप सें ताकौं तीन प्रकार को बखानो अर्थात्

संभावना नाम तर्क और डौल बनायबे को है. वस्तु में वस्तु को तर्क करै सो वस्तूत्प्रेक्षा अहेतु कौं हेतु ठहराय संभावना करै सो हेतूत्प्रेक्षा अफल कौं फल ठहराय संभावना करै सो फलोत्प्रेक्षा ॥ १४१ ॥

दोहा ।

एक उक्तविषया कही अनुक्तविषया और ।
बहुरि भेद है वस्तु में जानहु कवि सिरमौर ॥

फेरि एक उक्तविषया कही है और अनुक्तविषया कही है ये दोय भेद वस्तूत्प्रेक्षा में है. कविन के सिरमौर तुम समुझौ अर्थात जाको तर्क करी होय, जामें तर्क करी होय ये दोनों होय सो उक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा, जाको तर्क करी सो तौ होय जामें तर्क करी सो न होय, यह अनुक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा है ॥ १४२ ॥

दोहा ।

एक सिद्धविषया कही असिद्धविषया और ।
भेद हेतु फल दुहुनि मैं है कहियत मति दौर ॥

एक सिद्धविषया कही है और असिद्धविषया कही है, हेतु फल दोनोन में ये है भेद मति की दौड से कहिये है, अर्थात् अहेतु कौं हेतु ठहरावै सो सिद्ध होय तो सिद्धविषया हेतूत्प्रेक्षा असिद्ध होय तो असिद्धविषया हेतूत्प्रेक्षा अफल कौं फल ठहरावै सो सिद्ध होय तो सिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा, असिद्ध होय तौ असिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा जाकी

संभावना करिये सो संभाव्यमान, जामैं संभावना करिये सो बिषय, और आस्पद कहिये नामार्थ यह है कह्यौ है विषय जिसमै सो उक्त विषया, नहीं कह्यौ विषय जिसमैं सो अनुक्तविषया, सिद्ध है विषय जिसमैं सो सिद्धविषया, असिद्ध है बिषय जिसमैं सो असिद्धबिषया, इसी तरह उक्तास्पदा अनुक्तास्पदा सिद्धास्पदा असिद्धास्पदा जानिये॥

उक्त विषयावस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण - कवित्त।

बासव की राजै रुचि ललित बसन्त खेल खेलत दिवान बलाबक्ष सुलतान मैं। कहैं मतिराम कवि मृगमद पङ्क छबि छावत फुलेल औ गुलाब आपगान मैं॥ कुंकुम गुलाल घनसार औ अबीर उड़ि छाय रहे सघन अवनि आसमान मैं। मेरे जानि रावभावसिंह को प्रताप जस रूप धरें फैलि रह्यौ दशहू दिसान मैं॥ १४४ ॥

इन्द्र की सो कान्ति सोहै है सुन्दर बसन्त को ख्याल खेलते दिवान बलाबक्ष का पातसाह मैं मतिराम कवि कहै हैं कस्तूरीका कीच को छबि छावै है फुलेल और गुलाब की नदीन मैं केसर गुलाल कपूर और अबीर उड़ि के बहुत छाय रहे हैं भूमि आकास मैं मेरी जानि मैं राव भावसिंह को प्रताप जस है ते रूप धरें हुये दशौं दिशान मैं फैलि रहे हैं इहां कुंकुम गुलाल और कपूर अबीर मैं

प्रताप जस को तर्क है और दोनों विद्यमान हैं यातें उक्त विषया वस्तूत्प्रेक्षा है ॥ १४४ ॥

अनुक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण – कवित्त ।

जगमग जोबन अनूप तेरो रूप चाहि रति ऐसी रम्भा सी रमा सी बिसराइये । देखिबे कौं प्रानप्यारी पास प्रानप्यारो खरो घूंघट उघारि नैंकु बदन दिखाइये ॥ तेरे अँग अंग मैं मिठाई औ लुनाई भरी मतिराम कहत प्रगट यह पाइये । नायक के नैननि मैं नाइये सुधा सो सब सौतिन के लोचननि लौन सो लगाइये ॥ १४५ ॥

जगमगाते हुये तेरे जोबन रूप कौं देखि के रति सो, रंभा सो, लक्ष्मी सो भूलिये है, प्रानप्यारी प्रानप्यारो है सो देखिबे कौं नजीक ऊभो है, घूंघट खोलि के नैक मुख दिखाइये तेरे अंग अंग मैं मिठाई और नमकीनी भरो है। मतिराम कहै है यह प्रगट पाइये है, नायक के नेत्रनि मैं अमृत सो गेरिये है, सब सौतिन के नैननि मैं लवण सो लगाइये है। यहां निकाई वस्तु मैं मिठाई खारापन को तर्क है और निकाई नहीं कही यातें अनुक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षा है। अथवा नायक के नैननि को सुख हो वामैं सौतिन के नैननि को दुख हो वामैं सुधा नावा की लौन लगाबा को तर्क है और सुख दुःख होबो नहीं है। यातें अनुक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा ॥ १४५ ॥

सिद्धविषया हेतूत्प्रेक्षा उदाहरण कवित्त ।

प्रबल बिलन्द बर-बारन के दन्तनि सौं बैरिन के बाँके बाँके दुरग बिदारे हैं। कहै मतिराम दीने दीरघ दुरदबृन्द मुदिर से मेदुर मुदित मतवारे हैं॥ तेग त्याग राजत जगतराव भावसिंह मेरे जान तेरे गज याही ते पियारे हैं। दुज्जन के दल कविलोगनि के दारिदनि नीकै करि गजन की फौजनि सौं मारे हैं॥ १४६ ॥

बलवान ऊँचे सुन्दर हाथीन के दाँतनि सौं रिपूनि के टेढ़े टेढ़े गढ़ ढहाये हैं। मतिराम कहै है बड़े हाथीन के गन दिये, जे मेघ से सचिक्कन प्रसन्न मस्त हैं, हे राव भाव सिंह तेग त्याग जगत में राजै है, मेरी जानि में तेरा हाथी इसी सें प्यारा है, बैरिनि की फौजनि कौं कविजननि के दारिदन कौं अच्छे करि के हाथीन की फौजनि सौं मारे हैं। इहाँ गज प्यारे होवा को हेतु दल दारिद मारिबो नहीं, ताकौं हेतु कियो, और दलदारिद मारिबो सिद्ध है, यातैं सिद्धविषयाहेतूत्प्रेक्षा है ॥ १४६ ॥

अथ सिद्धविषया उदाहरण सवैया ।

मोचन लागी भुराई की बातनि सौतिनि सोच भुरावन लागी । मंजन कै नित न्हाय कै अंग अँगोछि कै बार झुरावन लागी॥ मोरि मुखै

मुसकाय कै चारु चितैं मतिराम चुरावन लागी।
ताही सकोच मनो मृगलोचनि लोचन लोल दु-
रावन लागी ॥ १४७ ॥

भोलापन की बातनि कौं छोड़वा लगी सौतिनि की तरफ का सोच कौं भूलने लगी, मसलि कै रोजीना न्हाय कै अंगनि कौं अँगोछि कै केस सुखाने लगी है। मंजन को अर्थ मसलिबो अथवा मंजन न्हाय पुनिरुक्त भासै तौ नाय पाठ रहै तब यौं अर्थ करिये रोजीना अंगनि कौं नवाय कै मंजन स्नान करि कै बारनि कौं पोंछि कै सुखाने लगी है, अर्थात् पहिले झुकि कै नहीं न्हावै ही अब लाज सें नय कै न्हाती है पहिलें बार नहीं पोंछती अब पोंछती, जोब-नागम सें मुख मोरि कै मुसकाय कै मतिराम कहै है सु-न्दर चित्त कौं चोरने लगी है, मानौ ताही सकोच सै मृग-नैनी है सो चंचल नैननि कौं छिपाने लगी है । इहाँ नैन दुरावा को हेतु चित्त चोरिबो नहीं ताकौं हेतु ठहरायौ और चित्त चोरिबा असिद्ध है यातैं असिद्धविषया हेतूत्प्रे-क्षा है ॥ १४७ ॥

अथ सिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा उदाहरण सवैया ।

बारिनि धूपि अगारनि धूपि कै धूम अँध्यारी
पसारी महा है। आननचन्द समान उग्यौ मृदु
मंजु हँसी जनु जौन्ह-छटा है ॥ फैलि रही मति-

राम जहाँ तहाँ दीपति दीपनि की परभा है ।
लाल तिहारे मिलाप कौं बाल सु आज करी
दिनही मै निसा है ॥ १४८ ॥

हारनि कौं अथवा (बारनि कौं) धूपि कै महलनि कौं धूपि कै, धुवाँ को अँधियारी बहुत फैलाई है, मुख है सो चन्द्रमा के समान उग्यो, कोमल और निर्मल हाँसी है सो मानो चाँदनो की छवि है, मतिराम कहै है जहाँ तहाँ जगता दियान की प्रभा फैलि रह्यो है । हे लाल तुम्हारे मिलाप कौं बाल ने सुन्दर आज दिनही मैं राति करी है । इहाँ दिन को राति करि वाको फल पति को मिलाप नहीं, ताकौं फल ठहरायो, और राति करिबो सिद्ध है, यातैं सिद्धविषयाफलोत्प्रेक्षा है ॥

असिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा उदाहरण दोहा ।

मनौ भजी अरि* तियनि कौं पकरन को दृढ़दाप ।
भावसिंह को दिसनि मै फैलत प्रबल-प्रताप ॥

मानो भागी हुई रिपुन की स्त्रीनि को पकड़वा को मजबूत गर्व करि कै भावसिंह को प्रबल प्रताप दिसान मै फैले है । इहाँ प्रताप के फैलवा को फल रिपु स्त्रीन को पकरिबो नहीं ताकौं फल ठहरायो और पकरिबो असिद्ध है, यातैं असिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा है ॥ १४९ ॥

---

* हमलोगों को समझ में अबला स्त्रीयों के पकड़ने के लिये महाराज के प्रबल प्रताप का फैलना ठीक नहीं जान पड़ता । रामकृष्ण वर्म्मा

गुप्तोत्प्रेक्षा लक्षण दोहा।

उत्प्रेक्षा वाचक जहाँ शब्द कह्यो नहि होय।
गुप्तोत्प्रेक्षा कहत हैं तहाँ सुकवि सब कोय॥

जहाँ उत्प्रेक्षा को वाचक शब्द नहीं कह्यो होय तहाँ गुप्तोत्प्रेक्षा कहते हैं सब कोई सुकवि। मनौ, शंक, ध्रुव, प्रायनून इव इत्यादि वाचक हैं॥ १५०॥

गुप्तोत्प्रेक्षा उदाहरण दोहा।

बाल रही इकटक निरखि ललित लालमुखइन्दु।
रीझ भार अँखियाँ थकीं झलकै श्रमजलबिन्दु॥

नायिका है सो सुन्दर लाल के मुख चन्द कौं अन मिख देखि रहो सो रीझ के बोझ सैं आँखि थकि गई ताही परिश्रम सैं जल के बिन्दु झलके हैं। इहाँ आँसू सात्विक मै श्रम जलबिन्दु की तर्क है आँसू अनुक्त हैं। यातैं अनुक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षा। मानौं नहीं है यातैं गुप्तोत्प्रेक्षा है अथवा रीझ भार सैं आँखैं थकीं इसी सें इकटक रहो। इहाँ थकिबो इकटक को हेतु नहीं ताकौं हेतु ठहरायो और थक्या को सिथिल होबो सिद्ध है यातैं सिद्धास्पदा हेतूत्प्रेक्षा है और बाचक नहीं कह्यो यातैं गम्योत्प्रेक्षा है॥

अथ रूपकातिशयोक्ति लक्षण दोहा।

जहँ केवल उपमान ते प्रगट होत उपमेय।
रूपकातिशयउक्ति तहँ वरनत सुकवि अजेय॥

जहाँ फक्त उपमान सैं उपमेय प्रगट होय तहाँ रूपकातिशयोक्ति अजीत सुकबि वरनते हैं॥ १५२॥

उदाहरण दोहा।

इन्द्रजाल कन्दर्प को कहै कहा मतिराम।
आगि लपट बर्षा करै ताप धरै घनस्याम॥

कामदेव के इन्द्रजाल कौं मतिराम काँई कहै अग्नि की जल वर्षा करै है, घनश्याम ताप कौं धारण करै है। इहां आगिलपट उपमान सैं विरहिनी नायिका उपमेय प्रगटी वर्षा सैं आंसू घनश्याम सैं कृष्ण ताप सैं बिरह को दुःख जान्यौ यातैं रूपकातिशयोक्ति है॥ १५३॥

पुनः उदाहरण दोहा।

चलौ लाल या बाग मैं लखौ अपूरब केलि।
आलबाल घन समय को ग्रीषमऋतु की बेलि॥

हे लाल या बाग मैं चलौ और अद्भुत क्रीड़ा देखौ वर्षा काल को थावलो है, ग्रीषमकाल की बेलि है। इहाँ घन समय के आलबाल उपमान सैं छिरक्यौ स्थान उपमेय प्रगट्यौ ग्रीष्म ऋतु की बेलि सैं बिरहनी नायिका उपमेय कढ़ो यातैं रूपकातिशयोक्ति है॥ १५४॥

बृहद्व्यंग्यार्थचन्द्रिका। मध्या अधीरा रूपकातिशयोक्ति उदाहरण सवैया।

जन्म लियो जब तैं इहि ठौर निरन्तरही अति जोर जमायो। देखि हमेस रही इहि देशन काक प्रवेस गुलाब लखायो॥ सन्तत्ही सहवासिन के तिहि संगति तै सुखही सरसायो। आज भई

बिपरीत सखी लखि कोकिल को घर काक खु-
सायो ॥ १ ॥

दोहा ।

कटु बोलत तिय पीय सैं लखि सखि कहत बनाय।
गलघर कोकिल काक को आन सखिन समुझाय

विषयी कोकिल काक बच विषयमधुरकटुउक्ति।
बोध भये तैं ह्यां लखौ रूपकातिशय उक्ति ॥

बनिताभूषण ॥ जेष्ठा कनिष्ठा रूपकातिशयोक्ति उ॰ दोहा ।

कनकलता जुग मैं कमल अमल प्रफुल्लित पाय।
अली रली डूक सैं करत डूक सैं दीठि दुराय ॥

सापन्हवातिशयोक्ति लच्छण दोहा ।

जहाँ अपन्हुति सहित सो बर्नत मति अभिराम ।
सापन्हव अतिशय उकति तहाँ कहत मतिराम॥

जहां सुमति है सो अपन्हुति सहित रूपाकातिशयोक्ति कौं बरनै तहां मतिराम सापन्हवातिशयोक्ति कहते हैं ॥

उदाहरण दोहा ।

झूठ इन्दु अरविन्द मैं कहत सुधा मृदुबास ।
तो मुख मंजुल अधर मैं तिनको प्रगट प्रकास॥

चन्द्रमा कमल मैं झूठेंही सुधा और मृदुबास कहत हैं, तेरे मुख मैं और सुन्दर अधर मैं तिन दोनून को जाहर उजालो है। इहां सुधा सुगंध दोनू उपमाननि सैं अंग की

मधुरता सुगंध उपमेय जाने यातैं रूपकातिशयोक्ति चन्द्र अरविन्द सैं बरजि कै मुख अधर मैं स्थापित है यह अपन्हुति यातैं सापन्हवातिशयोक्ति है ॥ १५६ ॥

भेदकातिशयोक्ति लक्षण दोहा।

औरै यौं करिकै जहाँ बरनत सोई बात।
भेदकातिशयउक्ति तहँ कहत बुद्धि-अवदात ॥

जहां सोई बात कौं औरही है यौं करि कै बर्नैं तहां उज्ज्वल मतिभेदकातिशयोक्ति कहत हैं ॥ १५७ ॥

उदाहरण दोहा।

औरै कछु चितवनि चलनि औरै मृदु मुसकानि।
औरै कछु सुख देति है सकै न बैन बखानि ॥

याकी नजर चाल कछु औरही है कोमल हाँसो और ही है कछु औरही सुख देती है बचन कहि नहि सकै अर्थात लोकोत्तर है। इहां चितवनि आदि उनहीं कौं और बरने यातैं भेदकातिशयोक्ति है ॥ १५८ ॥

अथ द्विविधि सम्बन्धातिशयोक्ति लक्षण दोहा।

जहँ अजोग है जोग मैं जहँ अजोग मैं जोग।
सम्बन्धातिशयोक्ति कहि भाषत सब कविलोग ॥

जहां अजोग वस्तु जोग मैं है अर्थात् अजोग कौं जोग करै जहां जोग वस्तु कौं अजोग मैं करै, तहां सम्बन्धातिशयोक्ति कहि कै सब कवि लोग बर्नन करते हैं ॥ १५९ ॥

प्रथम उदाहरण कवित्त ।

सुरजनबंश राव भावसिंह सूरज तू तोतें आज जगै जग जप तप जाग हैं । झलकै ललाई मुख अमल कमल तेरे हिये हरिचरन कमल अनुराग हैं ॥ सत्ता के सपूत तैं जगाई मतिराम कहै लहलही कीरति कलपबेलि बाग हैं । ऊँचे मन ऊँचे कर ऊँचै ऊँचे करी दैकै ऊँचे करे भूमि के भिखारिन के भाग हैं ॥ १६० ॥

सुरजन के बंश मैं हे राव भावसिंह तू सूरज है । तो सैं आज जगत मैं जप तप यज्ञ जगै है अर्थात् धर्म को रक्षक है । तेरे निर्मल मुख कमल मैं ललाई झलकै है । हिया मैं हरि को चरनकमल को प्रेम है मतिराम कहै है हे शत्रुशाल के सपूत तैंने डहडही कल्पबेलि के बाग सी कीरति जगाई है । ऊँचो मन ऊँचो हाथ सैं ऊँचा ऊँचा हाथी देय कै सब पृथ्वी के मँगननि के भाग ऊँचे किये । इहाँ भिखारिन के भाग उच्चता जोग नहीं तिनकौं जोग किये यातैं सम्बन्धातिशयोक्ति है ॥ १६० ॥

पुनः कवित्त ।

सजल जलद जिमि झलकत मदजल छिति तल हलत चलत मन्दगति मैं । कहै मतिराम बल विक्रम बिहद्द सुनि गरजनि परे दिगवारन

विपति मैं ॥ सत्ता के सपूत भाऊ तेरे दिये ह-
लकनि बरनी उँचाई कविराजन की मति मैं।
मधुकरकुल करटीनि के कपोलनि तैं उड़ि २
पियत अमृत उड़पति मैं ॥ १६१ ॥

जलसहित मेघ ज्यौं मद का जल झलकता है। चलतैं मन्दगति सैं भूतल हलै है। मतिराम कहै है हद रहित बल और पराक्रम कौं सुनि कै और गरजनो कौं सुनि कै दिग्गज विपत्ति मैं परे है, दिग्गज कै भय होय है शत्रुसाल के सपूत भावसिंह तेरे दिये हलकानि की उँचाई कवि राजन की बुद्धि मैं बरनी है, भ्रमरनि के समूह हाथीन के कपोलनि सैं उड़ि उड़ि कै चन्द्रमा को अमृत पोते हैं। इहाँ करटो अजोगनि कौं उड़पति के जोग किये यातैं संबंधातिशयोक्ति है ॥ १६१ ॥

अथ द्वितीय संबंधातिशयोक्ति उदाहरण कवित्त।

चरन धरै न भूमि बिहरै तहाईं जहाँ फूले
फूले फूलन बिछायो परजंक है। भार के डरनि
सुकुमारि चारु अंगनि मैं करत न अंगराग कुंकुम
को पंक है ॥ कहै मतिराम देखि वातायन बीच
आयो आतप मलीन होत बदनमयंक है। कैसैं
वह बाल लाल बाहरि विजन आवै विजन-बयार
लागे लचकत लंक है ॥ १६२ ॥

भूमि मैं पग नहीं धरै है तहांही डोलै है जहां फूले फूले फूलनि सौं पलंग बिछायो है। बोझ के डर से सुकु-मारी है सो अंगनि मैं केसर के पंक को अंगराग नहीं करै है। मतिराम कहै है झरोखान के बीच सैं तावड़ो आयो देखि कै मुख चन्द्रमा मलीन होय है हे लाल वह बाल एकली बाहिर कैसैं आवै बिजना को पवन लगने सैं कमरि लचकति हे। इहां लंक पंखा कीपवन सहन जोग है ताकौं अजोग करो यातैं दूसरो संबँधातिशयोक्ति है॥

पुन: कवित्त।

अंगनि उतंग जंग जैतवार जोर जिन्हैं चि-क्करत दिक्करि हलत कलकत हैं। कहै मतिराम सैन सोभा के ललाम अभिराम जरकस झूल झाँपे झलकत हैं॥ सत्ता को सपूत राव भाव-सिंह रीझि देत छहूं ऋतु छके मदजल छलकत हैं। मंगन की कहा है मतंगनि के माँगिबे को मनसबदारनि के मन ललकत हैं॥ १६३॥

ऊंचे अंगनि के; जगनि के जीतिबेवारे, जोरवारे जिनके चिक्कार तैं दिग्गज हैं सो हलते हैं, कलकते है शत्रुशाल को सपूत राव भावसिंह है सो रीझि के देत है जो छहूं ऋतु मैं मस्त हुये मद के जल कौं पटकै है तिन हाथीन के माँगिबे कौं मांगबेवारेन की कहां चलो है, मनसबदारनि

के मन ललचावे है। इहां दिग्गज हाथीन की बराबरी नहीं पावें और मनसबदार जाचकन की बराबरी नहीं पावें, यह जोग कौं अजोग कियो यातें संबंधातिशयोक्ति है॥

अक्रमातिशयोक्ति लक्षण दोहा।

जहँा हेतु अरु काज मिलि होत एकही अंग।
अक्रमातिशयउक्ति तहँ बरनत कवि रसरंग ॥

जहां कारण और कारज मिलि कै एकही अंग होय तहां अक्रमातिशयोक्ति रसरंग कवि बरनते हैं॥ १६४ ॥

उदाहरण कवित्त।

जूथपति पैठ्यौ पानी पोषत प्रबलमद क-
लभ करेनुकनि लीनैँ संग सुख ते। ग्राह गह्यौ
गाढ़े बैर पीछले के बाढ़े भयो बलहीन विकल
करन दीह दुख ते॥ कहै मतिराम सुमरतही स-
मीप लखे ऐसी करतूति भई साहिब सुरुख ते।
दोऊ बातैँ छूटी गजराज की बराबरही पाँव ग्राह-
मुख ते पुकार निजमुख ते॥ १६५ ॥

जूथनाथ है सो पानी मैं धस्यो प्रबल मद सौं पुष्ट भयो बच्चा हथनीन कौं सुख सैं साथ लिये गाढ़े ग्राह नैं पकर्‌यौ पीछले वैर के बढ़ने सैं विकल करबेवारे दुःख सैं बलहीन भयो, मतिराम कहै है सुमरते ही नजीक देखे ऐसी क-रतव्यता भई स्वामी की सुष्ट नजर सैं गजराज की दोनू

बात बराबरि ही छूटी ग्राह के मुख सें पग निज मुख सें पुकार, यहां पुकार कारन है छूटिबो कारज है सो संग भये यातें अक्रमातिशयोक्ति है ॥ १६५ ॥

चञ्चलातिशयोक्ति लक्षण - दोहा।

बरनत हेतु प्रसक्ति ते उपजत है जहँ काज ।
चञ्चलातिशयउक्ति तहँ बरनत हैं कविराज ॥

कारन को प्रसङ्ग बरन तें जहाँ काज उपजे तहाँ कविराज हैं सो चञ्चलातिशयोक्ति बरनते हैं ॥ १६६ ॥

उदाहरण कवित्त।

बारि के बिहार बरबारन के बोरिबे कौं बारिचर बिरची इलाज जय काज की। कहै मतिराम बलवन्त जलजन्तु जानि दूर भई हिम्मति दुरद सिरताज की॥ असरन-सरन के चरन सरन तके त्यौंही दीनबन्धु निज नाम की सुलाज की। धाये रति मान अति आतुर गुपाल मिली बीचि ब्रज-राज कौं गराज गजराज की ॥ १६७ ॥

जल के बिहार में सुन्दर हाथी के डुबायबे कौं ग्राह नें जय काज को उपाय रच्यौ मतिराम कहै है जल जीव कौं बलवान जानि के हाथीन के सिरताज की जु रति दूरि भई असरनसरन के चरननि कौं सरन बिचारि तैसेही दीनबन्धु नें अपने नाम की सुष्ट लाज कीनी गुपाल इतनें

अति जलदी दौड़े ब्रजराज कौं अध बोचि मैं गजराज कौ अवाज मिली। इहाँ पुकार कारन के प्रसङ्ग सेही कृष्ण को चलिबो कारज भयो यातैं चञ्चलातिशयोक्ति है ॥ १६७ ॥

दोहा।

सतरौहीं भौंहनि नहीं दुरत दुराये नेह ।
होत नाम नँदलाल के नीपमाल सी देह ॥१६८॥

करड़ी भौंहनि से छिपाये से नेह नहीं छपै, नन्दलाल के नाम से कदम्ब के फूलन की माला सी देह होत है अर्थात् रोम सहित होय हैं इहाँ नन्दलाल कारन के नाम से ही रोम हर्ष कारज भयो यातैं चञ्चलातिशयोक्ति है॥१६८

अत्यन्तातिशयोक्ति लच्छण—दोहा।

होत हेतु पीछे जहाँ होत प्रथमही काज ।
अत्यन्तातिशयोक्ति तहँ बरनत सब कविराज ॥

जहाँ कारन पाछे होय कारज पहिले होय तहाँ सब कविराज अत्यन्तातिशयोक्ति बर्नते हैं ॥ १६९ ॥

उदाहरण कवित्त।

जीते जोर जङ्ग अति अतुल उतङ्ग तन टूनी श्यामरङ्ग छबि छपदनि छाये तैं। कहै मतिराम नभ-नदी के कुसुम सम उड़ै उड़गन सुण्ड अ· निल उड़ाये तैं ॥ मदजल-धार बरषत जिमि धाराधर धक्कनि सौं धुक्कैं धरनि धर धाये तैं।

आवैं कविराज ऐसे पावैं गजराज राव भाव सता-
सुत सौं अगार गुन गाये तैं ॥ १७० ॥

अति जबर संग्राम के जीते हुये अमित ऊँचे तन के श्यामरंग को दूनो छबि है भौंरानि के छारे से मतिराम कहै हैं नभ को नदी के सुमनन की समान तारा उड़े हैं सुण्ड को पवन के उड़ाये से मद काजल की धार कौं पटके हैं धाराधर की तरह धकान सौं और दौड़वासौं धरनी धर पर्वत और धरनी धुकैं है अथवा शेषादिक धुकै है कवि-राज आवैं ते ऐसे हाथी पावैं शत्रुशाल के सुत राव भावसिंह के गुन गाये से पहिले इहाँ गुन गायबो कारन पीछे है गज पाइबो कारज पहिले है यातैं अत्यन्तातिशयोक्ति है ॥

अथ तुल्ययोगिता लक्षण – दोहा ।

जहाँ अवर्ण्यन को धरम कै वर्ण्यन को एक ।
तुल्ययोगिता कहत हैं तहाँ सुबुद्धि विवेक॥१७१॥

उपमाननि को धर्म्म अथवा उपमेयनि को एक होय तहाँ तुल्ययोगिता कहते हैं सुमति हैं सो ज्ञान से ॥१७१॥

अवर्न्यनि को उदाहरण – कवित्त ।

सूबनि कौं मेटि दिल्ली देश दलिबे कौं चमू सुभट समूह निशि वाकी उमहति है । कहै म-तिराम ताहि रोकिबे कौं संगर मैं काहू के न हिम्मति हिये में उलहति है ॥ शत्रुशाल नन्द के

प्रताप की लपट सब गरबी गनीम बरगीन कौं दहति है। पति पातसाह की इज्जति उमरावन की राखी रैया राव भावसिंह की रहति है॥१७२॥

सूबान कौं बिगाड़ि कै दिल्ली का देश बिगाड़ वाकौं औधान कागन की फौज सेवा राजा की उमगैहै मतिराम कहै है ताकै रोकिबे कौं संग्राम मैं कोई के हिया मैं साहस नहीं उठै है। शत्रुशाल के सुत के प्रताप की फल सब गर्बवारे बैरी समूहनि कौं जलावै है पातसाह की आबरू उमरावन की आबरू राजान के राजा भावसिंह की राखी रहै है। इहाँ पातसाह उमराव संग्राम मैं योग्य नहीं यातैं अवर्न्य हैं तिनकी पति राखिबो एक धर्म्म है यातैं प्रथम तुल्ययोगिता है अथवा पातसाह के पति उमरावन की इज्जति अवर्ण्य है भावसिंह वर्ण्य है पति इज्जति को राखिबो एक धर्म्म है यातैं तुल्ययोगिता है ॥ १७२ ॥

वर्न्यन को उदाहरण – दोहा।

अभिनव जोवन जोति सौं जगमग होत बिलास।
तिय के तन पानिप बढ़ै पिय के नैननि प्यास॥

सब तरह नवीन जोवन की जोति सौं बिलास जगमग होते हैं तिय के शरीर में जोति बढ़ै है पिय के नैननि में प्यास बढ़ै है इहाँ तन पानिप नैन प्यास वर्न्य हैं तिनको बढ़िबो एक धर्म्म है यातैं तुल्ययोगिता है। १७३।

बनिताभूषन, लच्छिता प्रथम तुल्ययोगिता उदा० दोहा।

नैन बैन बिकलात हैं आली तेरे आज ।
क्यों मुकरत मुखलखि लगत शशिकञ्जन मनलाज॥

अथ द्वितीय तुल्ययोगिता लच्चण—दोहा।

जहँ हित में अरु अहित में बरनत वर्न्यहि तूल।
तुल्ययोगिता और तहँ कहत सुकवि मति मूल॥

जहाँ हितू में और अहितू में वर्न्य कों बराबरि बरने तहाँ तुल्ययोगिता और कहते हैं मति के मूल सुकवि हैं ते॥ १७४॥

उदाहरण दोहा।

जे निशि दिन सेवन करैं अरु जे करैं विरोध ।
तिन्हैं परम पद देत हरि कहौ कौन यह बोध॥

जे राति दिन सेवा करे हैं और जे बैर करते हैं तिन कों हरि परम स्थान देते हैं कहो यह कौन ज्ञान है इहाँ सेवक शत्रु में हरि वर्न्य कों समान बरने यातें तुल्ययोगिता याको एक भेद और भी है॥ १७५॥

अथ दीपक लच्चण—दोहा।

वर्न्य अवर्न्यनि को जहाँ धरम होत है एक ।
बरनत हैं दीपक तहाँ कवि करि बिमल बिबेक॥

जहाँ वर्न्य अवर्न्यन को धर्म्म एक होय तहाँ दीपक बरनते हैं कवि हैं सो निर्म्मल ज्ञान करिकै॥ १७६॥

उदाहरण—दोहा।

चञ्चल निशि उदबस रहैं करत प्रात बसि राज।
अरविन्दनि में इन्दिरा सुन्दर नैननि लाज॥१७७॥

दोनों चञ्चल होय के राति में उजड़ी रहै हैं प्रात होते ही बसिके राज करती हैं। कमलनि में लक्ष्मी नायिका के नैननि में लज्जा इहाँ इन्दिरा अवर्ण्य लाज वर्ण्य को उदबस रहबो बसिबो एक धर्म्म है यातें दीपक है ॥ १७७ ॥

अथ दीपकावृत्ति लक्षण - दोहा।

जहँ दीपक में होत है आवर्तन को जोग ।
त्रिविधि कहत आवृत्तिजुत दीपक सब कवि लोग॥

जहाँ दीपक में आवर्तन को जोग होत है तहाँ सब कवि लोग तीन तरह आवृत्तिदीपक कहत हैं अर्थात् शब्द की अर्थ की शब्दार्थ की ॥ १७८ ॥

शब्दावृत्ति उदाहरण—दोहा।

जागत हौ तुम जगत में भावसिंह की बान ।
जागत गिरिवर कन्दरनि अरिबर तजि अभिमान॥

हे भावसिंह दीवान तुम जगत में जागते हो तुम्हारे बैरी सुन्दर अभिमान छोड़िके गिरिनि की सुन्दर कन्दरान में जागते हैं इहाँ जागत जागत शब्द दोय बार है तिनको अर्थ सचेत शोभित और निद्रा त्याग न्यारो न्यारो है यातें शब्दावृत्ति है ॥ १७९ ॥

अर्थावृत्ति उदाहरण - दोहा ।

लखौ लाल तुमकौं लखत यौं बिलास अधिकात।
बिहँसत ललित कपोल हैं मधुर नैन मुसकात ॥

देखौ लाल आपकौं देखतैं ऐसे आनन्द अधिकाते हैं सुन्दर कपोल बिहसते हैं मधुर नैन मुसकाते हैं इहां विहसत मुसकात अर्थ की आवृत्ति है यातैं अर्थावृत्तिदीपक है ॥

अथ शब्दार्थावृत्ति उदाहरण – कवित्त ।

मन्दर बिलन्द मन्दगति के चलैया एक पल मैं दलैया पर दल बलखानि के । मदजल झरत झुकत जरकस झूल झालरिनि झलकत झुंड मुकुतानि के ॥ ऐसे गज बकसे दिवान दुहूं दीननि कौं मतिराम गुन बरनैं उदार पानि के । फौज के सिँगार हाथी और महीपालन के मौज के सिँगार भावसिंह महादानि के ॥ १८१ ॥

मन्दराचल से ऊंचे हैं मन्द चाल के चलनेवाले हैं एक पलक मैं बल की खानि शत्रुन के दलन के दलनेवाले हैं मद का जल झरै है जरी को झूल झुकै है तिनकी झालरिन मैं मोतिन के समूह झलकैं है ऐसे हाथी दीवान ने हिन्दू मुसल्मानन कौं दीने मतिराम कहै है दानी हाथ के गुन गाये से और राजान के हाथी फौज के सिँगार हैं भावसिंह महादानी के हाथी मौज के सिँगार हैं यहां

सिँगार सिँगार शब्द अर्थ की आवृत्ति है यातें दीपकावृत्ति है ॥ १८१ ॥

कवित्त ।

सकल सहेलिन के पीछे पीछे डोलति है मन्द मन्द गौन आजु आपुही करत है। सनमुख होत सुख होत मतिराम जब पौन लागे घूँघट के पट उघरत है ॥ जमुना के तट बंशीबट के निकट नन्दलाल पै सँकोचन से चाह्यो ना परत है। तन तौ तिया को बर भाँवरै भरत मन साँवरे बदन पर भाँवरै भरत है ॥ १८२ ॥

सम्पूर्ण सहेलिनि के पाछे पाछे डोले है मन्द मन्द गौन आज आपुही करती हैं श्याम के सन्मुख होते सुख होय है जब वायु लगने से घूँघट को वस्त्र उघरै है जमुना के तट पै बंशीबट के नजीक नन्दलाल पै सकोच से देख्यो नहीं परै है तिया को शरीर तौ बड की भाँवरि भरै है मन है सो साँवरे मुख की भामरि भरै है इहां भाँवरै भरत भाँवरै भरत शब्द अर्थ की आवृत्ति है यातें दीपकावृत्ति है॥१८२॥

अथ प्रतिवस्तूपमा लक्षण—दोहा ।

पद समूह जुग धर्म्म जहँ भिन्न पदनि सौं एक ।
परगट प्रतिवस्तूपमा तहँ कवि कहत अनेक ॥

जहां दोय पदसमूह नाम वाक्यन को एक धर्म्म होय

न्यारे न्यारे पदनि सौं तहां प्रगटहो प्रतिवस्तूपमा बहुत कवि कहते हैं ॥ १८३ ॥

उदाहरण - कवित्त ।

शङ्कर कौं ध्याय सरस्वती कौं रिझाय सीस शेषहू की पाय मति अति सरसाय कै। कहै मतिराम शत्रुशालनन्द भावसिंह तब कोऊ सकै तेरे गुननि गनाय कै ॥ औरनि के औगुननि तचि कबिजन राव होत हैं सुखित तेरी किर्ति बर न्हाय कै। खाय कै अँगार आँच औटि कै चकोरगन होत हैं मुदित चन्द चाँदनी कौं पाय कै ॥१८४॥

शिव कौं ध्याय कै सरस्वती कौं रिझाय कै शेषनागहू की सीख कौं पाय कै बुद्धि कौं अत्यन्त बढ़ाय कै मतिराम कवि कहै है हे शत्रुशाल के सुत भावसिंह तब कोई तेरे गुनन कौं गनाय सकै अर्थात् शिव गिरा शेष को कृपा होय तब गुन गिनि सकै हे राव भावसिंह कवि लोग हैं सो और के औगुनन सौं तचि कै नाम दुखित होय कै तेरी कीर्त्ति मैं भलो प्रकार न्हाय कै सुखी होते हैं अथवा किर्त्ति सर पाठ होय तौ कीर्तिरूपी तलाब में स्नान करिकै सुखी होते हैं अंग रखाय कै ताकी आँच मैं सोझि कै चकोरगन हैं सो चन्द की चाँदनी कौं पाय कै प्रसन्न होते हैं यहां तीसरी तुक मैं उपमेय्य वाक्य है चौथी तुक मैं उपमान वाक्य है तिनको सुखित मुदित हो वो धर्म्म एक है पद न्यारे न्यारे हैं यातैं प्रतिवस्तूपमा है ॥ १८४ ॥

दोहा।

पिसुन बचन सज्जन चितै सकै न फोरि न फारि।
कहा करै लगि तोय मैं तुपक तीर तरवारि ॥

नीचन को बचन सज्जन को चित्त कौन फोरि सकै न फारि सकै बन्दूक सर खड्ग जल मैं लगि कै कोई करै दोहा को पूर्वार्द्ध मैं उपमेय वाक्य है तामैं फोरि फारि न सकै यह धर्म्म है और उत्तरार्द्ध मैं उपमान वाक्य है तामैं कहा करै यह धर्मैं है अर्थात् फोरि फार न सकै यह अर्थ एक है पद न्यारे न्यारे हैं यातैं प्रतिवस्तूपमा है ॥ १८५ ॥

भूषण चन्द्रिका।

अर्थावृत्तिदीपक प्रस्तुत प्रस्तुत को अथवा अप्रस्तुत अप्रस्तुत को होय। प्रतिवस्तूपमा प्रस्तुत अपस्तुत को होय यह विशेष है आवृत्तिदीपक वैधर्म्य करि न होय प्रतिवस्तूपमा वैधर्म्य करिके भी होय ताके—

उदाहरण—दोहा।

बुधही जानत बुधन को परम परिश्रम ताहि ।
प्रबल प्रसव की पीर कौं वन्ध्या जाने नाँहि ॥१॥
गुणी बंश भवहू मनुज पुजै सुसंगति पाय ।
तुम्बी बिन जग मान नहिं वीणा दण्ड लहाय॥

अथ दृष्टान्त लक्षण—दोहा।

पदसमूह जुग धर्म जहँ जिमि बिम्बहि प्रतिबिम्ब।
सुकवि कहत दृष्टान्त है जो मन दर्पन बिम्ब ॥

जहां दोय पदसमूहनि को धर्म्म बिम्ब प्रतिबिम्ब होय तहां मन दर्पन के बिम्ब सुकवि दृष्टान्त कहत हैं ॥१८६॥

उदाहरण---दोहा ।

पगी प्रेम नन्दलाल के हमैं न भावत जोग ।
मधुप राजपद पाय कै भीख न मांगत लोग ॥

नन्दलाल के प्रेम मैं पगी हैं हमकौं जोग नहीं भावे हे मधुप ऊधो राजपद पाय के लोग भीख नहीं मांगै इहाँ पूर्वार्द्ध दोहा को बिम्ब है उत्तरार्द्ध प्रतिबिम्ब है यातैं दृष्टान्त है। १८७॥

सवैया ।

भोज बली रतनेश भये मतिराम सदा जस चाढ़नही मैं । नाथ सता समरत्थ दुहूनि दले अरि तेज सौं ताड़नही मैं ॥ भाऊ नरिन्द के धाक धुके अरि जाय गिरे गिरि गाड़नही मैं । जोति महीपति हाड़निही महँ जोति दधीच के हाड़नही मैं ॥ १८८ ॥

भोज और बली रत्नेश हैं सो मतिराम कहे है सदा जस के चढ़ावही मैं भये गोपीनाथ और शत्रुशाल दोनौं समर्थनि ने बैरी मारि तेज सौं ताड़ना नहीं मैं राजा भाव सिंह की धाक सें धुके हुये रिपु गिरिन का खड़ान मैही जाय गिरे जोति हाड़ा राजान मैही है जोति है सो दधीच

का हाड़नही में है इहां जीति महीपति हाड़निही महि बिम्ब है जोति दधीच के हाड़निहो मैं यह प्रतिबिम्ब है यातैं दृष्टान्त है ॥ १८८ ॥

भूषनचन्द्रिका।

यह हू वैधर्म्य करिकै होय है ताको—

उदाहरण—दोहा।

गर्ब समुख मन करत तुव अरिगन सकल नसात।
जबलौं रबि को उदय नहि तबलौं तम ठहरात॥

अथ निदर्शना लक्षण—दोहा।

सदृश वाक्य जुग अर्थ को जहाँ एक आरोप ।
बरनत तहाँ निदर्शना कविजन मति अति ओप।

समान दोय वाक्यन का अर्थ को जहां एक आरोप होय तहा निदर्शना वर्णते हैं अति मति की ओप के कवि लोग हैं ते ॥ १८९ ॥

उदाहरण—सवैया।

जो गुन वृन्द सतासुत मैं कलपद्रुम मै सो प्रसून समाजै। कीरति जो मतिराम दिवान मैं चन्द मैं चाँदनी सौ छबि छाजै ॥ राव मैं तेज को पुञ्ज प्रचण्ड सो आतप सूरज मैं रुचि साजैं। जो नृप भाऊ के हाथ कृपान सो पारथ के कर बान बिराजै ॥ १९० ॥

जो शत्रुशाल के सुत मैं गुननि के समूह है सो कल्प वृक्ष मैं फूलनि के समूह है मतिराम कहै है जो दिवान मैं कीर्ति है सो चन्द्रमा मैं चाँदनो छबि छाजे है राव मैं जो प्रचण्ड तेज को पुंज है सो सूरज मैं घाम रुचि साजे है जो राजा भावसिंह का हाथ मैं कृपान है सो पारथ के हाथ मैं बान बिराजे है इहाँ चारोंतुकनि के पूर्वार्द्ध मैं उपमेय वाक्य है उत्तरार्द्ध मैं उपमान वाक्य है तिन दोनून को गुन प्रसून की रति चांदनी तेजआतप कृपानबान पदनि करि एकता है यातैं निदर्शना है ॥ १९० ॥

द्वितीय निदर्शना लक्षण—दोहा ।

जहँ बरनन पद अर्थ को बरनत हैं कबिराज ।
निदरसना यह दूसरी बरनत बिबुधसमाज ॥

जहां पद अर्थ को वर्नन कविराज बरनते हैं तहाँ दूसरी निदर्शना पण्डित के गन बरनते हैं अर्थात् और को अर्थ और मैं कहै ॥ १९१ ॥

उदाहरण—दोहा ।

जब कर गहत कमानसर देत परनि कौ भीति ।
भावसिंग मैं पाइये तब अर्जुन की रीति ॥१९२॥

जब हाथ मैं कमान सर पकड़े है और बैरीन कौं भय देत है तब भावसिंह मैं अर्जुन की रीति पावै है, इहाँ अर्जुन की बान विद्या भावसिंह मैं ठहराई यातैं द्वितीय निदर्शना है ॥ १९२ ॥

तृतीय निदर्शना लक्षण—दोहा ।

करत असत सत अर्थ की एक क्रिया सौं बोध ।
निदरसना यह औरहू कहत सुकबि मतिसोध ॥

बुरा भला अर्थ को एक क्रिया सौं बोध करे यह और भी निदर्शना कहते हैं सुकबि मति के सोध हैं ते ॥ १९३ ॥

असत दोहा ।

मधुप त्रिभंगी हम तजी प्रगट परम करि प्रीति ।
प्रगटकरत सब जगत मैं कटु कुटिलनि की रीति ॥

गोपीन की उक्ति, उक्ति उद्धव सें-हे मधुप त्रिभंगी ने हम कों तजी प्रगट हो परम प्रीति करिकै सब जगत मैं कडवा कुटिलन की रीति प्रकट करत है इहाँ प्रीति करिकै छोड़ वो असत अर्थ है ताको कुटिलन को रीति कहिके बोध कियो यातैं निदर्शना है ॥ १९४ ॥

सत दोहा ।

हरिमुख लखि लोचनसखी सुख मैं करतबिनोद ।
प्रगट करत कुबलयन कौं चंद्रोदय तैं मोद १९५

हे सखी हरि का सुख कौं देखि के लोचन हैं सो सुख मैं बिनोद करते हैं सें चन्द्रमा के उदय सैं कुमोदिनीनि को हर्ष प्रगट करत हैं इहां लोचन सुख सत अर्थ को कुमोदिनीनि के मोद सें प्रगट कियो याते निदर्शना ॥ १९५ ॥

अथ व्यतिरेक लक्षण—दोहा।

जहाँ होत उपमान ते उपमेय मैं बिशेष ।
तहां कहत व्यतिरेक हैं कबिजन मति उल्लेख ॥

जहाँ उपमान सें उपमेय मैं बिशेष होय तहाँ व्यतिरेक कहते हैं कवि लोग मति के अधिक है तें ॥ १९६ ॥

उदाहरण कबित्त।

बड़े-बंस-अवतंस रावभावसिंह तेरे बड़े तेज तये गये देशपती दबि हैं । कहै मतिराम बड़ी किति उमड़ाई यातें सकल बड़ाई आज तो मैं रही फबि हैं ॥ सुनिये पुराननि मैं जंबूदीप बड़ो एक जंबू-तरु जामैं फल हाथिन की छबि हैं । ताहू ते बड़ो है तेरो कर काम तरु जासौं बड़े करिबर फल पावत सुकबि है ॥ १९७ ॥

हे बड़े बंस के सिरोमणि राव भावसिंह तेरे बड़े तेज सें तये हुये देशपति दबि गये हैं मतिराम कहे है बड़ी कीर्ति फैलाई जासी आज संपूर्ण तोमे सोभे है पुरानन मैं एक जंबू दीप बड़ो सुनिये है जामैं एक जामूनि को वृक्ष है जामें हाथीन की समान फल है। तासें भो तेरो कर कल्प वृक्ष बड़ो हैं जासौं बड़े हाथी फल सुकबि पावे हैं इहां जंबू तरु उपमान सें हाथ उपमेय बड़ो है यातें व्यतरेक है १९७

बनिताभूषण दोहा ।

उपमान रु उपमेय मैं वै लक्षण व्यतिरेक ।
अधिकन्यून समभाव करि ताको त्रिबिधिविवेक ॥

अथ स्वकीया मानिनी अधिक व्यतिरेक उदाहरण दोहा ।

लखि पियबिनती रिसभरी चितवै चंचल भाय ।
तव खंजन से दृगन मैं लाली अति छबि छाय ॥

अथ परकीया मानिनी न्यून व्यतिरेक उदाहरण दोहा ।

सापराध लखि पियहि तिय जब दृग देत नवाय ।
तब खंजन से चखन मैं चंचलता न रहाय ॥३॥

अथ गनिका मानिनी सम व्यतिरेक उदाहरण दोहा ।

साग सलखि धनदानि कौं मौन गहै मन मारि ।
तब शशि सो मुखवाल को लखि सोचैं सखि हारि ॥

अथ सहोक्तिलक्षण दोहा ।

काज हेतु कौं छोड़ि जहँ औरनि के सह भाव ।
बरनत तहाँ सहोक्ति हैं कविजन बुद्धिप्रभाव ॥

जहां कारज कारन कौं छोड़ि के औरनि के साथ हो वो होय तहां सहोक्ति बरनते हैं कवि लोग हैं सो बुद्धि के प्रभाव सें अर्थात् कारज कारन को साथ होय तो सहोक्ति नहि । १९८ ॥

उदाहरण कबित्त ।

महाबीर राव भावसिंह को प्रताप साथ जस

कै पहूंच्यौ ओर दसहूं दिशानि कै। दल के च-
लत फनमंडल फनीपति को फूटि फाट जात
साथ सैल की सिलानि के॥ दुज्जन के गन कलप-
द्रुम के बागनि मैं करत बिहार साथ सुर-प्रम-
दानि के। संपति के साथ कबि सौधनि बसत बन
दारिद बसत साथ बैरी-बनितान के॥ १६६॥

महा सूर राव भावसिंह को प्रताप है सो जस के साथ दशौं दिशान के ओर मैं पहुँच्यौ फौज के चले तैं नागपति को फनमंडल है सो फूटि फाट जाय है पर्वत की सिलान के साथ दुर्जनन के समूह कल्पवृच्छन के बागन मैं बिहार करते हैं देवांगनानि के साथ, कवि है सो संपति के साथ महलनि मैं बसते हैं दारिद है सो रिपु स्त्रीन के साथ बन मैं बसे है इहाँ प्रताप जस के साथ पहुंचने सैं फनसिलान कै साथ फूटने सैं दुर्जन सुर स्त्रीन के साथ बिहार सैं संपति के साथ कबिन के बसने सैं दारिद रिपु-स्त्रीन के साथ ब-सने सें राजा भावसिंह को मनोहर वर्नन है यातैं सहोक्ति है॥ १६६॥

अथ बिनोक्ति लच्छण दोहा।

जहँ प्रस्तुत कछु बात बिन कै नीको कै हीन।
बरनत तहाँ बिनोक्ति हैं कबि मतिराम प्रबीन॥

जहां प्रासंगिक कछु बात बिना हीन होय कै कछू बिना

हो न विना तहां बिनोक्ति बरनते हैं कवि मतिराम कहे है प्रबोन हैं ते ॥ २०० ॥

उदाहरण दोहा ।

बिषयनि ते निर्वेदबर ज्ञान योग व्रत नेम ।
विफल जानिये ये बिना प्रभुपदपंकजप्रेम ॥२०१॥

बिषैन सौं निर्वेद सुंदर ज्ञान योग बृत नेम ये सब बिफल जानिये प्रभु के चरणकमलन के प्रेम बिना इहां निर्वेदादि प्रस्तुत हैं ते हरिपदप्रेम बिना हीन हैं याते बिनोक्ति है ॥ २०१ ॥

द्वितीय बिनोक्ति दोहा ।

देखत दीपति दीप की देत प्रान अरु देह ।
राजत एक पतंग में बिना कपट को नेह ॥२०२॥

दीप की दीपति देखतैं ही प्रान और देह देत है एक पतंग मैं बिना कपट को नेह राजे है। इहाँ पतंग प्रस्तुत कपटहीन शोभित है यातैं दूजी बिनोक्ति है। २०२ ॥

समासोक्ति लक्षण दोहा ।

जहँ प्रस्तुत मैं होत है अप्रस्तुत को ज्ञान ।
समासोक्ति तहँ कहत हैं कबिजन परम सयान ॥

जहां प्रासंगिक मैं अप्रसंग को ज्ञान होय तहां समासोक्ति कहते हैं कवि लोग अति सयाने हैं ते ॥ २०३ ॥

उदाहरण कवित्त ।

चिन्ता मैं चितै कै सब सुधि बिसरावत है

मंडल बिमल तेरे मुख द्विजराज को। सोयवे कौं साजत सरस परजंक तेरी स्यामअंग छबि इन्दीबर की समाज को॥ कबि मतिराम काम बाननि सौं वेध्यो यौं जु दुःख भयो सकल समूह सुख साज को। कहा कहौं लाल तलावेली की तलफ पर्यो वाल अलबेली को वियोगी मन लाज को॥ २०४॥

तेरे मुख चन्द्रमा के निर्मल मंडल कौं देखि कै चिन्ता मैं सब सुधि कौं बिसरावै है सो वाके वास्ते तेरो स्यामांग छबि समान नील कमलनि की समाज को परजंक साजतैं मतिराम कबि कहै है कामदेव नै बाननि सौं यौं बेध्यौ जो सुख का साज कौं समूह सब दुःख रूप भयो है लाल मैं काँई कहौं अलबेली बाल को लाजवालो बियोगो मन तलाबेली की तड़फ मैं पर्यो है इहाँ कृष्ण का मुख स्यामांग शोभा की बड़ाई प्रासंगिक है तामैं बाल बियोग सैं दुखी है यह अप्रासंगनिक त्यौं यातैं समासोक्ति है॥२०४॥

बनिता भूषन, परकीया प्रोषितपतिका समासोक्ति

उदाहरण दोहा।

उद्भव देखहु अलि यहै है कपटी वे बीर।
तजि बर बिमला मालती सेवत कली कनीर॥

अथ परिकर तथा परिकरांकुर लक्षण दोहा।

साभिप्राय विशेषननि सों परिकर मतिराम ।
साभिप्राय विशेष्य तें परिकर-अंकुर नाम ॥२०६॥

विशेषण पद अभिप्राय सहित हैं मतिराम कहै है सो परिकर है, विशेष्य पद अभिप्राय सहित सैं परिकरांकुर नाम है ॥ २०६ ॥

परिकर उदाहरण कवित्त ।

समर के सिंह शत्रुशाल के सपूत सहजहि बकसैया सदसिंधुर मदंध के । मतिराम चारिहूं समुद्रनि के कूलनि लौं फैलत समूह तेरे सुजस सुगंध के ॥ जगत बखानी चहुवानी सुलतानी और नही अवनी मैं अवनीप समकंध के । तो मैं दोऊ देखिये दिवान भावसिंह चहुवान कुल-भानु सुलतान बलाबंध के ॥ २०७ ॥

हे संग्राम के सिंह शत्रुशाल के सपूत सहजही मैं मद के अंध सो नवीन हाथोन के बकसैया मतिराम कहै है च्यारों समुद्रनि के किनारान तांई तेरे सुजस की सुगंध के समूह फैलैं हैं जगत मैं चहुवानी और सुलतानी बखानी है और पृथ्वी मैं राजा तेरे समान कंध के नहीं हैं हे दिवान भावसिंह तो मैं दोनू देखिये हैं, हे चहुवान कुल के भानु बलाबंध के सुलतान यहां चहुवानी सुलतानी दोनूं विशे-

षण पद हैं जिनमैं चहुवानी चार भुजावानी सुलतानी बा-
दसाही ये दो आशय हैं जिनसैं और राजा भावसिंह की
बराबरी के नहीं अर्थात् चहुवान जी यज्ञकुंड मैं सौं चार
भुजा वान निकसे जातैं उनके बंश के चहुवान बाजे और
ये बला बंध पर्वत के बादसाह हैं यातै परिकर ॥ २०७ ॥

पुनः दोहा ।

क्यौ न फिरै सब जगत मैं करत दिगबिजै मार ।
जाके दृग-सामंत हैं कुबलय जीतनहार ॥ २०८ ॥

काम है सो सब जगत मैं दिगबिजय करतौ क्यौं नहि
फिरै जाकें नैन सामंत हैं सो कुवलयन कौं जीतिबेवारे हैं
इहा कुबलय विशेषण पद मैं पृथ्वीमंडल को जीतिवो अ-
भिप्राय निकस्यौ यातैं परिकर है ॥ २०८ ॥

वनिता भूषन गनिका प्रोषित पतिका परिकर
उदाहरण दोहा ।

पाती पीतम धनद की बाँचत प्रिया प्रवीन ।
लखि २ हिमकर-बदन सैं सखिगन सीतल कीन ॥

परिकरांकुर उदाहरण दोहा ।

देखें बानिक आजु को वारौं कोटि अनंग ।
भलौ चलौ मिलि साँवरे अंग-रंग पट-रंग ॥ २०९ ॥

चलो नायिका देखि कै प्रसन्न होयगी खंडिता को
सखी की उक्ति । हे सांवरे आज को बानिक देखेसैं कोटि

काम देव वारौं अंग के रंग मैं पट को रंग मिलि गयो भलो यहां अंग रंग पटरंग विशेष पदन मैं आशय है पर स्त्री को नीलपट यातैं परिकरांकुर है ॥ २०९ ॥

वनिताभूषन मुग्धा खंडिता परिकरांकुर उदाहरण दोहा ।

प्रात आय निशिबास को आन बतायो धाम ।
भाल लाल लखि लाल को बात न मानी बाम ॥

अथ श्लेष लच्चण दोहा ।

श्लेष कहावत है जहाँ उपजत अर्थ अनेक ।
प्रकृत अप्रकृत मिलिचिविधि प्रकृता प्रकृत विवेक

अनेक अर्थ पैदा होय जहां श्लेष कहावै है प्रकृत अप्रकृत मिलि अप्रकृत अप्रकृत को प्रकृता प्रकृत को तीन तरह को ज्ञान है ॥ २११ ॥

प्रकृत को उदाहरण दोहा ।

ललित राग राजत हिये नायक जोति बिशाल ।
बाल तिहारे कुचन विच लसत अमोलिक लाल ॥

आलिंगन करती नायिका सैं सखी को उक्ति है बाल तुम्हारे कुचन के बीच मैं अमोलक लाल लसै है कृष्ण और रत्न, कृष्ण कैसो है हिया मैं सुन्दर अनुराग राजै है स्वामी है बिशाल जोति है रत्न कैसो है सुन्दर रंग भीतर राजै है हार के बीच मैं लग्यो है बड़ी जोति है इहां दोय अर्थ हैं और कृष्णलाल दोनू प्रासंगिक हैं यातैं प्रथम श्लेष है ॥२१२॥

अथ अप्रकृतश्लेष उदाहरण दोहा ।

कहा भयो जग मैं विदित भये उदित छबिलाल।
तो ओठनि की रुचिर रुचि पावत नहीं प्रबाल॥

जगत मैं प्रगटहो लाल छबि के उदय भये तौ कांई भयो तेरे अधरन को सुन्दर रुचि कों मूंगा और नवीन पत्र नहीं पाते हैं इहां प्रवाल के दोय अर्थ मूंगा नवीन पान ये दोनू अप्रकृत हैं यातैं द्वितीय श्लेष है॥ २१३॥

प्रकृताप्रकृत को उदाहरण कवित्त ।

छबिजुत छीरधि तरंगनि बढ़ावत हैं जगत पसारत चमेली की सुबास कौं। कहै मतिराम कुमुदिनि के परागनि सौं सरस करत चारु चांदनी प्रकास कौं॥ सबही के प्रान रूप हिय मैं बसत अति व्यापक ह्वै फैलि रह्यौ अवनि अकास कौं। राव भावसिंह जस रावरो करत दिशि बिदिशि बिहार गहैं बात के बिलास कौं॥२१४॥

हे राव भावसिंह तुम्हारो जस दिशा बिदिशान मैं बिहार कौं गहें हुये पवन के बिलास कौं करत है पवन कैसो है छबिसहित दूध के समुद्र की लहरिन कौं बढ़ावे है जगत मैं चमेली की सुगन्ध कौं फैलावे है मतिराम कहै है कुमुदिन के केसरान कौं अधिक करै है सुन्दर चांदनी के प्रकाश कौं बिशेष करै है सबही के हृदय मैं प्रानरूप होय

कै बसै है अति व्यापक होय कै पृथ्वी आसमान मैं फैलि रह्यौ है जस कैसो है छबि सहित दूध के समुद्र की तरंग समान है जगत मैं चमेली की शोभा कौं फैलावै है कुमुदिन के पराग कौं चांदनी के प्रकास कौं सरस करै है सबही के उर मैं प्रान समान बसै है पृथ्वी आकाश मैं अति व्यापक होय कै छाय रह्यौ है यहां जस बर्न्य है पवन अवर्न्य है यातैं तृतीय स्लेष है ॥ २१५ ॥

पुनः छप्पय ।

बसत जासु हिय बासुदेव पानिप अति छाजत ।
तजत न बर मरजाद परम गंभीर बिराजत ॥
रतन सुतन अवलोकि लोक पतिमान सलुब्भहि
मुकुतरूपधरि सुजसनृपति श्रवननि शुभशुब्भहि ॥
महिमा अपार मतिराम कहि जगत जगत सब घेरि तिमि । भुव भावसिंह भूपाल मनि रोज मोज दरियाव इमि ॥ २१६ ॥

संसार मैं राजान को मणि भावसिंह है सो नित्यही मौज को समुद्र ऐसैं है जाके हिया मैं भगवान बसते हैं समुद्र मैं भगवान सोते हैं पानिप जो तेज अति छाजै है। समुद्र मैं पानी बहुत है। सुन्दर रीति कौं नही छोड़ै है समुद्र कार कौं नहीं छोड़ै है राजा परम गंभीर विशेष शोभित है समुद्र बहुत चौड़ो है राजा का रत्न रूप सुतन कौं देखि करि कै लोकन के पतिन के मन लुभावै है समुद्र

के सुत रत्न हैं सुजस है सो मुक्तारूप धरि कै राजान के कानन मै शुभ शोभा पावै है । समुद्र में मोती उपजै हैं मतिराम कहै है तैसेही सब जगत कौं घेरि करिकै अपार महिमा जगमगावै है । समुद्र ने भी सब जगत कौं घेरि राख्यो है महिमा अपार है । तामें मच्छ अपार हैं यहां राजा प्रासंगिकहै समुद्र अप्रसांगिक है यातैं तृतीय श्लेष है॥

अथ अप्रस्तुत प्रशंसा लच्चण – दोहा ।

अप्रस्तुतै प्रसंसिये प्रस्तुत लीने नाम ।
तहँ अप्रस्तुत प्रसंसा बरनत है मतिराम ॥२१७॥

जहां अप्रस्तुत की बड़ाई करिये प्रस्तुत को नाम लिये हुये तहां अप्रस्तुत प्रसंसा मतिराम कवि बरनै है ॥ २१७ ॥

उदाहरण – सवैया ।

आनन-चन्द निहारि निहारि नहीं तनु औ धन जीवन वारैं । चारु चितौनि चुभी मतिराम हिये मति कौं गहि ताहि निकारैं ॥ क्यौं करि धौं मुरलीमनि कुण्डल मोर पखा बनमाल बिसारैं । ते धनि जे ब्रजराज लखैं ग्रह काज करैं अरु लाज सम्हारै ॥ २१८ ॥

सुख चन्द्रमा कौं देखि देखि कै तनु और धन जोबन कौं नहीं वारै मतिराम कहै है हिया मैं सुन्दर चित्तबनि चुभी है तिसकौं निकासै मति कौं पकड़ि कै जानैं कैसे

करिकै बंशी मनि कुण्डल मोरमुकुट बनमाला को भूलैं ते धन्य हैं जे कृष्ण कौं देखि कै घर को काम करैं और लाज कौं सम्हालैं इहां अन्य स्त्री अप्रस्तुतनकी बड़ाई करै है तामैं अपनौं अर्थ निकसै है यातैं प्रस्तुत प्रसंसा है ॥२१८॥

बनिता भूषण, अप्रस्तुतप्रशंसा लच्छण – दोहा।

जहँ प्रस्तुत के कारणै अप्रस्तुतहि प्रसंस ।
होय तहाँ भूषन यहै अप्रस्तुत-परप्रशंस ॥ १ ॥

छप्पय।

वर्णन अप्रस्तुतहि मांहि जहँ प्रस्तुत निकसै ।
अस सम्बन्धहि मांहि अलङ्कृति यह निति विकसै॥
सम स्वरूप के मांहि जहां समरूप जु निकरै ।
सो सारूप्य निबन्ध नाहि भिद पहिलो उघरै ॥
निकसे विशेष सामान्य मैं सो सामान्य निबन्धना।
सामान्य विशेषहि मैं कढ़ै सु है विशेष निबन्धना॥

दोहा।

कारण मैं कारज कढ़ै हेतु निबन्धन सोय ।
कारज मैं कारण कढ़ै कार्य्य निबन्धन होय ॥३॥

अथ प्रौढ़ा खण्डिता सारूप्य निबन्धना उदाहरण – दोहा।

बक धरि धीरज कपट करि जो बनि रहै मराल।
उघरै अन्त गुलाब कवि अपनी बोलनि चाल ॥

अथ परकीया खण्डिता सामान्य निबन्धना उदाहरण

दोहा।

सीख न मानैं गुरुन को अहितहि हित मनमानि।
सो पछितावै तासु फल लालन भये हित हानि॥

अथ गनिकाखण्डिता विशेष निबन्धना उदाहरण—दोहा।

लालन सुरतरु धनदहू अनहितकारी होय।
तिनहू को आदरन ह्वै यों मानत बुध लोय॥६॥

अथ भूषणचन्द्रिका, कारण निबन्धना—दोहा।

लीनों राधा-मुख रचन विधि ने सार तमाम।
तिहिँ मग होय अकाश यह शशि मैं दीखत श्याम॥

अथ कार्य्यनिबन्धना उदाहरण दोहा।

तुव पदनख की द्युति कछुक गङ्ग धोवन जल साथ।
तिहिँ कन मिलि दधिमथन मैं चन्द्र भयो है नाथ॥

अथ प्रस्तुताङ्कुर लच्छण—दोहा।

प्रस्तुत करि प्रस्तुत जहां प्रगट होत मतिराम।
प्रस्तुत अङ्कुर कहत हैं तहां बुद्धि के धाम॥२१९॥

मतिराम कहै है जहां प्रस्तुत करिके प्रस्तुत प्रगट होय तहां बुद्धि के घर प्रस्तुताङ्कुर कहते हैं॥ २१९॥

उदाहरण—दोहा।

सुबरन-बरन सुबासजुत सरस दलनि सुकुमार।
चम्पकली कौं तजत अलि तेही होत गँवार॥

इहां कृष्ण गुप्तार्थ निकसै है यातैं पर्यायोक्ति है ॥ २२३ ॥

द्वितीय पर्यायोक्ति लक्षण—दोहा ।

जहँा कपट सौं करत है रुचिर मनोरथ काज ।
बरनत पर्यायोक्ति तहँ दूजी सुकबि समाज ॥

जहां छल सों सुन्दरमन को काम करै तहां सुकबि समूह दूसरी पर्यायोक्ति बरनत है ॥ २२४॥

उदाहरण सवैया ।

मनमोहन आय गये तितही जित खेलत बाल सखीगन मैं। तहँ आपुही मूंदे सलोनी के लोचन चोर-मिहीचनी खेलन मैं॥ दुरिवे कौं गई सगरी सखियां मतिराम कहै इतने छन मैं। मुसकाय कै राधिके कण्ठ लगाय छिप्यो कहीं जाय निकुंजन मैं ॥ २२५ ॥

मनमोहन तहांही आय गये जहां बाल सखीगन मैं खेलै ही तहां आपुही सलौंनी के लोचन मूंदे चोर मिहीचनी खेलवा मैं सब सखी छिपवे कौं गई' इतनी देर मैं हँसि कै राधिका कौं कण्ठ से लगाय कै कहीं निकुंजन में जाय छिप्यो । इहां नैन मूंदिवे के मिस सों राधा को लेजावो इष्ट साध्यो यातैं पर्यायोक्त ॥ २२५ ॥

अथ व्याज स्तुति लक्षण दोहा।

निन्दा मैं स्तुति पाइये स्तुति मैं निन्दा होय ।

सोना के रङ्ग की सुगन्ध सहित रस सहित पखुरीन की कोमल चम्पा की कली को तजत है हे भ्रमर तेही गँवार होत हैं । इहां चम्पकली स्वकीया नायिका भ्रमर और नायका चारौ विद्यमान हैं । यौं प्रस्तुत है यातैं प्रस्तुताङ्कुर है ॥ २२० ॥

अथ पर्यायोक्त लक्षण — दोहा ।

गम्य अर्थ प्रगटै तहां और बचन रचनानि ।
बरनत पर्यायोक्ति तहँ कविजन ग्रन्थन जानि ॥

जहां गुप्त अर्थ पैदा होय अन्य बचननि की रचनान सौं तहां पर्यायोक्ति बरनते हैं । कवि लोग ग्रन्थनकौं जानि करिकै ॥ २२१ ॥

उदाहरण—दोहा ।

जाके लोचन करत हैं कुबलय कञ्ज प्रकास ।
सो भाऊ भूपालके करत हिये नित बास ॥२२२॥

जाके नैन कमल कुमोदिनीनि कौं फुलावैं हैं सो राजा भावसिंह का हिया मैं सदा बास करै हैं । इहां विष्णु को दक्षिण नैन रवि है बाम नैन शशि है । सो हरि राजा का मन मैं बसै है । यह गुप्तार्थ निकस्यौ यातैं पर्यायोक्ति है ॥

प्रगट दरप कन्दरप को तेरो अङ्ग अनूप ।
सु तौ लियो कन्दर्प जिति सुन्दर श्याम सरूप ॥

तेरो सुन्दर अंग है सो जाहिरही कामदेव को अभिमान है । सो तौ सुन्दर श्याम रूप कामदेव ने जीति लियो

व्याजस्तुति सो कहत हैं कबिकोबिद सब कोय ॥

निन्दा में बड़ाई पावै बड़ाई में निन्दा कढ़े सो व्याजस्तुति कहत है कबि कोबिद सब कोई ॥

उदाहरण कबित्त ।

देखतही सब के चुरावती है चित्तनि कौं फेरि कै न देती यौं अनीति उमड़ाई है। कबि मतिराम काम तीरहू तें तीछन कटाच्छनि की कोरैं छेदि छाती मैं गड़ाई है ॥ खंजरीट कंज मीन मृगनि के नैननि की छीनि छीनि लेती छबि ऐसी तैं लड़ाई है। तेरी अखियानि मैं बिलोकी यह बड़ीं बात इते पर बड़ी बड़ी पावती बड़ाई है ॥ २७ ॥

सब के देखतैं चित्तनि कौं चुरातो है। फेरि नहीं देती ऐसी कुनीति उमगाई है मतिराम कबि कहै है कामबाननि से भी पैने कटाच्छनि की अनी छेदि के छाती में गड़ाई है खंजन कमल मच्छी हरिन इनके दृगनिकी सोभा षोसि षोसि लेती तैंनें ऐसी लाड़िली करी है तेरी आंखिन मैं यह बड़ी बात देखी इतने पर ज्यादा ज्यादा बड़ाई पावती हैं इहां अखियानि को निन्दा के मिस सैं बड़ाई है यातें व्याजस्तुति है । २२७ ॥

द्वितीय उदाहरण ।

याही कौं पठाई बड़ो काम करि आई बड़ी तेरिये बड़ाई लखे लोचन लजीले सों । सांचीं क्यों न कहै कछू मोकौं किधौं आपुही कौं पाय बकसीस लाई बसन छबीले सों ॥ मतिराम सुकबि सँदेसो अनुमानियत तेरे नखसिख अङ्ग हरख कटीले सों । तू तो है रसीली रसबातनि बनाय जानैं मेरे जानि आई रस राखि कै रसीले सों ॥ २२८ ॥

याही काम कौं भेजी ही बड़ो काम करि आई तेरी ही बड़ी बड़ाई है लजीले नैननि सों देखै है सांची क्यों नहीं कहै है थोरी मोकौं भी कै आपुही कौं बकसीस पाय कै छबीले सों बस्त्र लाई है मतिराम सुकबि कहै है सँदेसो अनुमान करि ये है तेरे नुख से चोटी तक हर्षित कटीले अङ्ग से तू तौ रसीली है रस की बात बनाय जाने है मेरी जानि मैं रसीले सों रस राखि कै आई है इहां अन्यसंभोग दुःखिता नायका स्तुति मैं निन्दा करै है याते व्याजस्तुति है । २२८ ।

बनिताभूषन ॥ व्याजस्तुति लक्षण ।

इककी निन्दासतुतिमिस स्तुतिनिंदा जहँ जोय ।
पर की निन्दा सतुति सैं परस्तुति निन्दा होय ॥

पर की अस्तुति से जबै पर की अस्तुति साज ।
व्याजस्तुति यौं पांचबिधि कहतसकल कबिराज ॥

वाही निन्दा से वाही को स्तुति दोहा ।

अनखानी बोलतबचन अनुचितपतिहि निहारि ।
तऊ लगत नीको सखिन अरी अनोखी नारि ॥

वृहद्व्यंगार्थ चन्द्रिका ।

वाही की स्तुति मैं वाही की निन्दा ।

मैं प्यारी हौं याहि तैं धारि नीलपट लाल ।
प्रातहि आय दिखायछबि कीनी मोहि निहाल ॥
कौन दुखारी कौं दुखित प्रात कुशोभ दिखाय ।
अस्तुति मिसनिन्दा करत व्याजस्तुति इहिँ भाय॥

वृहद्व्यंगार्थचन्द्रिका सवैया ।

स्वारथ मैं रत हैं सबही परमारथ साधत नाहिन कोऊ । हैं परमारथ मैं रत लोय गुलाब कहै बिरले जस जोऊ ॥ जो परमारथ स्वारथ हीन सु आलस लोभित कीरति कोऊ । हो तुम नीतिनिधान लला परमारथ स्वारथ साधत दोऊ ॥ ३ ॥

दोहा ।

निशिवसि परतिय पासपिय करतपरार्थ अथाह ।
प्रातआत निजघर करत स्वार्थ नीति प्रतिनाह ॥

अस्तुतिमिस निन्दाकरत व्याजस्तुति ह्यां आहि ।
अस्तुति मैं निन्दा कढ़ै व्याजस्तुति कहि ताहि ॥

और की निन्दा सों और की स्तुति ।

दशशिर कुमति कराल नै कर्यो राम अपकार ।
तज्यो विभीषन ताहि सों कीनौं काम उदार ॥

और की स्तुति सें और की निन्दा दोहा ।

धन्य विभीषन राम की आयो सरन सुजान ।
धिक है जानै अनुजअस दियोनिकासि निदान ॥

और की स्तुति से और की स्तुति ।

धन्य धन्य है राधिका पाये पति भगवान ।
धन्य राधिका मात जिहि जाई सुता सुजान ॥

अथ व्याजनिन्दा लक्षण दोहा ।

निन्दा सों जहँ और की निन्दा प्रगटित होय ।
तहाँ व्याजनिन्दा कहत कबि कोबिद सब कोय॥

जहां निन्दा सौं और की निन्दा प्रगट होय तहां व्याज निन्दा कहते हैं कबि पण्डित सब कोई याको एकही भेद है । २२९ ॥

उदाहरण दोहा ।

प्रगट कुटिलता जो करी हम पर श्याम सरोस ।
मधुप जोग विष उगलिये कछु न तिहारो दोस॥

गोपिन की उक्ति उद्धव सों जो श्याम ने रोस सहित हम पै कुटिलता जाहर करी है हे मधुप सो जोगरूप विष को उगलिबो है तुमारो कछू दोष नहीं है इहां कृष्ण की निन्दा सें उद्धव की निन्दा है याते व्याज निन्दा है।

बनिताभूषण ॥ व्याजनिन्दा लक्षण दोहा।

पर की निन्दा से जहाँ पर की निन्दा होय।
तहाँ व्याजनिन्दा दूकहि भेद कहत कवि लोय॥

अथ गनिकाकलहांतरिता व्याजनिन्दा उदाहरण।

सुरतरु सम प्रिय तजि गयो करि बिनती उपचार।
भाल मोर तू निंद्य है निंद्य तोर लिपिकार ॥२॥

अथ आक्षेपलक्षण दोहा।

जहाँ कही निज बातकौं समुझिकरत प्रतिषेध।
तहाँ कहत आक्षेप हैं कविजन मति उत्सेध॥

जहां कही हुई अपनी बात को समुझि कै नटै तहां आक्षेप कहते हैं मति उत्सेध कवि लोग हैं ते ॥ २२१ ॥

उदाहरण सवैया।

दै मृदुपायन जावक को रँग नाह को चित्त रँगै रँग जातै। अंजन दै करौ नैननि मैं सुखमा बढ़ि स्याम सरोज प्रभा तैं॥ सोने के भूषण अंग रचौ मतिराम सबै बस कीबे की घातैं। यौंही

चलै न सिँगार सुभावहि मैं सखि भूलि कही सब बातैं ॥ २३२ ॥

सखी उक्ति नायका प्रति कोमल पगन मैं जावक को रंग दै जा रँग से नाह को चित्त रँगै कज्जल लगाय कै नैननि मैं श्याम कमल की आभा सें अधिक सुखमा करी सोना का गहना शरीर में पहरौ मतिराम कहै है संपूर्ण बस कर वाकी घात से हे सखि ऐसेहो सुभाव को सिंगार सेही चलौ क्यों न मैने सब बात भूलिकै कही है इहां पहिले सिंगार न करिबो कह्यो ताकौं समुझि कै फेरौ यातैं आक्षेप है ॥ २३२ ॥

द्वितीयाक्षेप लक्षण दोहा ।

जहँा न साँच निषेध है है निषेध आभास ।
तहँ औरो आक्षेप को कविजन करत प्रकास ॥

जहां सांचो निषेध नहीं है नटवा को आभास है तहां दूसरा आक्षेप को कवि लोग वर्णन करते हैं ।

उदाहरण दोहा ।

हौं न कहत तुम जानिहौ लाल बाल की बात ।
असुवां उड़गन परत हैं हौं न चहत उतपात ॥

मैं नहीं कहती हौं आप जानि जावौगे हे लाल बाल को बात कौं आसू रूप तारा टूटे हैं सो उत्पात हुयो चाहै है इहां मैं नहीं कहती हौं यौं नटै है और सब कहती है यह निषेध को आभास है याते दूसरो आक्षेप है ॥२३४॥

अथ तृतीयाक्षेप लक्षण दोहा ॥

जहँ बिधि प्रगट बखानिये कढ्यौ निषेध प्रकास ।
तहँ औरै आक्षेप कहि बरनत बुद्धि बिलास ॥

जहां करो यह प्रगट कहिये न करो यह गुप्त कहे तहां और आक्षेप कहि के बुद्धि के विलास सें बरनते हैं ॥

उदाहरण कवित्त ।

जा दिन ते चलिवे की चरचा चलाई तुम ता दिन ते वाके पियराई तन छाई है । कवि मतिराम छोड़े भूषन बसन पान सखिन सौं खेलनि हसनि बिसराई है ॥ आई ऋतु सुरभि सुहाई प्रीति वाके चित ऐसे मै चलौ तौ लाल रावरी बड़ाई है। सोवति न रैन दिन रोवत रहति बाल बूझे तें कहत सुधि मायके की आई है ॥ २३६ ॥

सखी उक्ति नायक प्रति तुमने जिस रोज से चलने का जिकर किया है तिस रोज से उसके शरीर में पियराई छाय गई है मतिराम कहे है भूषन वस्त्र पान छोड़े है अर्थात् शृङ्गार नहीं करती है सखीन सौं खेलिवो हांसो करिवो भूलि गई है वसन्त ऋतु आई है वाके चित्त में प्रीति सुहाई है हे लाल ऐसे समय में चलो तो आप की बड़ाई है राति दिन सोती नहीं है रोती रहती है बाल है

सो बूझमे से कहती है पीहर को यादि आई है इहां चली यह प्रगट है ऐसे समय मैं न चली यह गुप्त है यातैं तीसरो आक्षेप है ॥ २३६ ॥

पुनः दोहा ।

कोपनि तैं किसलय जबै होंहि कलिन तैं कौल।
तब चलाइये चलन की चर्चा नायक नौल ॥

जब कोंपलनि सें पत्र होंय कलीन सें कमल होंय हे नबीन नायक तबही चलबा की बात चलाइये अर्थात् चलिये । इहाँ चलिये यह प्रगट है, बसन्त मैं न चलिये यह गुप्त है यातैं तीसरो आक्षेप है ॥ २३७ ॥

अथ बिरोधाभास लक्षण दोहा ।

जहँ बिरोध सों लगत है होत न साँच बिरोध ।
कहत बिरोधाभास तहँ बुधजन बुद्धि बिबोध ॥

जहां बिरोध सो लगे सत्य मैं बिरोध नहीं होय तहां बिरोधाभास कहते हैं पंडित लोग बुद्धि के बोध सें ॥२३८॥

उदाहरण सवैया ।

दोऊ जुरे सहजादनि के दल जानत है सगरो जग साखी । मारू बजै रस बीर छके बर बीरनि किस्ति बड़ी अभिलाखी ॥ नाथ तनैं करतूति करी जस जोति जगी मतिराम सुभाखी । श्रोनित बैरिन को बरसाय कै राव सतारन मैं रज राखी ॥ २३९ ॥

दोनू सहजादान का कटक जुध्या सब जगत जानै है और साखी है मारू राग बजै है बीररस के छके सुन्दर जोद्धान नैं बड़ी कीर्ति चाही गोपीनाथ के सुत नैं करतूति करो तिस सैं जस की जोति जागी सो मतिराम नैं भाखी बैरीन की लोही फैलाय के राव शत्रुशाल नैं संग्राम मैं र-जपूती राखी। इहां लोही बरसने सैं रज रेत नहीं रहै यह बिरोध सों दीखे है यातैं बिरोधाभास है ॥ २३९ ॥

बनिताभूषण। बिप्रलब्धा उदाहरन दोहा।

सास ननद यातान कौं आई नीठि मुवाय।
अब आली घर गमन की सुधि आयें सुधि जाय॥

अथ बिभावना लच्छण दोहा।

विना हेतु जहँ बरनिये प्रगट होत है काज।
प्रगटित तहाँ बिभावना कहत सकल कविराज॥

जहां बिना कारन काज प्रगट हो तौ बरनिये है तहां जाहर बिभावना सब कविराज कहत हैं ॥ २४० ॥

उदाहरण सवैया।

बातनि जाय लगाय लई रसही रस मैं मन हाथ कै लीनौं। लाल तिहारे बुलावन को मति-राम मैं बोल कह्यौ परबीनौं॥ बेग चलौ न बि-लम्ब करौ लख्यौ बाल नबेली को नेह नवीनौं। लाजभरी अखियां बिहँसी बलि बोल कहें बिन उत्तर दीनौं॥ २४१ ॥

सखी उक्ति नायक प्रति जाय के बातन में लगा लीनो रसहो रस में वाको मन हाथ में करि लियो है लाल आप के बुलावा को मैंने प्रवीन बचन कह्यौ सो जलदी चलो देर मति करो नवेली बाल को नयो नेह देख्यौ है लाज की भरी आखैं हंसी में वारी जाऊं बाल कह्यां बिना उत्तर दियो। इहां बोल कारन बिना उत्तर काज भयो यातैं प्रथम बिभावना है ॥ २४१ ॥

द्वितीय बिभावना लक्षण दोहा।

थोरे हेतुनि सौं जहाँ प्रगट होत है काज।
तहँ बिभावना औरऊ बरनत बुद्धि जिहाज॥

थोड़ा कारन सौं जहां काज प्रगट होत है तहां और भी बिभावना बुद्धि के जिहाज बरनते हैं॥ २४२ ॥

उदाहरण सवैया।

तेरो कह्यौ सिगरो मैं कियो निसि द्यौस तप्यौ तिहुं तापनि पाई। मेरो कह्यौ अब तू करि जो सब दाह मिटै परिहै सियराई॥ शंकर-पायनि मैं लगि रे मन थोरेही बातनि सिद्धि सुहाई। आक धतूरे के फूल चढ़ाये तें रीझत हैं तिहुंलोक के साईं ॥ २४३ ॥

कवि की उक्ति वा भक्त की मन सैं—मैंने तेरो सब कह्यो कह्यो राति दिन तीनौं तापन कौं प्राप्त होय के तप्यो अब

तू मेरो कह्यौ करि जी सौं सब जलनि मिटैं ठंडक पड़ैगी अरे मन शिव के पगन मैं लगि थोरो हो बातनि मैं सुहा-वनी सिद्धि है आक धतूरा के फूल चढ़ावा सौं तीनौं लोक को स्वामी रीझ है। इहां आक धतूरा के फूल थोरा का-रन सौं त्रिलोकनाथ को रीझबो पूरो काज भयो यातैं दूसरी बिभावना है॥ २४३॥

तृतीय विभावना लक्षण दोहा।

जहँा हेतु प्रतिबन्धहू बरनत प्रगटै काज ।
बरनत और बिभावना तहँ कबिराज समाज ॥

जहां कारन प्रतिबन्धक सैं काज प्रगट्यौ बरनतैं तहां और बिभावना बरनते हैं कविराजनि के समाज हैं ते॥ २४४

उदाहरण दोहा।

मानत लाज लगाम नहि नैक न गहत मरोर ।
होत तोहि लखि बाल के दृग तुरंग मुहजोर ॥

लाजरूपी लगाम कौं नहीं मानै है नैंक मरोड़नहीं पकडते हैं तोकौं देखि कै नायिका कें दृग तुरंग हैं सो मुहजोर होते हैं। इहां लाज कारन नेत्रन को चलवा को रोकवेवारो है तौ भी दौड़बो काज भयो यातैं तीसरी बि-भावना है॥ २४५॥

चतुर्थ बिभावना लक्षण दोहा।

हेतु काज को जो नहीं तातै काज उदोत ।
यासौं और बिभावना कहत सकल कविगोत ॥

जो कारज को कारण नहीं है तासौं काज होय यासौं और बिभावना सब कविन के गोत कहते हैं ॥ २४६ ॥

उदाहरण दोहा।

हँसत बाल के बदन मैं यौं छवि कछू अतूल ।
फूली चम्पकबेलि तैं झरत चमेली फूल ॥

हंसते नायिका के मुख मैं ऐसे कछु अतोल छबि है फूली हुई चंपा की बेलि सैं चमेली के फूल झरे हैं। इहां चम्पक बेलि चमेली का फूलनि को कारन नहीं तासौं कारज भयो यातैं चौथी बिभावना ॥ २४७ ॥

पुनः कबित्त।

चन्दमुखी हाँसी मैं चमेली की लता सी होति चम्पकलता सी अंग जोति कौं धरति है। कवि मतिराम तेरे अंग की सुबास लहै कौन बेलि रूप यह जानी ना परति है॥ नैसुक निहारि कै छबीली नैन कोरनि ते ऐसी अचिरज की क-लानि आचरति है। ललित तमाल श्याम रसिक रसाल कौंते कदम मुकुल के कुलनि सौं करति है॥ २४८॥

चन्दमुखी है सो हँसते चमेली की बेलि सी होय है अंग की जोति कौ चंपक लता सी धारण करे है मतिराम कवि कहे है तेरे अंग को सुबास पाये सैं कौन बेलि मैं इस

रूप की नहीं जानी परै है जराक देखि के छबीली है सो ऐसो अचिरज की कलानि कौं रचै है तेही सुन्दर तमाल जो स्याम रसिक रसाल हैं तिनकौं कदम्ब के फूलनि के समूह सौं करै है। इहां तमाल वृच्छ है सो कदम्ब के फूलनि को कारन नहीं तासौं काज भयो यातें चौथी बिभावना ॥ २४८ ॥

पंचम बिभावना लच्चण दोहा।

बरनत हेतु बिरोध ते उपजत हैं जहँ काज ।
तहँ बिभावना औरऊ बरनत कवि सिरताज ॥

बरनन करतें जहां बिरोधी कारन सैं कारज उपजै है तहां भी और बिभावना सिरताज कवि बरनते हैं ॥२४९॥

उदाहरन सवैया।

मोरपखा मतिराम किरीट मैं कण्ठ बनी बनमाल सुहाई। मोहन की मुसकानि मनोहर कुण्डल डोलनि मैं छबि छाई॥ लोचन लोल बिसाल बिलोकनि को न बिलोकि भयो बस माई। वा मुख की मधुराई कहा कहौं मीठी लगै अँखियान लुनाई॥ २५० ॥

मतिराम कहै है मुकुट मैं मोरन को पर है, कण्ठ मैं सुहावनी बनमाला बनी है, कृष्ण की हंसनि है सो मन कौं हरवे वारी है कुण्डलनि की हलनि मैं छबि छाय रही

है, चंचल बड़े नैननि की चितवनि कौं देखि के हे भाई बस को नहीं भयो वा मुख की मिठाई कौं कहा कहौं आंखिन की लुनाई मीठी लगै है। इहां लुनाई है सो मिठाई को बिरुद्ध कारन है तासौं कारज भयो यातैं पंचम बिभावना है ॥ २५० ॥

परकीया उत्कण्ठिता पंचम बिभावना उदा॰ दोहा।

कुल नारिन भय ताप सहि आई सीतल धाम।
ह्यां पिय बिनहिं मकर अली जारत मोहिनिकाम॥

छठी बिभावना लक्षण दोहा।

जहँा काज ते हेतु कौं बरनत प्रगट प्रकास ।
तहँ बिभावना औरऊ बरनत बुद्धि बिलास ॥

जहां कारज सैं कारन को जाहर प्रकास बरनैं तहां और भी बिभावना बुद्धि के बिलास सैं बरनते हैं ॥ २५१ ॥

उदाहरण दोहा।

भयो सिन्धु ते बिधु सुकबि बरनत बिना बिचार।
उपज्यौ तौ मुख इन्दु तें प्रेमपयोधि अपार ॥

समुद्र सैं चन्द्रमा भयो यह सुकवि बिना बिचार बरनते हैं तेरे मुख चन्द्रमा सैं प्रेमरूप समुद्र अपार पैदा हुयो है। इहां इन्दु कारज सैं पयोधि कारन उपज्यौ यातै छठी बिभावना ॥ २५२ ॥

वनिताभूषन। अथ गनिका उत्कंठिता छठी बिभावना

उदाहरन दोहा।

धनदायक आयो नहीं किहि कारन इहि थान।
यौं भाषत चख झखन मैं सरिता वही अमान॥

अथ बिशेसोक्ति लच्चण दोहा।

जहँ परिपूरन हेतु ते प्रगट होत नहि काज।
विशेषोक्ति तहँ कहत हैं सकल सुकवि सिरताज॥

जहां पूरन कारन सें काज प्रगट नहीं होय तहां विशेषोक्ति कहते हैं सब सिरताज सुकवि॥ २५३॥

उदाहरण दोहा।

पियत रहत पिय नैन यह तेरी मृदुमुसुकानि।
तऊ न होति मयंकमुखि तनक प्यास की हानि॥

पी के नैन हैं सो यह तेरी कोमल हँसनि कौं पीते रहते हैं हे चन्द्रमुखी तौ भी प्यास को कमी जरा नहीं होती है। पीबो पूरन कारन है तौ भी प्यास मिटिबो कारज नहीं भयो यातें विशेषोक्ति है॥ २५४॥

पुन: दोहा।

प्यौ राख्यौ परदेश ते अति अद्भुत दरसाय।
कनक-कलस पानिप-भरे सगुन उरोज दिखाय॥

पीतम कौं परदेश सें राखि लियो अति अचिरज दिखाय के सोना के घट पानी के भरे हुए गुनसहित कुच

दिखाय कै । इहाँ भरे घटन को दीखिबो चलिबा को स गुन रूप कारन है तऊ चलिबो कारज नहीं भयो यातैं बिशेषोक्ति है ॥ १५५ ॥

ब्रहद्व्यंग्यार्थ । मृदुमाना उदाहरन सवैया ॥

पीतम को पहिलो अपराध निहारि न ती कटु बात कही । भौंह चढ़ाय सनेह नसाय रि-साय कछू नहिँ गाँस गही ॥ सीख सहेलिन की न सुनी नहि शोक-हुताशन देह दही । केवल लोयन कोयन मैं भरि बारि लली सरमाय रही॥

दोहा ।

शोक हुताशन रूप करु बिशेषोक्ति जुग जोय ।
बिशेषोक्ति अति हेतु ह्वै तऊ काज नहि होय ॥

सवैया ।

सीलसनी सजनीन समीप गुलाब कछू द-मनी दरसावै । ना गुरुलोग कुजोग कथै नहि रोग सँजोग शरीर लखावै ॥ नेह नहीं ननदीन निहारत क्यौं मन मोहिनि दीठि दुरावै ॥ दास दसा समही अब सो कस सास बुलावत पास न आवै ॥ ३ ॥

दोहा।

मुग्धा बिरहिनि कृश सकुच सास पास नहिँजाय।
कबि गुलाब भूषन यहाँ विशेषोक्ति दरसाय ॥

अथ असंभव लक्षण दोहा।

जहाँ अर्थ के सिद्धि को सम्भव बचन न होय।
तहाँ असम्भव होत हैं बरनत है सब कोय ॥

जहाँ प्रयोजन की सिद्धि को संभव बचन नहीं होय तहाँ असंभव होता है सब कोई बरनते हैं ॥ २५६ ॥

उदाहरण सवैया।

यौं दुख दै ब्रजबासिन कौं ब्रज कौं तजि कै मथुरा सुख पैहैं। वै रसकेलि बिलासिनि कौं बन-कुंजनि की बतियां बिसरैहैं॥ जोग सिखावन कौं हम कौं बहुर्यौं तुम सें उठि धावनि ऐहैं। ऊधो नहीं हम जानत ही मनमोहन कूबरी हाथ बिकैहैं॥ २५७॥

ब्रजबासिन कौं ऐसें दुःख दे करिकै वृज कौं छोड़ि करिकै मथुरा मै सुख पावैंगे वै रस की क्रीडान के आनन्द को बन का कुंजन की बातें भूलैंगे जोग सिखाने के वास्ते फेरि आप से बसीठ उठि आवैंगे। हे ऊधो हम सब नहीं जानैं ही मोहन कूबरी के हाथ बिकैंगे। इहाँ व्रज कौं तजि

मथुरा मैं सुख पावो रस को बात भूलिबो ऊधो को आवो संभव नहीं हो सो भयो यातैं असंभव नहीं है ॥ २५७ ॥

बनिताभूषन । मध्यावासकसज्जा असभव उदा० दोहा ।

के जानैं ही यह दिवस मेरो ह्वैहै आज ।
साँवन तीज उछाह दिन तजि वर सौति समाज॥

अथ असंगति लच्छण दोहा ।

होत हेतु जहँ और थल काज और थल होय ।
तहाँ असंगति कहत हैं कवि रस बुद्धि समोय ॥

जहाँ कारन और ठौर होय कारज और ठौर होय तहाँ असंगति कहते हैं कवि है सो रस मैं बुद्धि कौं भेंय कै॥

उदाहरण सवैया ।

दारुन तेज दिलीस के बीरनि काहू न बंस के बाने बजाये । छोड़ि हथ्यारनि हाथनि जोरि तहाँ सबही मिलि मूड़ मुड़ाये ॥ हाडा हठी रह्यौ ऐड़ किये मतिराम दिगन्तन मैं जस छाये । भोज के मूछनि लाज रही मुख औरनि लाज के भार नवाये ॥ २५९ ॥

दिल्लीपति के भयंकर तेज सैं कोई सूरनि नैं बंश के विरद नहीं बजाये शस्त्रन कौं गेरि कै हाथ जोरि कै तहाँ सब नैं मिलि कै मूड़ मुड़ा लिये हठोलो हाडा है सो अ· कड़ किये रह्यौ मतिराम कहै है दिसा के अवसाननि मैं

जस छाये, राजा भोज के मूछनि में लाज रही औरनि नैं मुख लाज के बोझ सैं नीचे करि लिये। इहाँ लाज कारन भोज की मूछनि में बोझ कारज औरनि के मुख पै यातैं असंगति है॥ २५९॥

पुनः दोहा।

राधा के दृग खेल मैं मूदे नन्दकुमार।
करनि लगी दृगकोर सो भई छेदि उर पार॥

कृष्ण नैं चोरमिहीचनो खेल मैं राधा के नैन मूदे तब दृगनि की अनी हाथनि कै लगी सो छेदि कै उर मैं पार भई। इहाँ दृगकोर लगिबो कारन हाथन मैं छेदिबो कारज उर मैं भयो यातैं असंगति है॥ २६०॥

द्वितीय असंगति लच्छण दोहा।

और ठौर करनीय जो करत औरही ठौर।
बरनत सब कबिराज हैं यहौ असंगति और॥

जो और ठौर करिबे जोग्य है सो औरही ठौर करे सब कविराज बरनते हैं यह भी और असंगति है॥२६१॥

उदाहरण दोहा।

पिय नैननि के राग कौं भूषन सजे बनाय।
लखें तिहारी छबि सुतौ सौति दृगनि अधिकाय।

पिय के नैननि के अनुराग कौं भूषन बनाय के पहिरे सो तो तुम्हारो छबि देखि कै सोतिन की आखिन मैं अ

धिकायो इहां पियनैननि में करिवे योग्य राग सौति ट्टगनि में कियो याते असंगति राग प्रेम और लाल रंग सौतिन के रोस भयो ॥ २६२ ॥

सवैया ।

घोर नहीं घनकी चहुँओरन दौर न दामिनि सोर कलाप्यौ । बादर नाहिं न दादुर बोलत बीर बलाक न चातक जाप्यौ ॥ कारन आन गुलाव कछू नहिँ दीसत बारि बयार न व्याप्यौ । का गुन आज प्रभात बड़े अलि फागुन राग मलार अलाप्यौ ॥ १ ॥

दोहा ।

फागुन गाव मलार को जानि असंगति दौर ।
द्वितिय और थल काम कों करै औरही ठौर ॥

तृतीय असंगति लच्चण दोहा ।

करन लगै जो काज कछु तातें करै विरुद्ध ।
यहौ असंगति कहत हैं कवि मतिराम विबुद्ध ॥

जो कछु काम करिवे लगै तो तासौं उलटो करै यहभी असंगति कहते हैं मतिराम कवि कहै है विवुध हैं ते ॥

उदाहरण दोहा ।

उदित भयो है जलद तू जग को जीवनदानि ।
मेरो जीवन लेत है कौन बैर मन आनि ॥२६४॥

हे मेघ तू जगत को जीवनदानी उदित भयो है और कौने बैर मन मैं लाय करिकै मेरो जीवन ले है अर्थात् बिरहिनी कौं दुखद है जीवन जल और जीवो इहां जीवन देवा को उदित होय जीवन लेवो उलटो कियो यातैं असंगति है ॥ २६४ ॥

अथ विषम लक्षण दोहा ।

जहाँ न हैं अनुरूप द्वै तिनकी घटना होय ।
विषम तहाँ बरनन करत कबि कोबिद सब कोय॥

जहां दोय समान रूप नहीं हैं तिनको रचना होय तहां विषम बरनन करते हैं कवि पंडित सब कोइ ॥२६५॥

उदाहरण सवैया ।

ऊधो जू सूधो विचार है धौं जु कछू समुझैं हमहू ब्रजवासी । मानिहैं जो अनुरूप कहौ मतिराम भली यह बात प्रकासी ॥ जोग कहाँ मुनि-लोगन जोग कहाँ अबला मति है चपला सी । श्याम कहाँ अभिराम सरूप कुरूप कहाँ वह कूबरी दासी ॥ २६६ ॥

हे ऊधो जू देखो कछू सूधो विचार है जो हम ब्रजवासी भी समुझैं जो हम माफिक कहौ तो मानैगी मतिराम कहै है यह भली बात प्रकाशी मुनिलोगनि के लायक जोग कहां और चपला सी बुद्धि की स्त्री कहां सुंदर

कृष्ण कहां वह कूबरी दासी कुरूप कहां इहां जोग में औ बनितान में कृष्ण में और कूबरी मे अनमिलते को संग है यातें विषम है ॥ २६६ ॥

मानहु आयो है राज कहूं चढि बैठ्यो है ऐसे पलास के खौढ़ैं। गुंज गरै सिर मोरपखा मति-राम हो गाय चरावत चोढ़ैं ॥ मोतिन को मेरो तोर्यौ हरा गहि हाथनि सौं रही चूनरी ओढ़ैं। ऐसही डोलत छैल भयें तुम्है लाज न आवत कामरी ओढ़ैं ॥ २६७ ॥

मानहु कछु राज आ गयो है ऐसे ढीलका पोखरा में चढ़ि बैठ्यो है गला में चिरमठी है सिर पै मोरनि को पर है मतिराम कहै है अहो चार्यो तरफ गाय चरावे है मेरो मोतीन को हार तोरि गेर्यो हाथनि सौं पकड़ि रही है चूनरी ओढ़े हुए ऐसेही छैल भये डोलते हौ तुमकौं कामरी ओढ़ें लाज नहीं आवै इहां गुंजा मोती कामरी चूनरी करि कृष्ण राधा में अनमिलते को संग है याते विषम है ॥

द्वितोय विषम लच्छन।

जहाँ बरनिये हेतु ते उपजत काज विरूप।
और विषम तहँ कहत हैं कवि मतिराम अनूप॥

जहां कारन से विरूप कारज उपजतो बरनिये तहां और विषम कहते हैं मतिराम कहै हैं सुंदर कबि जे हैं तें।

उदाहरण कवित्त ।

वारने सकल एक रोरी ही की आड़ पर हाहा न पहरि आभरन और अङ्ग मैं। कवि मतिराम जैसे तीछन कटाच्छ तेरे ऐसे कहा सर हैं अनङ्ग के न खंग मैं ॥ सहज सरूप सुथराई रीझ्यो मेरो मन डोलत है तेरी अद्भुत की तरंग मैं। सेतसारी ही सौं सब सौते रंगी श्याम रंग सेतसारीही सौं श्याम रँगे लाल रंग मैं ॥

एक रोली की आड पै ही सब बार फेर हैं हाहा खांऊं हूं और गहना अंग मैं मति पहरै मतिराम कबि कहै है जैसे पैने तेरे कटाच्छ हैं ऐसे कांई कामदेव के तरकस मैं तीर हैं सहज सरूप की सुंदरता मैं मेरो मन रीझ्यो हुयो तेरी अचरज की तरंग मैं डोलै है सुपेद साड़ी सैं ही सब सौति श्याम रंग मैं रँगो सुपेद सारीही सौं श्याम कौं लाल रंग मैं रँगी अर्थात सौति दुख सैं मलीन भई श्याम प्रेमासक्त भये इहां सारी कारन से तरंग है कारज कालो लाल रंग है याते विषम है ॥ २६८ ॥

तृतीय विषम लच्छण दोहा ।

इष्ट अर्थ उद्यमहि तें जहँ अनिष्ट ह्वै जाय।
और विषम बरनत तहां जे कवि कोविदराय ॥

अच्छे प्रयोजन के उपाय से जहां अनिष्ट हो जाय तहां और विषम बरनते हैं जे कवि पंडितन के राजा हैं ते ॥

उदाहरण दोहा।

विरहआँच डरि मन सखी घन सुंदर तन जाय।
दुगुन दाह बाढ़ै तहां आपुहि जाय सिराय॥

सखी है सो विरह की आग से मन मैं डरिकै सुंदर तन मैं कपूर लगावै तहां दूनी दाह बढ़ै आपुही सीरी हो जाय इहां ताप मिटावा का उद्यम से दूनो ताप भई यातैं तीसरो विषम है॥ २७१॥

अथ सम लक्षण दोहा।

जहाँ दुहूं अनुरूप को कविजन करत बखान।
तहां समुझि सम कहत हैं जे सुरंग रस ज्ञान॥

जहां दोनो समान रूप को कवि लोग बखान करैं तहां विचारि कै सम कहते हैं जे रसज्ञान मैं सुरंग हैं ते॥

उदाहरन सवैया।

मोहन को मुखचन्द अली निज नैन चकोरन को दरसावै। लोचन भौंर गुपाल के आपने आनन बारिज बीच बसावै॥ तोतैं लहै मतिराम महा छबि प्रानपियारे तैं तू छबि पावै। तो सजनी सब के मन भावै जु सोन से अंगनि लाल मिलावै॥ २७३॥

हे अली मोहन कों मुख चन्द्रमा है सो अपना नैन च

कोरनि कौं दिखावे गोपाल के लोचन भौंरान कौ अपने मुख कमल के बीच मैं बसावे अर्थात मोहन कौं मुख तू देखे तेरो मुख मोहन कौं दिखावे मतिराम कहे है प्यारी तो से महा छबि पावे प्रानप्यारा सें तू छबि पावे है सखी तौ सब के मन मै भावे जो सोना सा अंगनि कौं लाल सौं मिलावे इहां सोना लाल और राधाकृष्ण मैं जथायोग्य को सग है यातैं सम है ॥ २७३ ॥

द्वितोय सम लक्षण ।

जहाँ हेतु ते काज को बरनत उचित सरूप ।
बरनत तहँ सम औरऊ जे कबि कोविद भूप ॥

जहां कारन सें कारज को उचित सरूप बरने तहां और भो सम बरनते हैं जे कबि पंडितन के राजा हैं ते ॥

उदाहरन दोहा ।

करत लाल मनुहारि पै तू न लखत इहि ओर ।
ऐसो उर जु कठोर तौ उचितहि उरज कठोर ॥

लाल मनुहारि करते हैं तौ भी तू इस तरफ कौं नहीं देखे है ऐसो हृदो जो कठिन है इहां तौ कुच न्यायही कठिन है इहां कठोर उर कारन सें कुच कठोर कारज उचित बरने यातै सम है ॥ २७५ ॥

तृतोय सम लक्षण ।

ताकी सिद्धि अनिष्ट विन उद्यम जाके अर्थ ।
तासौं सम औरो कहत जे कबिराज समर्थ २७६

जिसके वास्ते उद्यम तिसको सिद्धि निर्विघ्न होय तिस सों और सम कहते हैं जे समर्थ कविराज हैं ते ॥

उदाहरण सवैया ।

कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहौ तितही जितही मन भायो । काहे कों सौहैं हजार करौ तुम तौ कबहूँ अपराध न ठायो ॥ सोवन दीजे न दीजे हमै दुख यौंही कहा रसबाद बढ़ायो । मान रह्यौ ई नहीं मनमोहन मानिनी होय सो मानै मनायो ॥ २७७ ॥

नायिका की उक्ति नायक प्रति मतिराम कहे है तुम कों कोई नहीं मनै करै जहां मन राजी है तहांहीं रहो क्यों हजार सौगन्द खावो हो तुमने तो कहै भी अपराध नहीं कियो सोवा दीजे हमकों दुख नहीं दीजिये यौं ही रस को जिकर कांई बढ़ायो है हे मनमोहन मानती है हो नहीं मानिनी होय सो मनाये सैं मानै इहां मनावा को उद्यम कियो सो सिद्ध भयो याते तीसरो सम है ॥ २७७ ॥

अथ विचित्र लक्षण दोहा ।

जहाँ करत उद्यम कछू फल चाहत विपरीति ।
बरनत तहाँ बिचित्र कहि जे कवित्त रस प्रीति॥

जहां कछू उपाय करतैं उलटो फल चाहै तहां विचित्रालंकार कहिकै बरनते हैं जे काव्य रस मैं प्रीति राखै ॥

उदाहरण कवित्त ।

औरनि के तेज सीरे करिवे के हेत आँच करै तेज तेरो दिशि विदिशि अपार मैं । परमुख अधिक अँधेरी करिवे कौं फैली जस की उजेरी तेरी जग के पसार मैं ॥ राव भावसिंह शत्रुशाल के सपूत यह अदभुत बात मतिराम के विचार मैं । आय कै मरत अरि चाहत अमर भयो महा बीर तेरी खग्गधार गंगधार मैं ॥ २७९ ॥

औरन के प्रताप सीरे करिवे के हेत तेरो प्रताप है सो आंच करै है अपार आठौं दिशान मैं शत्रुन के मुख मैं ज्यादा अंधियारी कर वाकौं तेरो जस को चाँदनी फैली है जगत के फैलाव में है शत्रुशाल के सपूत राव भाव सिंह मतिराम के विचार मैं यह अदभुत बात है रिपु हैं सो अमर भये चाहते हुये आकरिकै मरते हैं हे महा सूर तेरी खड्ग धार रूप गंगा की धारा मैं इहां सीरे करिवे कौं आंच करिवो अंधेरी कौं उजारी अमर हो वाको मरिबो उलटो उद्यम है यातैं विचित्र है ॥ २७९ ॥

गनिका आगतपतिका ।

अंगन अंग उमंग भरी सगरी सखि संग रही अनुरागी । बैठि गुलाब सु आंगन मांझ वरांगन पूछि पखारि सभागी ॥ ही हरषाय कली बरषाय

बिरी बरषाय पिया रस पागी । क्यों गुनरूप उ-
जागरि नागरि भूषन धारि उतारन लागी ॥१ ॥

दोहा ।

कीरत भूषन आपने भूषन लैन नवीन ।
इच्छा फल विपरीत को जतन विचित्र प्रवीन ॥

अथ अधिक लच्छण दोहा ।

जहाँ बड़े आधार तैं बरनत बधि आधेय ।
कहतसुकविजनअधिकतहँ जिनकीबुद्धि अजेय ॥

जहां बड़ा आधार सैं आधेय को बढ़ा कै बरनै तहां सुकबि लोग अधिक कहतें हैं जिनकी मति अजीत हैं ते ॥

उदाहरण दोहा ।

जिनकै अतुल बिलोकिये पानिप पारावार ।
उमड़िचलतनित दृगनिभरि तोमुखरूप अपार ॥

जिनकै पानिप के समुद्र अतोल देखिये हैं दृग तेरे मुख के अपार रूप मैं भरिकै उपटि चलते हैं इहां दृग समुद्र आधार स रूप आधेय अधिक है यातैं प्रथम अधिक है ॥

द्वितीय अधिक लच्छण दोहा ।

जहाँ वड़े आयेध तैं बरनत बढ़ि आधार ।
तहां अधिक औरौं कहत कविजन बुद्धि अपार ॥

जहां बड़ा आधेय सैं आधार को बढ़ाकै बरनै तहां और अधिक कहते हैं अपार मति के कवि लोग ॥ २८१ ॥

उदाहरण कवित्त ।

जाके कोश भीतर भवन करतार ऐसो जाके नाभिकुंड मैं कमल विकसत है । कहै मतिराम सब थावर जँगम जग जाकी दिग्ध उदर दरी मं दरसत है । जाके एक एक रोम कूपनि मैं कोटिन अनंत ब्रह्मांडनि को व्रन्द बिलसत है । राव भावसिंह तेरी कहां लौं बड़ाई करौं ऐसो बड़ो प्रभु तेरे मन मैं बसत है ॥ २८३ ॥

जिसके कोश के भीतर लोक हैं ऐसो करतार है जाके नाभिरूप कुंड कमल फूले है मतिराम कहै है संपूर्ण जड़ चैतन्य जगत जाकी दीर्घ उदर रूप कन्दरा मैं दीखै हैं जिसके एक एक रोम रूप कुवानि मैं कोटिक अन्तरहित लोकनि को समूह विशेष लसै है हे राव भावसिंह तेरी बड़ाई कहां ताई करौं ऐसो बड़ो प्रभु तेरे मन मैं बसै है इहां प्रभु बड़े आधेय सै मन आधार अधिक है यातैं अधिकालंकार है ॥ २८३ ॥

अथ अल्प लक्षण दोहा ।

जहँ सूक्षम आधेय तैं अति सूक्षम आधार ।
अल्प अलंकृत कहत हैं कविजन बुद्धि उदार ॥

जहां छोटा आधेय सैं आधार अति छोटो होय तहां अल्पालंकार कहते हैं बुद्धि उदार कबि लोग ॥ २८४ ॥

उदाहरण दोहा।

मन जद्यपि अनुरूप है तऊ न छूटति शंक।
टूटि परै जनि भार ते निपट पातरी लंक २८५

जो भी मन समान पतला है तौ भी डर नहीं मिटै बोझ सैं टूटि नहीं परै अत्यन्त पतली कमर इहां मन सूक्ष्म आधेय सैं कमरि आधार सूक्ष्म है यातैं अल्प है॥२८५॥

अथ परस्पर लक्षण दोहा।

जहाँ परस्पर उपकरत तहां परस्पर नाम।
बरनत सब ग्रन्थनिमते कबि कोविद मतिराम॥

जहां परस्पर उपकार करैं तहां परसपर नाम बरनते हैं सब ग्रन्थनि के मत सैं मतिराम कहै है कबि कोविद जे हैं ते॥ २८६॥

उदाहरण दोहा।

तुहिराखी सखिलाल करि निजउरकी बनमाल।
तैं राख्यो करि लाल निज कण्ठमाल को लाल॥

हे सखी तोकौं लाल नै अपने हृदा की बनमाल करि राखो है तैनै लाल कौं कण्ठमाला को लाल करि राख्यो है इहां लाल नै बाल कौं माला करि राखो बाल नै लाल कौं लाल करिकै राख्यो यह परस्परोपकार है यातैं अन्योन्या है॥ २८७॥

कवित ।

कब की हौं देखति चरित्र निज आंखिन सौं राधिका रसीली श्याम रसिक रसाल के। मति राम बरनै दुहूंनि के मुदित अति मन भये मीन से अमृत मय ताल के॥ इक टक देखैं लियें ब्रत से निमेखनि के नेम किये मानौं पूरे प्रेम प्रति पाल के। लाल मुख इन्दु नैन बाल के चकोर वा मुख अरबिन्द चञ्चरीक नैन लाल के ॥२८८॥

मैं कबकी अपनी आखिन सौं चरित्र देखौं हौं रसीली राधिका के और रसिक रसाल श्याम के मतिराम कहै है दोनून के अति प्रसन्न मन भये अमृत भरे तलाव के मीन समान इक टक देखै हैं निमेखनि को व्रत सो लिये हुयें मानो नेम किये हैं पूरे प्रेम के प्रतिपाल के लाल को मुख चन्द्रमा है बाल के नैन चकोर हैं वाल को मुख कमल है लाल के नैन भ्रमर है इहां लाल मुख ने वाल के नैननि को उपकार कियो और बाल मुख ने लाल का नैननि को उपकार कियो यातें परस्पर है ॥ २८८ ॥

अथ विशेष लच्चण दोहा ।

जहाँ अधेय बखानिये बिन प्रसिद्ध आधार ।
कवि जन तहां विशेष कहि बरनत बुद्धि उदार ॥

जहां प्रसिद्ध आधार विना आधेय को बर्नन करियो तहां बुद्धिउदार कवि लोग हैं ते विशेष कहि कै बरनते हैं॥

उदाहरण दोहा।

चलौ लाल वाकी दसा लखौ कही नहि जाय।
हिय रेहै सुधि रावरी हियरो गयो हिराय॥२९०॥

हे लाल चलौ वाकी दशा देखौ कही नहीं जाय है हिया मैं आप की यादि है हियो गुमि गयो है इहां सुधि आधेय हिया आधार बिना है यातैं विशेष है॥ २९०॥

अथ द्वितीय विशेष लच्चण—दोहा।

जहँ अनेक थल मैं कछू बात बखानत एक।
तहँ विशेष औरौ कहत कविजन बुद्धिविवेक॥

जहां कछू एक बात कौं अनेक ठौर बनैं तहां और विशेष कहते हैं बुद्धि के विवेक सैं कवि लोग॥ २९१॥

उदाहरण—सवैया।

मन्दर बिन्ध्य सुमेर कलिन्द गिरिन्दन कौं हिम-सैलहि साजै। देवनदी सम तीनिहु लोक पवित्र करै सब जीवसमाजै॥ छाय रही मति-राम कहै छिति-छोरनि छीरधि की छबि छाजै। पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन भाऊ दिवान की कीरति राजै॥ २९२॥

मन्दराचल विन्ध्याचल सुमेरु कलिन्दाचल गिरिन्दन कौं हिमाचल कौं सजै है, गंगा की समान तीनौं लोकनि के सब जीवन का समाज कौं पवित्र करै है मतिराम कहै

है पृथ्वी के ओरनि ताईं छाय रही है और समुद्र की भी छबि छाजै है चारौं दिशान मैं दिवान भावसिंह की कीरति राजै है। इहां कीरति की मन्दरादि अनेक ठौर वर्णन है यातैं दूसरो विशेष है ॥ २९२ ॥

तृतीय विशेष लक्षण – दोहा।

करत कछू आरम्भ ते जहँ असक्य कछु और ।
तहँ विशेष औरौ कहत कवि कोविद सिरमौर॥

जहां आरम्भ सैं कछु और असक्य करै तहां और विशेष कहते हैं कवि पण्डितन के सिरमौर ॥ २९३ ॥

उदाहरण – कवित्त।

छीरधि की छबि छिति-छोर चार्यौं ओरनि मैं फैलि रह्यो जस कुल ललित ललाम को। बखत बिलन्द मुख सुन्दर सरदचन्द देखि करि गरद गुमान होत काम को ॥ बाढ़ै पुन्य ओघ अघमरषण आखरनि मतिराम करत जगत जप नाम को। सत्ता के सपूत राजऋषि भावसिंह कीन्हो आपुने चरित्रनि प्रगट रूप राम को ॥

छीरधि कीसी छबि चारौंओरनि मैं पृथ्वी के अन्त ताईं जस को समूह फैलि रह्यो है सुन्दर सैं सुन्दर को समय बड़ा है सुन्दर मुख सरद का चन्द्रमा को देखि के कामदेव को गुमान दूरि होय है पुन्य को समूह बढ़ै है अघ दूरि

करनेवाले अच्छरनि सैं मतिराम कहै है जगत है सो नाम को जप करै है शत्रुशाल के सपूत राजऋषि भावसिंह नैं आपने चरित्रनि सौं राम को रूप प्रगट कियो इहां भाव सिंह का चरित्र का आरम्भ सैं राम रूप प्रत्यक्ष भयो यातैं तीसरो विशेष है ॥ २९४ ॥

अथ व्याघात लक्षण - सोरठा ।

जो जैसो करतार, सो विरुद्धकारी जहाँ ।
बरनत सुमति उदार, तहाँ कहत व्याघात हैं ॥

जो जिस तरह को करतार है सो जहां विरुद्धकारी बरनैं तहां सुमति उदार व्याघात कहते हैं । २९५ ।

उदाहरण – कवित्त ।

मोहन-लला कौं मनमोहनी विलोकि बाल कसि करि राखति है उमगी उमाह कौं । सखिनि की दीठि कौं बचाय कै निहारत है आनँद प्रवाह बीच पावति न थाह कौं ॥ कवि मतिराम और सबही के देखतही ऐसी भांति देखति छिपावति उछाह कौं । वेही नैन रूखे से लगत और लोगनि कौं वेई नैन लागत सनेह-भरे नाह कौं ॥ २९६ ॥

मनमोहनी बाल है सो मोहनलला कौं देखि के उमगे हुये उमाह कौं रोकि के राखै है सखीन की नजरि कौं

बचाय कै देखै है आनन्द के प्रबाह के बीच मैं थाह कौं नहीं पावै है मतिराम कवि कहै है और सबनि के देखते ही ऐसी तरह देखती है उछाह कौं छिपाती है और लोगनि कौं वेही नैन रूखे से लगै हैं पति कौं वेई नैन सनेह के भरे लागै हैं। इहां सनेहभरे नैननि सैं रूखापन विरुद्ध कार भयो यातैं व्याघात है। २९६ ॥

द्वितीय व्याघात लक्षण—दोहा।

जहां क्रिया की सुकरता बरनत काज विरोध ।
तहां कहत व्याघात हैं औरो बुद्धि बिबोध॥२९७॥

जहां क्रिया की सुन्दरता सैं बिरोध काज बरनैं तहां और व्याघात कहते हैं बुद्धि के बोध सैं ॥ २९७ ॥

उदाहरण—दोहा ।

जु पै सखी ब्रज गांव मैं घर घर चलत चबाव ।
तौ हरिमुख लखि देति किन नैन चकोरनि चाव॥

हे सखी जो पै ब्रज गाँव मैं घर घर मैं निन्दा चलै है तौ हरि के मुख कौं देखि करिकै नैनरूपी चकोरनि कौं हर्ष क्यौं नहिं दे इहां निन्दा है सो मुख देखि वाकी विरुद्ध क्रिया है ताही सौं देखिबो काज भयो यातैं दूसरो व्याघात है ॥ २९८ ॥

अथ हेतुमाला लक्षण—दोहा।

पूरब पूरब हेतु जहँ उत्तर उत्तर काज ।
तहँा हेतुमाला कहत कवि कोविद सिरताज ॥

जहां पूर्व पूर्व कारन होय उत्तर उत्तर काज होयं तहां हेतुमाला कहते हैं। कवि पण्डितन के सिर के ताज हैं ॥ २०० ॥ उदाहरण - छप्पय।

मन प्रगटित हरि प्रीति प्रीति तिहिँ तेज प्रकासिय। प्रबल तेज तिहिँ जगत जीव रच्छा उल्लासिय ॥ तिहिँ रच्छा बढ़ि धर्म धर्म तिहिँ स-ञ्चित सम्पति। तिहिँ सम्पति किय दान दान तिहिँ सुजस बिमल अति ॥ मतिराम सुजस दिन प्रति बढ़त सुनत दुवन उर फट्टियउ। भुव भाव-सिंह शत्रुशालसुत इहि बिधि चरित प्रगट्टियउ ॥

मन में हरि की प्रीति प्रगटै तिस प्रीति सैं तेज प्रकाशै तिस प्रबल तेज सैं जगत मैं जीवन को रच्छा प्रगटै तिस रच्छा सैं धर्म्म बढ़ै तिस धर्म्म से सम्पत्ति इकट्ठी होय तिस सम्पति से दान होय दान करने सैं सुजस अति निर्म्मल होय मति राम कहै है दिन प्रति सुजस वढ़तैं सो सुनतैंही दुर्जनन को उर फाट्यौ जगत मैं शत्रुशाल के सुत भावसिंह नैं इस विधि सैं चरित्र प्रगट कियो इहां। हरि प्रीति कारन है। तेज कारज है फेरि तेज कारन है जीवरच्छा कारज है फेरि जीवरच्छा कारन हैं धर्म्म कारज है फेरि धर्म्म कारन है सम्पत्ति कारज है फेरि सम्पत्ति कारन दान कारज, फेरि दान कारन जस कारज, फेरि जस सुनिबो कारन रिपु उर फटिबो काज है यातैं हेतुमाला है ॥ २०० ॥

द्वितीय हेतुमाला लक्षण—दोहा ।

उत्तर उत्तर हेतु जहँ पूरब पूरब काज ।
इहौ हेतुमाला कहत कविजन बुद्धि जहाज ॥

जहां उत्तर उत्तर कारन होय पूर्व पूर्व काज होय यह भी हेतुमाला कहते हैं कवि लोग बुद्धि के जहाज हैं ते ॥

उदाहरण - छप्पय ।

दुःख मूल गनि पाप पाप कहँ कुमति प्रकासै ।
मोह कुमति विस्तरै क्रोध मोहै उल्लासै ॥
लोभ क्रोध कहँ रचै लोभ कहँ काम करत पुनि।
संग जनित जग काम कहत मतिराम वेदधुनि ॥
इहिंबिधिविवेककरसंगतजिसुमरतमनशंकरचरन।
संसार सकल संताप तजि लहत परमआनन्दघन॥

दुःख को मूल पाप गनौं पाप कौं बुद्धि प्रकासै है । मोह है सो कुमति कौं करै है, क्रोध है सो मोह कौं करै है, लोभ है सो क्रोध कौं रचै है, लोभ कौं फेरि कामदेव करै है, जगत में काम है सो संग से पैदा होय है मतिराम कहै है वेद की बानी इस प्रकार ज्ञान को संग छोड़ि कै मन है सो शंकर को चरनन कौं सुमिरै संसार के संपूर्ण तापनि कौं तजि कै परम आनन्दघन कौं प्राप्त होत है । इहाँ दुःख काज है, पाप कारन फेरि मोह कारज कुमति कारन है इत्यादि जानिए । ३०२ ।

एकावली लक्षण दोहा।

एक अर्थ लै छोड़िये और अर्थ लै ताहि।
अर्थ पाँति इमि कहत हैं एकावली सराहि॥

एक अर्थ कौं ले कै छोडिये और अर्थ कौं ले कै तिस कौं छोडिये या प्रकार अर्थ की पंक्ति होय तिसकौं सराहि कै एकावली कहते हैं॥ ३०३॥

उदाहरण छप्पय।

सुरजनसुत नृप भोज भूमि सुर-जन रच्छाकर। भोज-तनय नृप रतन भोज सम दानि विदित बर॥ रतनपुत्र नृप नाथ रतन जिमि ललित जोतिमय। नाथ नन्द तिमि शत्रुशाल नरनाथ महोदय॥ जग शत्रुशालनन्दन नवल शत्रुन उर सालत रहिय। नृप भावसिंह मतिराम कहि सुजस अमल प्रतिदिन लहिय॥ ३०४॥

सुरजन को सुत राजा भोज, सो भूमि मैं सुर मनुश्चन को रच्छक भयो, भोज को सुत राजा रत्न भयो सो भोज समान सुन्दर दानी विख्यात भयो, रत्न को पुत्र राजा गोपीनाथ भयो, रत्न ज्यौं सुन्दर जोति सहित भयो तैसैंही गोपीनाथ को सुत राजा शत्रुशाल महा उदय को भयो जगत मैं शत्रुशाल को नवल पुत्र शत्रुन के उर मे सालती रहै राजा भावसिंह को मतिराम कहै है निर्मल जस प्रति

दिन पावै। इहाँ सुरजन कौं छोड़िकै भोज कौं लियो भोज कौं छोड़िकै रत्न कौं लियो रत्न कौं छोड़ि कै गोपीनाथ कौं लियो गोपीनाथ कौं छोड़िकै शत्रुशाल कौं लियो शत्रुशाल कौं छोड़ि कै भावसिंह कौं लियो यातें एकावली है॥ २०४॥

अथ माला दीपक लक्षण दोहा।

जहँ दीपक एकावली होत दुहुनि को जोग ।
मालादीपक नाम तहँ बरनत सब कवि लोग ॥

जहाँ दीपक एकावली इन दोनून को जोग होय तहाँ सब कवि लोग माला दीपक नाम बरनते हैं॥ ३०५॥

उदाहरण कवित्त।

महावीर शत्रुशाल नन्द राव भावसिंह हाथ
मैं तिहारे खग्ग जीति को जमान है। परम पु-
रुष परमेश्वर कृपा ते आज तिहारोई रूप रज
लाज को निधान है॥ अरिन के मुण्डन सौं रा-
वरो रिझायो हर कीन्हो मतिराम वकसीस को
बखान है। तुम पातो सुजस सुजस गायो कवि
लोग पायो कविलोगनि गयन्दनि को दान है॥

महावीर शत्रुशाल के सुत हे राव भावसिंह आप के हाथ मैं खड्ग है सो जीति को जमान है आज परम पुरुष परमेश्वर की कृपा सैं आपको ही रूप रजपूती को लाज को

रक्षक है रिपुनि के मस्तकनि सौं आपको रिझाये महादेव है तानै मतिराम कहै है सुजस को वर्नन किया है सो तुमनै सुजस पायो सुजस कवि लोगनि नै गायो । कवि लोगनि नै हाथीनि का दान पायो । इहाँ शिव कौं छोड़ि कै राजा कौं लियो, राजा कौं छोड़ि कै कविन कौं लियो, कविन कौं छोड़ि कै गयन्दन के दान कौं लियो, यह तौ एकावली राजा वर्न्य कवि लोग अवर्न्यन का पायो, पायो एक धर्म है, यह दीपक यातैं मालादीपक है ॥ ३०६ ॥

दोहा ।

कनक बेलि मैं कोकनद तामैं श्यामसरोज ।
तिनमैं मृदुमुसकानि है तामैं मुदित मनोज ॥

सोना की बेलि मैं लाल कमल है तामैं नील कमल है तिन मैं कोमल हँसनि है तामैं प्रसन्न कामदेव है । इहाँ कनकबेलि कौं छोड़िकै कोकनद लियो ताकौं छोड़ि कै श्याम सरोज लिये तिनकौं छोड़ि कै हँसनि लीनी ताकौं छोड़िकै मनोज लियो यह यह तौ एकावली और कनक-वेलि अवर्न्य नायिका वर्न्य कोकनद अवर्न्य मुख वर्न्य श्यामसरोज अवर्न्य नेत्र वर्न्य है तिनको मुदित रहिबो एक धर्म है यातैं मालादीपक है ॥ ३०७ ॥

अथ सार तथा यथा संख्य लक्षण दोहा ।

उत्तर उत्तर उतकरष सार कहत सज्ञान ।
यथा संख्य क्रम सौं कहैं क्रमही बहुरि बखान ॥

उत्तर उत्तर सरस होय तिसकौं ज्ञानवान सार कहते हैं क्रम सौं कहि कै फेरि क्रमही सौं बखान करै सो यथा संख्य है ॥ ३०८ ॥

सार उदाहरण सवैया ।

सैलनि कौं जग ऊँचे कहैं तिनमैं कनका-चल कौं श्रुति गावै । तापर ऊँचो पुरन्दर मन्दिर जो छबि वृन्दनि सौं नभ छावै ॥ तापर यौं म-तिराम बखानत ऊँचो मनोरथ दानि कहावै । दान मैं भाऊ के हाथ उचाई कौं सोऊ नहीं कलपद्रुम पावै ॥ ३०९ ॥

जगत है सो गिरिन कौं ऊँचे बतावैं हैं तिनमैं सुमेरु कौं वेद ऊँचे गावैं हैं तिसपै इन्द्र को महल ऊँचो है जो छवि का समूहन सौं आकाश कौं छावै है ताके ऊपर ऐसे मतिराम कहै है मनोरथ को दानी ऊँचो कहावै है दान दान मैं भावसिंह के हाथ की उँचाई कौं सो कल्पवृक्ष भी नहीं पावै है । इहाँ एक सैं एक ऊँचो है यातैं सार है ॥

कवित ।

मधुर मृदुल बैन भाखि चित चोरत है मो-रत है नैन दीठि धारि दिल धोज की । भायन जँभाय अँगराय रंग राखत है आँगुरी हलाय त-रजाय कहै चोज की ॥ आन मिलि देखि फिरि

देखि कै कटाच्छन तैं हँसै हरषाय रीति राखत न रोज की। तन मन नैन वैन सरस सरस मनो पाई आज बाल नैं मुसाहिबी मनोज की॥

दोहा।

तन मनादि मैं सरसता अलंकार यौं सार।
सरस सरस बरनैथवा निरस निरस सो सार॥

यथा संख्य उदाहरण कवित।

महाबीर शत्रुसाल नन्द राव भावसिंह तेरी धाक अरिपुर जात भय भोय से। कहै मतिराम तेरे तेज पुंज लिये गुन मारुत औ मारतण्ड मण्डल विलोय से॥ उड़त नवत टूटि फूटि मिटि फाटि जात बिकल सुखात बैरी दुखनि समोय से। तूल से तिनूका से तरोवर से तोयद से तारा से तिमिर से तमीपति से तोय से॥ ३१०॥

महा सूर शत्रुशाल के सुत नन्द है राव भावसिंह तेरी धाक सें बैरीन के पुर डर में भीजे से जाते हैं मतिराम कहे है तेरे प्रताप के समूह के गुन लियें हुयें पवन और रविमण्डल मथे से जाते हैं उड़ते हैं नवते हैं टूटते हैं फूटते हैं मिटते हैं फाटि जाते हैं बिकल सूकते हैं बैरी हैं ते दुःखनि में मिलाये सें रूई से तृण से तरु से मेघ से तारा से तम से चन्द्र से जल से इहाँ उड़त आदि आठ क्रिया जिस

क्रम सैं है तिसही क्रम से तूल आदि आठ वस्तु को बर्नन है याते यथा संख्य है ॥ ३१० ॥

कवित्त ।

एरे बाम नैन मेरे एरी भुज वाम आज तेरे फरकन तें जो बालम बिहारि हौं। करिहौं गु. लाव उपकार गुनमानिनी के देखन बिभेटन मैं आगै बिसतारि हौं॥ दैहै धन जेतौ पिय लाय परदेसन तैं लैहौं हरषाय तब ऐसी रीति धारि हौं। मूदि नैन दाहिने कौं दाई भुज दूर राखि तोही ते निहारि हौं मैं तोही ते सम्हारि हौं॥

दोहा ।

क्रम सैं कहे पदार्थ को क्रम सैं कथन जु होय।
यथा संख्य तासौं कहत कवि गुलाब बुध लोय॥

अथ द्विविधि पर्याय लक्षण दोहा ।

कै अनेक है एक मैं कै अनेक मैं एक।
रहत जहाँ पर्याय सो है पर्याय बिबेक॥

कै तौ एक मैं अनेक है अथवा अनेक मैं एक रहै जहाँ क्रम सौं सो पर्याय को विबेक है॥ ३११ ॥

उदाहरण एक मैं अनेक को सवैया ।

मृदु बोलत कुराडल डोलत कानन कानन कुंजनि ते निकस्यौ । बनमाल बनी मतिराम

हिये पियरो पट त्यौं कटि मैं बिलस्यो ॥ जब ते सिरमोर पषानि धरें चितचोरि चितै इत ओर हँस्यौ । जब तें दुरि भाजि कै लाज गई अब लालच नैननि आनि बस्यौ ॥ ३१२ ॥

नायिका की उक्ति कोमल बोल तो कानन में कुंडल हलती बन कुंजन सें कढ्यौ मतिराम कहै है हिया मैं बन का फूलन की माला बनी है तैसेंही पीली वस्त्र कमरि मैं बिराजै है जब सें मस्तक पै मोर की पाख धरें हुयें चित्त को चोर है सो मेरी ओर झांकि कै मुसकायो तबसें छिपि कै लाज भाजि गई अब आंखिन मैं लालच आय बस्यौ है इहां एक कृष्ण मैं क्रम सें अनेक बात हैं यातै पर्याय है ॥

अनेक में एक को उदाहरण दोहा ।

सखी तिहारे दृगनि की सुधा मधुर मुसकानि ।
बसी रहत निसिद्यौसहू अब उनकी अखियांनि ॥

हे सखी तुम्हारी आखिनि की अमृत सें मीठी हांसी है सो अब कृष्ण की आखिन मैं राति दिन बसी रहै है इहां एक हांसी राधा की आंखिन में और कृष्ण की आखिन मैं रही यातें पर्याय है॥ ३१३ ॥

अथ परिवृति लक्षण दोहा ।

घाटि बाटि है बात को जहां पलटिबो होय ।
तहां कहत परिवृत्ति है कवि कोबिद सब कोय ॥

घाटि अथवा बाधि होय जहां दोय बात को बदलिबो होय तहां परिवृत्ति कहते हैं कबि पंडित सब कोई ॥३१४॥

उदाहरण दोहा ।

मो मन मेरी बुद्धि लै करि हर कौं अनुकूल ।
लै त्रिलोक को साहिबी दै धतूर के फूल ॥३१५॥

हे मेरे मन मेरी मति ले कै शिव कौं राजी करे धतूरा के फूल दे करिकै तीन लोक को मालकी लै इहां धतूरा को फूल देकै त्रिलोक की साहिबी लीनी यातैं परिवृत्ति है॥३१५॥

पुन: कबित्त ।

जोर दल जोरि साहिजादो साहिजहां जंग जुरि मुरि गयो रही राव मैं सरम सी । कहै मतिराम देवमन्दिर बचाये जाके वर वसुधा मैं वेद श्रुति विधि यौं बसी ॥ जैसो रजपूत भयो भोज को सपूत हाड़ा ऐसो और दूसरो भयो न जग मैं जसी । गायनि कौं बकसी कसाइनि की आयु सब गायनि की आयु सो कसाइनि कौं बकसी ॥ ३१५ ॥

जबर फौज जोड़ि कै साहिजादो और साहिजहां जंग मैं जुड़ि कै मुड़ि गये लाज राव मैं रही, मतिराम कहै है देवतानि के मन्दिर बचाये जिसके जोर सैं पृथ्वी मैं वेद और

श्रुति की रीति ऐसे बसी, जैसो भोज को सपूत रजपूत भयो ऐसो और दूसरो जगत मैं जसो नहीं भयो गजन को उमर कसाईन को दीनी सब गजन की उमरि कसाईन कौं दीनी इहां उमरि को बदले है यातैं परिवृत्ति है ॥३१६॥

अथ नवोढ़ा सवैया।

लीन नितंबन नै गुरुता कटि की कटि नैं तिनकी कृशताई। रोमन बैनन की ऋजुता लइ बैनन रोमन की कुटिलाई॥ पायन नैनन मंद गती गहि नैनन पायन की चपलाई। यौं गुन आगरि नागरि अंगन आपस मैं हठि लूटि मचाई॥ ३१७॥

दोहा।

तिय-अंगन पलटो कर्यौ यौं परिवृत्तिहि होय।
परिवृत्ति सु पलटो करै अधिक न्यून को कोय॥

अथ परिसंख्या लक्षण दोहा।

और ठौर तें मेटि कछु बात एकही ठौर।
बरनत परिसंख्या कहत कबिकोबिद सिरमौर॥

कछु बात और ठौर सें मेटि कै एकही ठौर बरनै तहां परिसंख्या कहत हैं सिरमौर कबि पण्डित। ३१७॥

उदाहरण कबित्त।

सोवत ही मोह-गुन सुजस को लोभ तरव-

रनि कौं छोभ जहां करत बयारिये। कहै मति-
राम एक मान बिना मानिनी सयानबिना चित्र-
नि के रूप निरधारिये॥ तुरँग चपल चन्द्रमंडल
बिकल बेला कुंद है विफल जहां नीचगति
बारिये। दानहीन कलभ कदलिदल कंपजुत
राव भावसिंह जू के राज मैं निहारिये॥३१८॥

तमोगुन सोवतेही है, लोभ सुजस कोही है जहां वृक्ष-
नि को पवनही भय करै है मतिराम कहै है सांति बिना
एक मानिनीही है चतुराई बिना तसबीरनि के रूप निश्चय
हैं, चंचल घोड़ाही हैं मर्याद रहित चन्द्रमण्डलही है बिना
फल कुंदही है जहां नीचो चाल को जलही है दानरहित
हाथी का बच्चाही है कम्प सहित कदली के पत्रही हैं ऐसे
राव भावसिंह जी का राज मैं देखिये है। इहां तमोगुन
लोभ छोभादि कौं और ठौर सें बरजि कै सोवत आदि मैं
ठहराये यातैं परिसंख्या है॥ ३१८॥

बनिता भूषन परकीया आगमिष्यत्पतिका परिसंख्या
उदाहरण दोहा।

सुनत परोसनि को पिया ऐहै आजहि साँझ।
रही कचनही श्यामता कृशता कटि ही माँझ॥

मुग्धा कलहांतरिता सवैया।

आंच न चंद कला बिचराचत सांच न चोरिन

के चरसा मैं। जोग न लोग लुगाइन के संग भोग न रोगन के घरसा मैं ॥ हर्ष महारह संत समा गम हर्ष न सौतिन के अरसा मैं। होत न ग्रीषम मैं बरषा सखि होत सदा बरसा बरसा मैं ॥

दोहा।

सखि प्रतिबिंब बखान तैं है ललितालंकार ।
परिसंख्य तु चवथे चरन मुग्धा मौन प्रकार ॥

अथ विकल्प लच्छण दोहा।

सम-बलजुत द्वै बात को बरनत जहाँ बिरोध।
कविकोविद सबकहत हैं तहँविकल्प श्रुतिसोध॥

समान बल सहित दोय बात को जहां बिरोध बरनै श्रुति के सोध कवि पण्डित तहां विकल्प कहते हैं।

उदाहरण कबित्त।

बिपिनि-सरन कै चरन तकौ रावही के चढ़ौ गिरि पर कै तुरंग परवर मैं। राखौ परिवार कौं की आपनीये हठ राजसंपति दै मिलौ कै नगारे दै समर मैं ॥ कहै मतिराम रिपुरानी निज-नाहनि सौं बोलैं यौं डरानी भावसिंह जू के डर मैं। वैर तौ बढ़ायो कह्यौ काहू कौ न मान्यौ अब दांतनि तिनूका कै कृपान गहौ कर मैं॥

बन कौं तको कै राव के चरनही को सरन तको पर्वत पै चढ़ौ कै बल करिकै तुरंग पै चढ़ौ कुटंब कौं राखो कै अंपनेही हठ कौं राषौ राज और संपति दे कै मिलौ कै नगारा बजा कै संग्राम मैं मिलो, मतिराम कहै है रिपुन की स्त्री अपने पतिन सौं ऐसी बोलैं हैं भावसिंह जो के डर मैं डरपी हुई बैर तौ बढ़ा लोनौं कोई को कह्यौ नहीं मान्यौं अब दातनि मैं तृन पकड़ौ कै हाथ मैं तरवारि पकड़ौ। इहां विपिनि के चरन सरन इत्यादि दोय दोय बात समबल है तिन मैं बिरोध यह है एक होय तौ दूसरी नहीं होय यातैं बिकल्प है॥ ३२०॥

बनिताभूषण गनिका आगमिष्यत्पतिका बिकल्प

उदाहरण दोहा।

अवधि-दिवस गनि गावती बोली हिय हर्षानि।
आज राति दुख भानिहै जमराज कि धनदानि॥

अथ समुच्चय लच्छण दोहा।

बहुत भये इकबारगी तिनको गुंफ जु होय।
ताहि समुच्चय कहत हैं कवि कोविद सब कोय॥

एक बात बहुत हुये तिनको गुंफ होय तिसकौं समुच्चय कहते हैं कवि पण्डित सब कोई॥ ३२१॥

गुंफस्तु गुंफने बाहो रलंकारे च कीर्त्यते।
गुंफोनिबंधः इत्यलङ्कारचन्द्रिकायाम्

उदाहरण सवैया ।

पाइ इकन्त के बाल सो बालम जो रति रूप कला दरसावै । नाही कढ़ै मुख नारि के नाह जहीं हिय सौं हियरो परसावै ॥ काम बढ़ै मतिराम तहीं अति लाल बिलासनि कौं सरसावै । जोवै त्रसै मन मोवै अनंद में रोवै हँसै रस कौं बरसावै ॥ ३२२ ॥

बाल मनै सो बाल एकांत में पाई जो रूपकला में रति सी दीखै है नारि के मुख से नाही कढ़ै है नाह जहां हिया सौं हियो भिडावै मतिराम कहै हैं तहां ही काम बढ़ै है लाल के विलासनि कौं अत्यन्त सरसावै है देखै है डरपै है आनंद में मनकौं भेवै है रोवै है हँसै है रस कौं बरसावै है इहां देखिबो डरपिबो रोइबो हसिबो इत्यादि एक बार हुये यातैं समुच्चय है ॥ ३२२ ॥

बनिताभूषणे मुग्धा आगतपतिका प्रथम समुच्चय उदाहरण दोहा ।

पिय आये लखि नवल तिय हरखी हसी जँभाय ।
काँपी अनुरागी बहरि बैठी सिमटि लजाय ॥

द्वितीय समुच्चय लक्षण दोहा ।

बहसि करत बहु हेतु जँह एक काज की सिद्धि ।
इहो समुच्चय कहत हैं जिनकी है मति सिद्धि ॥

जहां बहुत कारन होड करिके एक कारज की सिद्धि करैं यह भी समुच्चय कहते हैं जिनको बुद्धि सिद्धि है॥

उदाहरण कवित्त।

कुंदन से आँग माँग मोतिन सवारी सारी सोहत किनारीवारी केसरि के रंग की। कहै मतिराम मनि मंजुल तरौना छोटी नथुनी विराजै गजमुक्तनि के संग की॥ कुसुम के हार हियो हरति कुसंभी आँगी सकै को बरनि आभा उरज उतंग की। जोबन जरब महा रूप के गरब गति मदन के मद मद मोकल मतंग की॥

सोना से अंग है मांग मोतीन सैं सुधारी है किनारीदार साड़ी सोहै है केसर रंग को रँगो मतिराम कहै है निर्मल मणिन को तरौंना है छोटी नथ बिराजै है गजमोतीन की जडी हुई फूलन के हार हैं कुसूमल कंचुकी मन कौं चोरै है उरज ऊँचान को प्रभा को वरनि सकै है जोबन के चोट सैं महारूप के गरब सैं गति है सो काम का मद कौं और मतंग का मद कौं दूर करै है। इहां नायिका के बहुत कारनने मतंग को मददूर कियो यातै समुच्चय है॥

बनिताभूषण मध्याआगतपतिका द्वितीय समुच्चय।

उदाहरण दोहा।

पिय आये परदेश तैं भेटत परिजन-भीर।
तनु चष श्रवनन चाह नै बढ़ि तियकरी अधीर॥

अथ कारक दीपक लक्षण दोहा ।

एकहि मै क्रम सौं भये तिनको गुंफ जु होय ।
सो कारक दीपक कह्यौ कबिन ग्रन्थ मत जोय ॥

एक मै क्रम सौं हुया तिनको जो गुंफ होय सो कारक दीपक कह्यौ है कबिन नैं ग्रंथनि को मत देखि कै ॥३२५॥

उदाहरण दोहा ।

फिरि२ आवति जाति भजि राति मधुर मुसकाति
बाललाल को ललितमुख लखिललचाति लजाति॥

फेरि फेरि आती है भजि जाती है राति मधुर मुसकाती है बाल है सो लाल को सुन्दर मुख देखि कै ललचाती है लजाती है इहां आवो जावो मुसकावो इत्यादि क्रम सैं गुंफ है यातै कारकदीपक है ॥ ३२६ ॥

अथ समाधि लक्षण दोहा ।

और हेतु के मिलन ते सुकरु होत जहँ काज ।
बरनत तहाँ समाधि है सकलसुकबि सिरताज ॥

अन्य कारन के मिलने सैं जहां काज ठीक होय तहां समाधि बरनते हैं संपूर्ण सुकबिन के सिरताज ॥ ३२७ ॥

उदाहरण सवैया ।

आयो बसन्त रसाल प्रफुल्लित कोकिल-बोलनि श्रौन सुहाई । भौंरनि को मतिराम कियें गुन काम प्रसून कमान चढ़ाई ॥ रावरो रूप

लग्यौ मन मैं तन मैं तिय के झलकी तरुनाई ।
धीर धरौ अकुलात कहा अब तौ बलि बात सबै
बनि आई ॥ ३२८ ॥

बसन्त आयो है आम फूले हैं कोकिल की बोली का-
नन कौं सुहाई है मतिराम कहै है अलिन को चिल्लो किरें
हुये कामदेव नैं फूलन को धनुष चढ़ायो है आपको रूप
मन मै लग्यो है तिया के तन मैं जवानी झलकी है धीरज
राखो काँई अकुलाते हो अब तौ वारो जाऊँ सब बात बनि
गई है। इहां बसन्तादि अन्य कारन सौं मिलाप कारज
सिद्द भयो यातै समाधि है ॥ ३२८ ॥

अथ प्रत्यनीक लच्चण दोहा ।

प्रबल शत्रु के पच्च पर जहँ बिक्रम उल्लास ।
प्रत्यनीक तासौं कहत कबिजन बुद्धिबिलास ॥

जबर बैरी के पच्चो पै जहां पराक्रम को हर्ष होय तासौं
प्रत्यनोक कहते हैं कवि लोग मति के आनंद सैं ॥ ३२९ ॥

उदाहरण दोहा ।

तो मुख-छबि सौं हारि जग भयो कलंक समेत ।
सरद-इंदु अरबिंदमुखि अरबिंदनि दुख देत ॥

तेरे मुख की शोभा सौ हारि कै जगत मैं कलंक सहित
भयो, शरद ऋतु को चन्द्रमा है सो हे अरबिन्दमुखी कम-
लनि कौं दुख देता है इहां चन्द्रमा नै मुख के पच्चो कम-
लनि कौं दुख दियो यातैं प्रत्यनोक है ॥ ३३० ॥

अथ काव्यार्थापत्ति लक्षण दोहा ।

जोपै जोतो यह कहा इहिँविधि जहां बखान ।
कहत काव्य पद सहित तहँ अर्थापत्ति सुजान ॥

जो पै जो है तौ यह कहा है जहाँ इस तरह को बर्नन होय तहां सुजान काव्य पद सहित अर्थापत्ति कहते हैं ॥

उदाहरण कवित्त ।

बिंब से अरुन अति अमल अधर पर मन्द बिलसत चारु चाँदनी सुबास है। कासौं जाय बरनि बनक नाकबेसरि को ललित बिलोकनि पै बिबिधि बिलास है ॥ कबि मतिराम पाय सहज सुबास आस भौरनि कीभीर न तजत आस पास है। कहा दरपन कैसैं पावत बदनजोति चन्द जाको चेरो अरबिंद जाको दास है ॥२३२॥

किँदूरी से लाल और अत्यन्त निर्मल ओठ पै मंदी सुन्दर चांदनी और सुबास बिशेष लसै है अर्थात् हास्य और स्वास सुगन्ध की आसा पायके भौंरान की भीड़ है सो आस पास कों नहीं छोड़े है। नांक और नथ की बनावटि किस पै बरनो जाय है सुंदर चितवनि पै अनेक तरह के आनंद हैं कांच कांई है मुख की छबि कौं कैसैं पहुंचे जाको चाकर चन्द्रमा है कमल जिसको दास है। इहां चन्द कमल दास है तौ दर्पन कहा है यह कहनि हैं याते काव्यार्थापत्ति है ॥ २३२ ॥

अथ अर्थान्तरन्यास लक्षण दोहा ।

कहि विशेष सामान्य पुनि कै सामान्य बिशेष ।
सो अर्थान्तर न्यास हैं वरनत मति उल्लेष ३३२

विशेष कहै फेरि सामान्य कहै अथवा सामान्य कहि कै विशेष कहै सो अर्थान्तरन्यास है मति अधिक बरनते हैं ॥ ३३२ ॥

उदाहरण सवैया ।

रावरे नेह कौं लाज तजी अरु गेह के काज सबै बिसराये । डारि दियो गुरुलोगनि को डर गांव चवाय मैं नांव धराये ॥ हित कियो हम जो तो कहां तुम तो मतिराम सबै वहराये । कोऊ कितेक उपाय करौ कहूं होत हैं आपने पीव पराये ॥ ३३४ ॥

आप के हित कौं लाज छोड़ी और घर के सब काम भूले गुरू लोगनि को डर गेरि दियो गांव की निन्दा मैं नांव धराये हम ने हित कियो सो तो कहा, है मतिराम कहै है तुमनें तो सब टालि दिये कोई कितनांही उपाय करौ कहूं पराये पति अपने होते हैं अर्थात् नहीं होते इहां तुम विशेष कहि कै पराये पीव अपने नहीं हौंय यह सामान्य कह्यो यातैं अर्थान्तरन्यास है ॥ ३३४ ॥

पुनः दोहा ।

गुन औगुन कौं तनकऊ प्रभु नाही करत बिचार ।
केतकि कुसुम न आदरत हर सिर धरत कपार ॥

प्रभु हैं सो गुन औगुन को जरा भी बिचार नहीं करते हैं केतको का फूलनि को आदर नहीं करते हैं महादेव सिर पै मुंड धरते हैं इहां प्रभु यह सामान्य कह्यौ फेरि हर यह बिशेष कह्यौ यातें अर्थान्तरन्यास है बहु व्यापक सामान्य अल्पव्यापक बिशेष है ॥ ३३५ ॥

बिकस्वर लक्षण दोहा।

कहि बिशेष सामान्य पुनि कहियें बहुरि बिशेष।
कहत बिकस्वर नामतहँ जे कबि अति मतिलेष॥

बिशेष कहि कै फेरि सामान्य कहि कै फेरि बिशेष कहिये तहां बिकस्वर नाम कहते हैं जे कबि अति बुद्धि के लिखे हैं ॥ ३३६ ॥

उदाहरण दोहा।

मधुप मोह मोहन तज्यौ यह स्यामन की रीति।
करौ आपने काज लौं तुम्है भांति सौं प्रीति ३३७

गोपोन की उक्ति उद्धव सें। हे मधुप मोहनैं मोह तज्यौ यह कालान की रोति है, करौ अपने काज तक तुमकौं अपने रंग सौं प्रीति है इहाँ मोहननै मोह तज्यौ यह बिशेष स्यामन की रीति यह सामान्य तुमकौं भांति सें प्रीति यह बिशेष कह्यौ यातें बिकस्वर है ॥ ३३७ ॥

अथ प्रौढ़ोक्ति लक्षण दोहा।

जो अहेतु उत्कर्ष को ताहि बखानत हेत।
प्रौढ़ोकति तासौं कहत जे कबि सुमति सचेत॥

जो बड़ाई को अकारन है तिसकौं कारन कहै तासौं प्रौढ़ोक्ति कहते हैं जे कबि सुमति सचेत हैं ते ॥ २३८ ॥

उदाहरण दोहा।

गंगनीर बिधुरुचि झलक मृदुमुसकानि उदोति।
कनकभौंन के दीप लौं जगमगाति तनजोति ॥

गंगा के जल मैं चन्द्रमा की कांति की झलक की कोमल हँसनि की उदोती है सोना के घर के दीपक सी तन को जोति जगमगावै है। इहा गंगानीर कनकभवन अहेतु कौं उत्कर्ष के हेतु किये यातें प्रौढ़ोक्ति है ॥ २३९ ॥

अथ संभावन लक्षण दोहा।

जो यौं होय तु होय यौं जहँ संभावन होय ।
संभावन तासौं कहत बिमलज्ञान मतिधोय ॥

जो यौं होय तौ होय जहां ऐसो संभावना होय तासौं संभावना कहते हैं निर्मल ज्ञान मैं बुद्धि कौं धोय कै ॥ २४० ॥

उदाहरण कबित्त।

चलत सुभाय पाय पैजनिन की झनक उर उपजन लागे केलि के कलोल हैं। फूलनि के हार हियरे सौं हिरकनि लागे छलकान रस नैन तामरस लोल हैं ॥ श्रौन के सरोज के परस मतिराम लाल कंटकित होन लागे कोमल कपोल हैं। तौ वनै बनाव मिलै जोवन मैं कहूं नीके लोचन के जोवन के बासर अमोल हैं ॥

सहज सुभाय मैं चलतें पग को पैजनीनि को अवाज सें केलि के कलोल हिया मैं उपजने लगें हैं पुष्पन के हार हिया मौं हिरकवा लग्या हैं चंचल नैन कमल छलकने लगी हैं मतिराम कहै है हे लाल कानन के कमल के मिलने सें कोमल गाल रोमांचित होने लगेहैं तौ बनाव बनै जो कहूं बन मैं अच्छी तरह मिलै लोचन की जवानी के दिन अमोल हैं इहाँ जोबन मै मिलै तौ बनो बनै यह है यातैं संभावन है ॥ ३४१ ॥

अथ मिथ्याध्यवसिति लच्छण दोहा ।

एक झुठाई सिद्धि कौं झूठो बरनत और ।
तहँ मिथ्याध्यवसाय कौं कहत सुमति मतिदौर ॥

एक झूठ की सिद्धि कौं और झूठ बनैं तहां मिथ्याध्यवसित कों सुमति हैं ते मति को दौड़ सें कहते हैं ॥

उदाहरण दोहा ।

खल-बचननि की मधुरता चाषि सांप निज श्रौन।
रोम रोम पुलकित भये कहत मोद गहि मौन ॥

दुष्टन के बैननि की मिठाई कौं सर्प अनेक काननि सौं चाखि के बाल पुलकित भये मौंन पकड़ो है सो अनंद कौं कहै है इहाँ खल बचननि मैं मधुरता झूठो बर्नन है सांप के कान नहीं गूंगो कहै नही यह झूठ है याते मिथ्याध्यवसित है ॥ ३४३ ॥

अथ ललित लक्षण दोहा ।

वर्न्य बाक्य के अर्थ को जहँ केवल प्रतिबिंब ।
प्रस्तुत मै बरनत ललित निर्मल मतिबिधु बिंब ॥

वर्न्य बाक्य के अर्थ को जहां केवल प्रतिबिंब होय प्रसंग मैं ललित बरनते हैं निर्मल मति रूप चन्द्रमा के बिंब है ते ॥

उदाहरण दोहा ।

मेरी सीख सिखै न सखि मोसौं उठै रिसाय ।
सोयो चाहति नींद भरि सेज अँगार बिछाय ॥

हे सखी मेरी सीख नही सीखै है मोसौं रोस करि उठै है, नीद भरि सोयो चाहै है अंगारान को सेज बिछाय कै इहां कलहांरिता रूं सखी ने कही तू मेरा कह्यां से नही मनी तासौं दुख पावै है यह बिंब है यह प्रति बिंब है यातैं ललित है ॥ ३४५ ॥

बृहदव्यंग्यार्थचन्द्रिका सवैया ।

बात सुनै नहि तू जन की मन की करतूति न मै मन लावै । लाभ अलाभ नहीं समुझै उरझी सुरझी न गुलाब लखावै ॥ काज अकाज समान गनै अपकीरति कीरति सी भल भावै । तू कसि है घर आवत संपति हाथन द्वार किंवार लगावै ॥ १ ॥

दोहा।

धनदायक सैं नहि मनी गयें करत उपचार ।

कलहान्तरिता पुरतिया है ललितालङ्कार ॥ २ ॥

अथ प्रहर्षन लच्छण - दोहा।

जहँ उत्कण्ठित अर्थ की बिन उपायही सिद्धि ।

तहाँ प्रहर्षन कहत हैं जे कविजन मति सिद्धि ॥

जहां वाञ्छित अर्थ की बिना उद्यमही सिद्धि होय तहां प्रहर्षन कहते हैं जे कवि लोग मति सिद्धि हैं ते॥३४६॥

उदाहरण - दोहा।

स्याम बसन में स्यामनिशि दुरीन तिय की देह।

पहुँचाई चहुंओर घिरि भौंर भीर पिय गेह ॥

काला कपरान मैं कारो राति मै तिया की देह छिपी नहीं चारों तरफ सिमटि के भौंरान की भीड़ि नै पिया के घर पहुंचाई इहां बिना उपायही पिया के घर पहुंचिबो सिद्धि भयो यातैं प्रहर्षन है ॥ ३४७ ॥

दोहा।

मनभावन के व्याह की सुनी सलौंनी वात ।

आँगी मैन उरोज अरु आनँद उर न समात ॥

सलौनी नै पीतम के बिबाह को बात सुनी कंचुकी मै कुच नहीं माते हैं और हृदय मै आनन्द नहीं माता है। इहाँ पीहर मैं कृष्ण सैं मिलिबो बिना उपाय सिद्धि भयो यातैं प्रहर्षन है ॥ ३४८ ॥

व्यंग्यार्थचन्द्रिका—सवैया।

जा सँग नेह निरन्तर हो अति हास बिलासन मोद बढ़ायो। खेलत खेल गुलाब कहै नित ही चित चाहि कियो मनभायो॥ सास रिसात रही तबहू कबहू सपनेहु न कोप जनायो। सो ननदी ससुरारि सिधारत कारन कौन बधू सुख पायो॥ १॥

दोहा।

अब ह्वै है पिय तें मिलन तिय हर्षी इहिँ भाय।
प्रहर्षन सु बिन जतन ही बांछितार्थ हो जाय॥

द्वितीय प्रहर्षन लच्चण दोहा।

जहँ मन इच्छित अर्थ ते अधिक सिद्धि मतिराम।
तहाँ प्रहर्षन औरऊ बरनत मति अभिराम॥

मतिराम कहै है जहाँ मन बांछित प्रयोजन से ज्यादा काम होय तहाँ और भी प्रहर्षन बरनते हैं सुन्दर मति जे हैं ते। ३४९॥

उदाहरण दोहा।

चाहत सत पावत सहस गज पावत हय चाहि।
भावसिंह यौं दानि है जगत सराहत जाहि॥

सौ चाहै हजार पावै घोड़ा चाहै हाथी पावै भावसिंह ऐसा दानी है जाकौं जगत सराहै है। इहाँ मन बांछित सौ रुपया घोड़ा से हजार रुपैया हाथी पाये यातै दूसरो प्रहर्षन है॥ ३५०॥

पुनः कवित्त।

चित्र मैं बिलोकतही लाल को बदन बाल जीते जिहिँ कोटि चन्द सरद पुनीन के। मुस-कानि अमल कपोलनि के रुचि बृन्द चमकै त-रोननि के रुचिर चुनीन के ॥ पीतम निहाय्यो बाँह गहत अचानकही जामै मतिराम मन स-कल मुनील के। गाढ़ै गही लाज मै न कंठ ह्वै फिरत बैन मूल छ्वै फिरत नैन वारि बरुनीन के॥

बाल है सो तसबीर मै कृष्ण को मुख देखै ही, कैसी है बाल जिसनै सरद की पून्यौं के कोटि चन्द्रमा जीते हैं सनि निर्मल है कपोलनि के रुचि के समूहनि मै तरौंनान की चुन्नीन के सुन्दर रुचि के बृन्द चमकैं हैं ऐसी नायिका ने अचानचक पीतम कौं बांह पकड़तो देख्यो कैसो है पी-तम मतिराम कहै है जामैं सब मुनोश्वरन के मन लाज के मनै गाढ़ै पकड़ी बचन कंठ मै आय फिर जाते हैं। नैनन को जल बाफनोन को मूल छूकै फिरै है। इहाँ चित्र देख तैं कृष्ण की प्राप्ति भई यातै दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३५१ ॥

तृतीय प्रहर्षन लक्षण दोहा।

जहाँ अर्थ की सिद्धि को जतनहि ते फल होय।
इहौ प्रहर्षन कहत हैं कवि कोविद सब कोय॥

जहां प्रयोजन की सिद्धि को फल जतन सै होय यह भी प्रहर्षन कहते हैं कवि पंडित सब कोई ॥ ३५२ ॥

उदाहरण दोहा ।

हरि की सुधि कौं राधिका चली अली के भौन।
हँसत बीचही मिलि गये बरनि सकै कवि कौन॥

कृष्ण की खबरि कौं राधिका है सो सखी के घर चली बीच में हँसते हुए मिलि गये सो सुख कौन बरनि सकै है इहां कृष्ण मिलाप का जतन सौं कृष्णही मिले यातैं तीसरो प्रहर्षन है ॥ ३५३ ॥

अथ बिषाद लच्छण दोहा ।

मन इच्छित के अर्थ की प्रापति जहाँ बिरुद्ध ।
तहाँ बिषादहि कहत हैं जे कबिजन मति सुद्ध॥

जहां मन बांछित प्रयोजन की प्राप्ति सें उलटो होय तहां विषादही कहते हैं जे कवि लोग मति शुद्ध हैं ते॥३५३॥

उदाहरण सवैया ।

आवत मैं हरि कौं सपने लखि नैसुक बाट सकोचन छोड़ी । आगे ह्वै आड़े भये मतिराम चली सुचितै चष लालच ओड़ी ॥ ओठनि को रस लैन कौं मोहन मेरी गही कर कंपत ठोड़ी॥ और भटू न भई कछु बात गई इतनेही मै नींद निगोड़ी ॥ ३५५ ॥

हरि कौं सुपने मे आवते देखि के संकोचनि सें थोड़ी राह छोड़ी मतिराम कहे है अगाड़ी होय के आड़े हो

गये सुचित्त कों चलाय कै नैननि मैं लालच कौं ओटि कै अधरनि को रस लेवा कौं मोहन नैं कांपता हाथ सौं ठोड़ी पकड़ी। हे बहन और कछू बात नहीं हुई इतनेही मैं निगोड़ी नींद जाती रही। इहां चुम्बनादि बांछित सैं उलटो बियोग भयो यातै बिषाद है॥ ३५५॥

अथ उल्लास लच्छण दोहा।

औरैं के गुन दोष तै औरै को गुन दोष।
बरनत यौं उल्लास है जे पंडित मतिकोष॥

और के गुन दोष सै और कौं गुण दोष होय यौं उल्लास बरनती हैं जे पंडित बुद्धि के भंडार हं ते। अर्थात् गुन सै गुन दोष सै दोष गुन सै दोष दोष सै गुन यौं चारि भेद जानिये॥ ३५६॥

गुन तै गुन उदाहरण सवैया।

गुच्छनि के अवतंस लसै सिषिपच्छनि अच्छ किरीट बनायो। पल्लव लाल समेत छरी कर पल्लव से मतिराम सुहायो॥ गुंजनि के उर मंजुल हार निकुंजनि तै कढ़ि बाहिर आयो। आज को रूप लखि ब्रजराज को आजही आँखिन को फल पायो॥ ३५७॥

फूलन के गुच्छा ऊपर लसै हैं ऐसो मोरनि की पाँखन को सुन्दर मुकुट बनायो है लाल पानन समेत कामड़ी हाथ

मै है नवीन पान से हाथनि सैं शोभित है चिरमठीन को हृदय मैं सुन्दर हार हैं निकुंजनि मै सैं निकसि कै बाहरि आयो है कृष्ण को आज को रूप देखनै सैं आजही नेत्रनि को फल पायो है। इहां कृष्ण के गुन सैं नेत्रनि कौं गुन भयो यातै उल्लास है॥ ३५७॥

दोष तै दोष उदाहरण दोहा।

मंत्रिन के बस जो नृपति सो न लहत सुखसाज।
मनहि बाँधि दृग देत हैं मनहु मार कौं राज॥

दिवाननि के बस जो राजा हैं सो सुख के समान नही पावै। नैन हैं सो मन कौं कैद करिकै कामदेव कौं राज देते हैं। इहां नैन दोष तें मन्त्रीन कौं दोष है यातैं दूसरो उल्लास है॥ ३५८॥

गुन ते दोष को उदाहरण दोहा।

दुख न मानि जो तजि चल्यो जानि अँगार गँवार।
छितिपालनि की माल मैं तैंही लाल सिँगार॥

गवार है सो अंगार जानि कै छोड़ि चल्यौ तौ दुःख मति मानै हे लाल भूपालन की माला मैं तूही सिंगार है। इहां लाल के गुन तैं गवार कौं दोष है यातै तीसरो उल्लास है ३५९॥

दोष ते गुन को उदाहरण दोहा।

दधि छुड़ाय मोहन लियो सखी सघन बन ठौर।
बड़ो लाभ मन मैं गुन्यौं जोन कियो कछु और॥

हे सखी सघ्य नवन की ठौर मै मोहन ने दही छीन लियो मैनें मन मैं बड़ो लाभ जान्यौ जो कछु और नहीं कियौ। इहां कृष्ण के दोष सैं आप को गुन भयो यातैं चतुर्थ उल्लास है ॥ ३६० ॥

अथ अवज्ञा लक्षण दोहा।

औरै के गुन दोष ते औरै के गुन दोष ।
जहँ न अवज्ञा तहँ कहत कविजन बुद्धि अदोष॥

जहां और के गुन दोष सैं और कौं गुन दोष नहीं होय तहां अवज्ञा कहते हैं ते ॥ ३६१ ॥

उदाहरण सवैया।

रावरे नेह कौं लाज तजी अरु गेह के काज सबै बिसराये। डारि दियो गुरुलोगनि को डर गांव चवाय मै नाव धराये ॥ हेत कियो हम जो तो कहां तुम तौ मतिराम सबै बहराये ॥ कोऊ कितेक उपाय करौ कहूं होत है आपने पीव पराये ॥ ३६२ ॥

अर्थ अर्थान्तर न्यास मै लिख्यौ है इहां नायिका के गुन दोष नायक कौं नहीं लगे यातैं व्यवज्ञा है ॥ ३६२ ॥

दोहा।

मेरे दृग बारिद वृथा बरषत वारि प्रवाह ।
उठत न अङ्कुर नेह को तो उर ऊसर माह ॥

मेरे नैन मेघ नाहक जल समूह गेरते हैं तेरा हिया रूपकाल मैं रमै प्रेम को कुरो नहीं निकसै इहां नायिका के गुन दोष नायक कौं नहीं लगे यातैं अवज्ञा है ॥ ३६३ ॥

दोहा ।

कहा भयो जो तजत है मलिन मधुप दुख मानि।
सुवरन बरन सुबासजुत चम्पक लहै न हानि ॥

काई हुयो जो त्यागै है मलीन भौंरो दुख मानि कै सोना के रंग सुगन्ध सहित चम्पो है हानि नहीं पावै इहां चम्पक के गुन दोष भौंर कौं नहीं लगे यातैं अवज्ञा है ॥

वृहद्वनिताभूषन आकृति गुप्ता उदाहरन—सवैया ।

प्रात लला नवला घर आय हँसे हरषाय लुभाय महाही । देखि तिन्हैं सिर नाय रही मुसकाय रिसाय कही कछु नाहीं ॥ ताहि रिझावन कौं मनमोहन चाल अनेक करी चित चाही । पै रस रोस प्रकाश कर्यो नहि जानि न जाय कहा यह आही ॥ १ ॥

दोहा ।

पिय बिनती अपराध लखि रीझी खिजीन सोय।
अवज्ञा सुगुन दोष करि जहँ गुण दोष न होय॥

अथ अनुज्ञा लक्षण—दोहा।

करत दोष की चाह जहँ ताही में गुन देखि ।
तहां अनुज्ञा कहत हैं कविजन ग्रन्थनि लेखि ॥

जहां दोष की चाह करै तिसी मैं गुन देखि के तहां अनुज्ञा कहते हैं कवि लोग ग्रन्थन कौं लेखि कै ॥३६५॥

उदाहरण - सवैया।

मोर पखानि किरीट बन्यौ मुकुतानि के कुण्डल श्रौन बिलासी । चारु चितौनि चुभी मतिराम सु क्यों बिसरै मुसकानि सुधा सी ॥ काज कहा सजनी कुलकानि सौं लोग हँसैं सिगरे ब्रजबासी॥ मैं तो भई मनमोहन को मुख चन्द लखैं बिन मोल की दासी ॥ ३६६ ॥

मयूर के परन को मुकुट बन्यो है मोतिन के कुण्डल कानन मैं बिलास करते हैं मतिराम कहै है सुन्दर बिलोकनि गडि गई सो कैसें भूलै हँसनि अमृत सी। हे सखी कुल की मर्य्याद से काई काम है सब ब्रजबासी मनुष्य हँसते हैं मैं तो मोहन को मुखचन्द्रमा देखिकै बिना मोल की चेरी हो गई इहां दासी होवो दोष है ताको गुन मानि कै चाह भई यातें अनुज्ञा है ॥ ३६६ ॥

पुनः सवैया।

क्यौं इन आँखिन सौं निरसङ्क ह्वै मोहन को

तन पानिप पीजे। नैक निहारें कलङ्क लगै इहिं गांव बसैं कहो कैसे कै जीजे ॥ होत रहै मन यौं मतिराम कहूं बन जाय बड़ो तप कीजे। ह्वै बनमाल हिये लगियै अरु ह्वै मुरली अधरारस लीजे ॥ ३६७ ॥

कैसें इन नैनन सौं निडर होय कै मोहन का शरीर को पानी पीजे नैक देखे सें कलङ्क लगै है या ग्राम में बसि कै किस तरह जीवें मतिराम कहै है मन ऐसे होतो रहै है कहो कानन में जाय कै बड़ो तपस्या कोजिये तिससे बनमाला होय हिया सौं लागिये और बंसी होय ओठनि को रस लीजिये इहां बनमाल मुरली होइबो दोष है ताकों गुन मानिकै चाह्यौ यातैं अनुज्ञा है ॥ २६७ ॥

वृहद्व्यंगार्थचन्द्रिका – सवैया।

दाजन दै दुर जीवन कौं अरु लाजन दै सजनी कुलवारे। साजन दै मन को नवनेम निवाजन दै मनमोहन प्यारे ॥ गाजन दै ननदीन गुलाब विराजन दै उर मै गुन भारे। भाजन दै गुरु लोगन को डर बाजन दै अब नेह-नगारे ॥

अथ लेस लक्षण – दोहा।

जहँा दोष गुन होत है जहँा होत गुन दोष ।
तहँा लेस यह नाम कहि बरनत कवि मति कोष॥

जहां दोष है सो गुन होय और जहां गुन है सो दोष होय तहां लेस या नाम कह करिकै बुद्धि के भंडार कवि बरनते हैं ॥ ३६७ ॥

दोष ते गुन को उदाहरण दोहा।

कत सजनी ह्वै अनमनी अँसुवा भरति ससंक ।
बड़े भाग नँदलाल सौं झूठहु लगत कलंक ॥

हे सखी क्यों उदास होय कै सडर आंसू भरती है कृष्ण सौं झूठे ही कलंक लगै है तौ बड़े भाग हैं । इहां कलंक दोष कौ गुन मान्यौ यातै लेस है ॥ ३६८ ॥

गुन ते दोष को उदाहरण दोहा।

प्रतिबिम्बित तो बिम्ब मै भूतम भयो कलंक ।
निज निर्मलता दोष यह मन मै मानि मयंक ॥

तो बिम्ब में प्रतिबिम्बित होने से कलंक भयो मयंक ने यह दोष अपनी निर्मलता मानी। इहां निर्मलता गुन सें कलंक दोष भयो यातै लेस है ॥ ३६९ ॥

अथ मुद्रा लक्षण दोहा।

प्रकृत अर्थ पर पदनि सौं शुद्ध प्रकासत अर्थ ।
मुद्रा तासौं कहत हैं कवि मतिराम समर्थ ॥

प्रस्तुत अर्थ के पदनि सौं और अर्थ शुद्ध निकसै तासौं मुद्रा कहते हैं मतिराम कहै है समर्थ कवि हैं ते ॥३७०॥

उदाहरण दोहा।

देह दीप दीपति दिपै वदन चन्द की जोति ।
दामिनिद्युति मुसकानिमृदु सुखकीखानिउदोति॥

देहरूपी दिया की प्रभा दिपै है मुखचन्द्रमा की जोति है बीजरी की कान्ति है मृदुमुसकानि है सो सुख की खानि सोभित है। इहां दीप चन्द दामिनी निकसे याते मुद्रा है ॥ ३७१ ॥

अथ रत्नावली लक्षण दोहा।

प्रस्तुत अर्थनि को जहाँ क्रम तैं थापन होय।
तहाँ कहत रत्नावली कवि रस बुद्धि समोय ॥

जहां प्रासंगिक अर्थनि को क्रम से आरोप होय तहां रत्नावली कहते हैं कवि हैं सो रस मे बुद्धि कौं समोय कै ॥

उदाहरण कबित्त।

जीतय जे रावत ऐरावत सौं जंग अंग पुण्डरीक के गनत पुण्डरीक छद हैं। वामन वामन मृदु कुमुद कुमुद गनै अंजन के जैतवार अंजन से कद हैं ॥ पुष्पदन्तहू के दन्त तोरय ज्यौं पुहुप सार छीन लेत सार्वभौमहू के सदा मद हैं। प्रवल प्रतीक सुप्रतीक के जितैया रैया राव भावसिंह तेरे दान के दुरद हैं ॥ ३७३ ॥

जो रावत ऐरावत सौं जंग जीतैं पुण्डरीक के अंगनि कौं कमल के पत्र गनते हैं बामन कौं बामन गनते हैं। अंजन कौं जीतनेवाले हैं कज्जल से कद के हैं पुष्पदन्त के दातनि कौं तोरैं जैसें फूलनि को सार सदा सार्वभौम के

मद कौं भी छीनि लेते हैं प्रबल प्रतीक है सुप्रतीक के जीतनेवारे हैं, हे राजान के राजा भावसिंह तेरे दान के दुरद हैं ते। इहां ऐरावतादि दिग्गज क्रम सैं कहे यातै रत्नावली है ॥ ३७३ ॥

अथ तद्गुन लक्षण दोहा।

जहाँ आपनो रंग तजि लेत और को रंग।
तद्गुन तहँ बर्नन करत जे कवि बुद्धि उतंग ॥

जहां आपनो रंग छोड़ि कै और को रंग लेत तहां तद्गुन बर्नन करते हैं जे ऊंची मति के कवि हैं ते ॥३७४॥

उदाहरण सवैया।

हीरनि मोतिन के अवतंसनि सोने के भूषन की छवि छावै। हार चमेली के फूलन के तिन मैं रुचि चंपक कौं सरसावै ॥ अंग के संग तैं केसरि रंग की अम्बर सेत मै जोति जगावै। बाल छबीली छपायें छपै नहि लाल कहौ अब क्यौंकरि आवै ॥ ३७५ ॥

हीरा मोतीन का गहनानि मै सोना का गहनान की छवि छावै है चमेली का फूलनि का हार हैं तिनमै चंपा की कान्ति सरसावै है। तन के संयोग सैं स्वेत वस्त्र मै केसरि का रंग की जोति जगावै है। छवि की भरी नायिका है सो दुरायें सैं दुरै नहीं, हे लाल कहो अब कैसैं आवै

इहां गहना हार बसनि नै अपनौं रंग छोड़ि संग रंग लियो याते तदगुन है ॥ ३७५ ॥

बनिताभूषन । मध्यम नायक उदाहरन दोहा ।

पिय अनबोली लखि तुरत ठठकि रहे ब्रजनाथ ।
पुनि हँसती लखि जाय ढिग भये हरितभरिवाथ॥

अथ पूर्व रूप लच्छण दोहा ।

जहाँ और को रंग तजि बहुरि आपनौं लेत ।
बरनत पूरब रूप तहँ कवि मतिराम सचेत ॥

जहां और को रंग छोड़ि के फेरि आपनौं रंग ले ले तहाँ पूर्व रूप बरनते हैं मतिराम कहे है सचेत कवि हैं ते।

उदाहरण दोहा ।

मुकुत हार हरि के हिये मरकत मनिमय होत।
पुनि पावत रुचि राधिका मुख मुसकानिउदोत॥

मोतीन को हार हरि के उर मैं पन्नामय होता है फेरि रुचि कौं पावै है । राधिका के मुख की हाँसी के उदोत सैं इहां मोती नै पन्ना को रंग लेय फेरि आपनौं लियो याते पूर्व रूप है ॥ ३७७ ॥

द्वितीय पूर्व रूप लच्छण दोहा ।

प्रगटित पूरब दशहि को जहँ अनुबर्त्तन होत ।
दूजो पूरब कहि तहाँ बरनत पंडित गोत ॥

जहां पूरब तुल्य को अनुबरता प्रगटित होय तहाँ दूसरो पूर्व रूप पंडितन के समूह बरनते हैं ॥ ३७८ ॥

उदाहरण दोहा।

बदन चन्द को चाँदनी देह दीप की जोति।
राति बिते हू लाल वहि भौन राति सी होति॥

मुख चन्द्रमा की चाँदनी है देह रूपो दिया की जोति है। हे लाल राति बीते पै भी इस घर में राति सी होती है। इहां दिन होने पै भी रातिही रही यातें दूसरो पूर्व रूप है॥ ३७९॥

अथ अतद्गुन लक्षण दोहा।

जहाँ संग मे और को रंग कछू नहि लेत।
तहाँ अतद्गुन कहत हैं कबिजन बुद्धिनिकेत॥

जहां संगति मैं को और कछू रग नहीं ले तहां अतद्गुन कहते हैं कवि लोग बुद्धि के घर॥ ३८०॥

उदाहरण दोहा।

लाल बाल अनुराग सौं रँगत रोज सब अंग।
तऊ न छोड़त रावरो रूप साँवरो रंग॥ ३८१॥

हे लाल नायिका है सो प्रेम सौं रोजोना सब अंग रँगै है तो भी आप को रूप है सो स्याम रंग कौं नहीं छोड़े है अर्थात् अनुराग को रग नहीं लगे है। इहां स्याम नै संगति को गुन नहीं लियो यातै अतद्गुन है॥ ३८१॥

अथ अनगुन लक्षण दोहा।

सम रुचि संगति और के बढ़त आपनौं रंग।
अनगुन तासौं कहत हैं जे कवि बुद्धिउतंग॥

समान कांति और की संगति सैं आपनौं रंग बढ़ै तिस सौं अनगुन कहते हैं जे कवि ऊंची मति के हैं ते ॥२८३॥

उदाहरण दोहा।

बिरी अधर अंजन नयन मँहदी पग अरु पानि।
तन कंचन के आभरन लसत सरस छवि खानि॥

ओठनि मैं बीड़ी नैननि मैं कज्जल पग और हाथन मैं मेहदी शरीर मैं सोना का गहना अधिक शोभा की खानि लसते हैं इहां बिरी अंजन महदी आभरन मैं समान रंग अधरादि संगति सैं अपनौं रंग अधिक भयो यातैं अनुगुन है॥

अथ मीलित लक्षण दोहा।

एक रूप ह्वै जाति मिलि जहाँ होत नहि भेद।
बरनत मीलित है तहाँ जिनकी बानी बेद ॥

जहां मिलि कै एक रूप हो जाय भेद नहीं होय तहां जिनकी बानी बेद हैं ते मीलित बरनते हैं॥ २८४ ॥

उदाहरण कवित्त।

अंगनि मैं चन्दन घनसार अंगराग सेत सारी छीर-फैन की सी आभा उफनाति है। राजत रुचिर रुचि मोतिन के आभरनि कुसुमकलित केस सोभा सरसाति है॥ कवि मतिराम प्रान-प्यारे कौं मिलन जाति करिकै मनोरथनि मृदु-मुसकाति है। होति ना लखाई निसि चन्द की

उज्यारी मुख-चन्द की उज्यार तन छाहौं छपि जाति है ॥ ३८५ ॥

अंगनि मे सेत चन्दन कपूर अंगराग सेत सारी की सी उफनैं है मोतोन का गहनानि की सुन्दर कान्ति राजै है फूलनयुक्त बारन की सोभा सरसाती है मतिराम कवि कहै है प्रानप्यारे सैं मिलने कौं जाती है मनोरथन कौं करिकै कोमल हँसती है राति मे चन्द्रमा की चाँदनी सैं जानी नहीं पड़ै है मुख चन्द्रमा को चाँदनो सैं तन छाया भी छिपि जातो है। इहां चाँदनी सै नायिका मिलि गई यातैं मीलित है ॥ ३८५ ॥

सवैया।

देखि देखि सजनी सयानी सबै कंचन के रंग सम अंगन मै भूषन बनावै ना। नायनिहू लाय लाय मलि मलि भूलि जाय जावक लगायो ना लगायो पार पावै ना ॥ सुकवि गुलाब त्यों प्रदोष के बताये बिन बैठे जिहिँ भौन जनी दीपक ज-गावै ना। कुन्दन कमालन के मालन मै हीर लाल लालन लगाये बिन लाल पहिरावै ना ॥

दोहा

रंग रू अंग प्रकास को गर्व जनावत जोय।
रूपगर्बिता पुरतिया माल लेन तैं होय ॥ २ ॥

पायन जावक मिलि गयो यातें मीलित भाय ।
मीलित मीलित मैं जहाँ भेद न जान्यो जाय ॥

अथ सामान्य लक्षण दोहा ।

भिन्न रूप हू में जहाँ पैये कछु न विशेष ।
तहाँ कहत सामान्य हैं पंडित लोग अशेष ॥

जहां न्यारा रूप मै भी कछू अधिक नहीं पावे तहां सामान्य कहते हैं संपूर्ण पंडित लोग ॥ ३८६ ॥

उदाहरण कबित्त ।

सारी जरतारी की झलक झलकति तैसो केसरि को अंगराग कीन्हौं सब तन मै । तीछन तरनि की किरिनि तैं दुगुन जोति जागति जवाहिर जटित आभरन मै ॥ कवि मतिराम आभा अंगनि अँगारनि की धूम कैसी धारा छवि छाजति कचन मै । ग्रीषम दुपहरी मैं हरि कौं मिलन चली जानी जाति नारि ना दवारिजुत बन मै ॥ ३८७ ॥

जरी की साड़ी को झलक झलकै है तैसोही केसरि को अंगराग शरीर मे कियो है पैनी सूरज की किरिन सौं दूनो जोति जगै है रतनि के जड़े गहनानि में मतिराम कवि कहै है अंगनि को आभा अंगारान की सी है धुवा

को सो धार की छवि बालन मै छाजै है निदाघ की दो- पहरी मे कण सैं मिलने कौं जातो है नारि जानी नहीं जाय है दावानल भिन्न रूप है तौ भी जानि नहीं परी यातै सामान्य है ॥ ३८७ ॥

अथ उन्मीलित विशेष लक्षण दोहा ।

जहँ मीलित सामान्य मै पैयत भेद विशेष ।
उन्मीलित सविशेष कवि बरनत मति उल्लेष ॥

जहां मीलित और सामान्य में कोई अन्तर पावै तहां उन्मीलित और विशेष बड़ी बुद्धि के कवि बरनते हैं ॥३८८॥

उन्मीलित उदाहरण दोहा ।

सरद चाँदनी मै प्रगट होत न तिय के अंग ।
सुनत मंजु मंजीर धुनि सखी न छोड़ति संग ॥

सरद की चाँदनी मै तिया के अंग जाहर नहीं होते सुन्दर मंजीरनि की अवाज सुनती हुई सखी साथ नहीं छोड़ै है। इहां चाँदनी मे मिली नायिका मंजीर-धुनि सैं जानी यातैं उन्मीलित है ॥ ३८९ ॥

विशेषक उदाहरन दोहा ।

आई फूलनि लैन कौं चली बाग मै लाल ।
मृदु बोलनि सौं जानिये मृदुबेलिनि मै बाल ॥

फूल लेने कौं आई है हे लाल बाग मे चली कोमल बातन सौं जानिये है कोमल लतानि मै नायिका यहां बेलि बाल मे बोलबा सौं भेद जान्यौ यातैं विशेषक है ॥

अथ गूढ़ोत्तर लक्षण दोहा।

अभिप्राय सौं सहित जो उत्तर कोऊ देय ।
तिहिँ गूढ़ोत्तर कहत हैं सुकवि सरस्वति सेय ॥

जो कोऊ अभिप्राय करि सहित उत्तर दे तिसकौं गूढ़ोत्तर कहते हैं सुकवि हैं ते सारदा कौं सेइ कै ॥ ३९१ ॥

उदाहरन दोहा ।

ग्वालिन देहुँ बताइ हौं मोहि कछू तुम देहु ।
बंसीबट की छांह मै लाल जाय लखि लेहु ॥

मैं गोपी बता द्यौं तुम कछू मोकौं द्यौ तौ हे लाल बंसीबट की छाया मैं जाय कै देखि ल्यौ इहाँ बंसीबट नीचै मिलाप आशय है यातै गूढ़ोत्तर है ॥ ३९२ ॥

सवैया ।

अब दोय घरी दिन आय रह्यौ पथ जात गुलाव सु ठीक नही । नजदीक न ग्राम उजारि महा मग लूटत लोग अगै दिनही ॥ इहिँ ठाँ वहुधाम सरै सब काम तमाम मिलै वरवस्तु सही । तुम जाहु न जाहु करौ जु रुचै सु दयाधरि मैं हित वात कही ॥ १ ॥

दोहा ।

परदेशी सैं उक्ति तैं स्वयं दूतिका चार ।
उत्तर दीनै भाव तैं गूढ़ोत्तर लंकार ॥ २ ॥

अथ चित्र लक्षण दोहा।

जहँ बूझत कछु बात कौं उत्तर सोई बात ।
चित्र कहत मतिरामकवि सकल सुमतिअवदात॥

जहाँ कछू बात कौं पूछै सोई बात उत्तर होय मतिराम कबि कहै है तिसकौं सब उज्जल सुमति चित्र कहते हैं॥

उदाहरण दोहा।

सरदचंद की चाँदनी को कहिये प्रतिकूल ?।
सरदचंद की चाँदनी कोक हिये प्रतिकूल ३९४

सरद के चन्द्रमा को चाँदनी कहिये किसकौं दुखद है, उत्तर सरद का चंद्रमा की चांदनी चक्रवाकका मनकौं दुखद है इहाँ प्रश्नउत्तर उनही अक्षरों मैं है यातैं चित्र है॥

द्वितीय चित्र लक्षण दोहा।

बहुती बातनि को जहां उत्तर दीजै एक ।
चित्र बखानत हैं तहाँ कबिजन बुद्धिविवेक॥३९५॥

जहाँ बहुत बातनि को एक उत्तर दीजिये तहाँ चित्र कहते हैं कबि लोग बुद्धि के ज्ञान सैं॥ ३९५।

उदाहरण दोहा।

को हरिबाहन जलधिसुत को है ज्ञानजहाज।
तहाँ चतुर उत्तर दियो एक बचन द्विजराज॥

हरि को बाहन कौन है? समुद्र को पुत्र कौंन है? ज्ञान को जहाज कौन है? तहां चतुर ने जवाब एक बात मैं

द्विजराज है अर्थात् गरुड़ चन्द्रमा ब्राह्मण है इहां तीन प्रश्न दियो कि को स्लेष करि एक शब्द में उत्तर है ॥ ३९६ ॥

अथ सूक्ष्म लक्षण दोहा ।

जानि पराये-चित्त की ईहा जो आकूत ।
होय जहाँ सूक्षम तहाँ कहत सुकबिपुरहूत॥३९७॥

जहाँ पराये के मन की बात जानि कै जो आशय सहित चेष्टा होय तहां सूक्ष्मकहते हैं अच्छे कबिन के इन्द्र ॥

उदाहरण सवैया ।

लाल सखीनि मैं बाल लखी मतिराम भयो उर आनद भीनौं । हाथ दूहूनि सौं चंपक गुच्छनि को जुग छाती लगाय कै लीनौं ॥ चन्द-मुखी मुसकाय मनोहर हाथ उरोजनि अन्तर दीनौं । आँखिनि मूंदि रही मिसि कै मुख ढाँपि निचोल को अंचल कीनौं ॥ ३९८ ॥

कृष्ण नै सखी मैं नायिका कौं देखी मतिराम कहै है हृदो आनन्द मैं भेयो भयो, दोनू हाथनि सौं चंपा का फूलनि को जोड़ो छाती सौं लगा लियो चन्दमुखी है सो हसिकै सुन्दर हाथ कुचनि के भीतर कियो मिस करिकै आंषिन कौं मूंदि रही मुख की आड़ मैं निचोल को वस्त्र कियो। इहाँ चंपक फूल को जोड़ो छाती कै लगायो तामै कुचन सौं छाती का स्पर्श की इच्छा जताई तब नायिका

नैं छाती के हाथ लगाइ जताई तुम मेरा हृदय मैं बसौ हौ, आँषि मूंदि के जताई कमल मुदे पै मिलौंगो अर्थात् राति मैं मुख ढापि के जताई चंद्रमा अस्त होयगो तब मिलोंगी यह आशय है याते सूक्ष्म है ॥ ३९८ ॥

सवैया ।

वेष बनाय सखीगन मैं तिय बैठि रही मन आनँद भीनौ । आय तहाँ इक आन सखी कल कंज खिल्यौ कर मैं गहि लीनौ ॥ हेत जनाय कछू मुसकाय गुलाब कहै पग कै ढिग कीनौं । कौंन बिचार बिचारि बधू कलिका करिकै सज-नी कर दीनौ ॥ १ ॥

दोहा ।

पतिप्रणाम जलजात के पद सपरस तें जानि ।
तिय कलिका करिदीनसो साँझमिलन पहिचानि॥
क्रियाचातुरी तैं यहाँ क्रिया विदग्धा चार ।
पर आशय लखि जहँ क्रियाकरै सुसुक्ष्म बिचार॥

अथ पिहित लक्षण दोहा ।

जानि पराई वृत्ति जहँ क्रिया सहित आकूत ।
तहाँ पिहित बर्नन करत जे कवि सुमति सपूत॥

जहां पैला की रीति कौं जानि कै आशय सहित

क्रिया होय तहां पिहित बर्नन करते हैं जे सुमति सपूत कबि हैं ते ॥ ३९९ ॥

उदाहरण सवैया ।

और तिया सँग कुञ्जबिहारी रह्यौ निसि मै बसि कै रसभीनौ । प्रात समै मतिराम बखानत राधिका-मंदिर आवन कीनौ ॥ बोली न बोल कछू लखिकै घनसुंदर को पट नील नवीनौ । अंबर केसरि रंग रँग्यो मुसकाय के मोहन के कर दीनौ ॥ ४०० ॥

कृष्ण हैं सो और स्त्री के साथ रस में भींजि के राति में बसि कै रह्यो, मतिराम कहै है प्रभात भये राधा के घर आवन कियो कछू बोल नहीं बोली मेघ से सुंदर को वस्त्र नीलो नयो देखि कै केसरि का रंग को रँग्यो वस्त्र हसि कै कृष्ण का हाथ में दियो । इहां अन्य नायिका को पट पलटि यह जतायो यातैं पिहित है ॥ ४०० ॥

सवैया ।

नीति बिनै गुनआगर नागर नाह उमाह भयो रँगभीनौं । नेहनह्यो चितचाह गह्यो ढिग आय कह्यो हित बैन प्रवीनो। सो सुनि हो हरषी मुसकी न गुलाब अनादर आदर कीनो ।

क्यों मन अर्पन कारक पीकर दर्पवती तिय द-
र्पन दीनो ॥ १ ॥

दोहा ।

सुरतचिन्ह दरसाव हित तियपिय मुकुरदिखाव।
पिहित जानि परबात कौं आशयसहित जनाव॥

अथ व्याजोक्ति लक्षण ।

और हेतु बचननि जहाँ आकृति गोपन होय ।
व्याज उक्ति तहँ कहतकवि ग्रन्थ समुद्र बिलोय॥

अन्य कारन के बचननि सौं जहां स्वरूप को छिपा-
यबो होय तहां कवि हैं सो ग्रन्थ रूप समुद्र कौं मथि कै
व्याजोक्ति कहते हैं ॥ ४०१ ॥

उदाहरण सवैया ।

लैन गई हुती बागहिँ फूल अँध्यारी लखे डर
बाढ्यौ तहाँई । रोम उठे तन कंप छुय्यो मति-
राम भई श्रम की सरसाई॥ बेलिनि सौं उरझी
अँगिया छतियाँ अति कंटनि की छतिछाई। देह
मैं नेकु सम्हार रह्यौ नहीं ह्यां लगि भागि मरू
करि आई ॥ ४०२ ॥

बाग में फूल लेवा गईही अँधियारी देखि के बड़ो
भय बढ्यो रोम खड़े हुये कंप हुयो मतिराम कहै है पसेव

बढे बेलरीन सों आंगी उरझी, छातो है सो अत्यंत कांटान का घाव सौं छाई, शरीर में नेक होस नहीं रह्यो इहां तांई मुसकलि सैं भागि कै आई हौं इहां भय को बहानौं कहि कै रति के चिन्ह छिपायो यातैं व्याजोक्ति है ॥ ४०२ ॥

व्यं॰ चं॰ सवैया ।

फागुन मास बड़ो उतपात रहै निसिबासर नींद न आवैं। आपस माँझ सबै नर नारि निरंतर चौगुन फाग रचावैं ॥ जो कुल नारि कहूं सरमाय दुरै तबहूं गुरुनारि बतावैं। या ब्रज मैं यह रीत बुरी घर मैं धसि लोग लुगाइन लावैं॥

दोहा ।

सुरत करत एकांत मैं लखी सखी नै आनि ।
ताहि दुरावत आन कहि यौं व्याजोक्ति बखान ॥

अथ गूढ़ोक्ति लच्चण दोहा ।

कहिबे जो कछु और सों कहै और सों बोलि ।
गूढ़ उक्ति तासों कहत जिनकी बुद्धि अमोलि ॥

जो कछू और सों कहनो है सो और सों बतलाय कहै तिसमों गूढ़ोक्ति कहते हैं जिनको मति अमोलो हैं ते॥

उदाहरन दोहा ।

यौं न प्यार बिसराइये लई मोहि तैं मोल ।
मुख निरखत नँदलाल को कहै सखो सौं बोल॥

ऐसे प्यार नहि बिसराइये तैंने मोकौं मोलि लीनौं, कृष्ण को मुख देखती हुई सखी सौं बचन कहैं है इहां कृष्ण सौं कहवा की बात सखी सौं कही यातै गूढ़ोक्ति है॥

सवैया।

घोरन साजि समाज गुलाब बडे परभात लगी कछु बार न। लाल गये सँग साथिन लै वर वासन भूषन धारि हथ्यारन॥ देखि रही करि पाहन सो उर गे जुग जाम जरौं ज्वर भारन। भूलत नाहिँ परोसनि री हम-पीतम को परदेस पधारन॥ १॥

दोहा।

रहत सौतिवस पिय सदा सासू कहत कुबैन।
अब ननदी ह्व घर गई विष सी लागत रैन॥२॥
कहै आन मिस आन से विदगधा सु विख्यात।
गूढ़ोक्ति सु मिस आन के कहै आन सैं बात॥३॥

अथ विवृतोक्ति लक्षण।

जहाँ स्लेष सौं गुप्त सौं सुकवि प्रकासत अर्थ।
बिव्रतोक्ति तहँ कहत हैं जे कवि सुमति समर्थ॥

जहां स्लेष सौं जो गुप्त अर्थ सुकवि है सो प्रकासै तहां विवृतोक्ति कहते हैं जे कवि सुमति समर्थ हैं ते॥ ४०५॥

उदाहरण कवित्त ।

आई है निपट साँझ गैया गई घर मांझ हातैं दौरि आई कहै मेरो काम कीजिये । हौं तो हौं अकेली और दूसरो न देखियत बन की अँध्यारी सौं अधिक भय भीजिये ॥ कवि मतिराम मन-मोहन सों पुनिपुनि राधिका कहति बात साँची कै पतीजिये । कब की हौं हेरति न हेरें हरि पावत हौं बछरा हिरान्यो सो हिराय नेक दी-जिये ॥ ४०६ ॥

बहुत सांझ होय आई है गाय घरमें गई हैं उहां सैं दौरि कै आई हौं मेरो काम करिये मैं तो अकेली हौं और दूसरो नहीं दीखै है जंगल की अँधेरो सै घणो डर मैं भोजौं हौं मतिराम कवि कहै है मनमोहन सों फेरि फेरि राधिका बात कहै है सांचो करिकै पतीजिये कब की मैं देखौं हौं हे हरि देखने सौं नहीं पावती हौ बछरा खो गयो है सो नैक ढूंढ़ि दोजिये इहां सांझ अकेली बन अँधियारी इत्या-दि पदनि सों डर योग्य ठौर में मिलाप योग्य ठौर यह अर्थ कवि ने कह्यो, राधिका कहै है सांची बात मानौं ऐसे गुप्त अर्थ प्रगट्यो यातै विवृतोक्ति है ॥ ४०६ ॥

अथ युक्ति लक्षण दोहा

सरस छपावन कौं जहां क्रिया आन संधान ।

तहाँ जुक्ति बरनन करत कवि कोविद सज्ञान ॥

मरम दुरायबे कौं जहां और क्रिया को संधान करै है तहां कवि पण्डित ज्ञानवान जुक्ति बर्नन करते हैं ॥ ४०७॥

उदाहरण सवैया ।

लेन कौं फूल निकुंजन सांझ गयो मिलि गोपिन को गन भायो । नन्दलला तिय के हिय मै मतिराम तहाँ दृगबान खुभायो ॥ गेह चली सखियाँ सगरी चित सुंदर साँवरे रूप लुभायो । आँखिनि पूरि कटीले कपोलनि कंटक कोमल पाय चुभायो ॥ ४०८ ॥

निकुंजन मैं फूल लेवा कौं गोपीन कौं समूह भायो हुयो मिलि कै नन्द के लाल ने नायिका का हिया मैं मतिराम कहै है तहां नैनरूपी बान गड़ायो, सब सखी घर कौं चली चित्त है सो सुंदर स्याम का रूप पै लुभ्यो आंखिन मैं जल भरि कै कपोलनि पै रोम उठि कै कोमल पग मैं कांटो गड़ायो इहां अश्रु रोम सात्विक छिपाइवे कौं काटौं गड़ायो । यातैं युक्ति है ॥ ४०८ ॥

अथ लोकोक्ति तथा छेकोक्ति लच्छण दोहा ।

जहँ कहनावति अनुकरन लोक उक्ति मतिराम ।
और अर्थ लीन्हे सु जो छेक उक्ति अभिराम ॥

जगत की कहनावति को अनुकरन होय सो मतिराम

कहै है लोकोक्ति है और अर्थ लियें हुयें लोकोक्ति होय सो सुन्दर छेकोक्ति है ॥ ४०९ ॥

लोकोक्ति उदाहरण सवैया ।

मोहन कों मुखचंद लखें बढ़ि आनँद आँखिन ऊपर आवै । रोम उठैं मतिराम कहै तनु चारु कदम्ब लता छबि छावै ॥ बूझति हौं हित कै सखि तोहिँ कहा रिस कै यह भौंह चढ़ावै । मै टन सो गन्यो तीनहु लोकनि तू टन ओट पहार छपावै ॥ ४१० ॥

कृष्ण को मुखचन्द्रमा देखतें आनन्द बढ़िकै नैननि कै ऊपर आवै है मतिराम कहै है रोम उठै हैं शरीर है सुंदर कदंब की शाखा की छबि छावै है हे सखी हित करिकै तोकों पूछों हौं रोस करिकै यह भौंह काहूं चढ़ावै है मैने तीनो लोक कों टन समान गन्यो है तू टन को ओट लै पर्वत कों छिपावै है इहां टन ओट पर्वत यह लोक कहनि है यातै लोकोक्ति है ॥ ४१० ॥

छेकोति उदाहरण सवैया ।

छिति नीर कृसानु समीर अकास समीर बिहै तिनु रूप धरै । अरु जागत सोवत हू मतिराम सु आपनी जोति प्रकास करै ॥ जग ईश अनादि अनन्त अपार वहै सब ठौरनि मैं बि-

हरै । सिगरे तनु मोह मैं मोहि रहे तृन ओट पहार न देखि परै ॥ ४११ ॥

भूमि जल अग्नि पवन नभ चन्द सूर भी तृनवत् रूप कौं धारण करै ॥ जगत का स्वामी आदि अंत पाररहित है वही संपूर्ण स्थाननि मैं विचरै है सब शरीर के मोह में मोहित हो रहे हैं तिनूका के ओट पर्वत नहीं दीखि परे हैं इहां तृन ओट पहार न देखि परै यह लोक कहनि है तामैं यह अर्थ निकस्यौ सर्वव्यापी भगवान तनु के मोह से नहीं दीखै यातै छेकोक्ति है ॥ ४११ ॥

अथ वक्रोक्ति लक्षण दोहा ।

स्लेष काकु सों अर्थ की रचना और जु होय ।
वक्र उक्ति सो जानिये ज्ञान सलिल मतिधोय ॥

स्लेष और काकूक्ति सौं को अर्थ को बनावटि और ही जाय सो वक्रोक्ति जानिये ज्ञान पानी मैं बुद्धि कौं धोय कौ ॥ ४१२ ॥

स्लेष उदाहरण दोहा ।

मेरे मन तुम बसत हौ मैन कियो अपराध ।
तुम्है दोष को देत हरि है यह काम असाध ॥

मेरा मन मैं तू वसै है मैंने कुसूर नहीं कियो है हरि तुमकौं दोष कौन देत है यह कामदेव असाधु है इहां मैन पद के दोय अर्थ, मैं नहि और काम, तासौं अर्थ फिरयो यातै वक्रोक्ति है ॥ ४१३ ॥

अथ काकु उदाहरण सवैया ।

आज कहा तजि बैठी हौ भूषन ऐसही अंग कछू अरसीले । बोलत बोल रुखाई लियें मतिराम सनेह सने हौ सुसीले ॥ क्यों न कहै दुख प्रानप्रिया अँसुवानि रहे भरि नैन लजीले। कौन तिन्है दुख है जिनकी तुम से मनभावन छैल छबीले ॥ ४१४ ॥

(नायक बचन) आज कांई गहने खोलि कै बैठी हौ ? (नायिका का उत्तर) ऐसेही कछु अंग आलस भरे हैं, (नायक बचन) बचन रूखापन लिये बोलती हौ मतिराम कहै है (नायिका बचन) प्रेम लपेटे हौ सुसील, (ना०बचन) हे प्रानप्यारी दुःख क्यौं नहि कहे है लजीले नेत्र आंसून सौं भरि रहे हैं. (नायिका बचन) तिनकौं कौन दुःख है जिनके आप से छबीले छैल मनभावते हैं इहां कौन दुःख है अर्थात् सब दुख है यह काकोक्ति करि अर्थ फिर्यौ यातैं बक्रोक्ति है ॥ ४१४ ॥

अथ जाति लच्छण दोहा ।

जाको जैसो होय सो बरनत जहाँ सुभाव ।
तहँ जाति यह नाम कहि बरनत सब कबिराव॥

जहां जिसको जिस तरह को सुभाव होय सो बरनै तहां जाति या नाम कहि कै सब कबिराव बरनते हैं ॥

उदाहरण कवित्त।

जानत जहान ऐड़ करि सुलतानिनि सौं कीनौ कछवाह कामधुज को बचाव है। देत मतिराम भाट चारन कविन जात कौन पै गनायो जात गज समुदाव है॥ तेग त्याग सालिम सपूत शत्रुशालजू की खीझें रन रुद्र रीझें मौज-दरियाव है। साहनि सौं अकसिबो हाथिन को बकसिबो राव भावसिंह जू को सहज सुभाव है॥

जगत जानै है पातसाहन सों अकड़ करिकै कछवाह कामाधुज को बचाव कर्‌यौ मतिराम कहै है बन्दीजन चारन कविन की जाति कों जो हाथीन को समूह देत है सो कौन पै गनना कियो जाय है तेग और दान मैं शत्रुशाल जी को सपूत सालिम है खीजै तो संग्राम मैं शिव है रीझैं पै देन को समुद्र है पातसाहनि सौं आंट करिबो हाथीन को देबो राव भावसिंहजी को साधारण सुभाव है। इहाँ सुभाव को वर्नन है यातै सुभावोक्ति है॥ ४१६॥

सवैया।

इतरावतिही अबही बतियाँ बतरावतही जिन मैं थल ना। सतरावतिही सखियां जन पै थिति पावतही पल टू पल ना॥ छिन मांहि अचानक आन भई असुवां झर लात परै कल ना।

कस री सखि वाथ भरें धुनि मांथ गुलाब न साथ चलै ललना ॥ १ ॥

दोहा ।

है अज्ञात नवोढ़ यौं पियढिंग मचलत जात ।
बर्नन जाति स्वभाव को स्वभावोक्ति बिख्यात ॥

अथ भाविक लक्षण दोहा ।

जहाँ भयो भावी अरथ बरनत हैं परतच्छ ।
तहँ भाविक सब कहत हैं जिनकी मति है अच्छ ॥

जो अर्थ हो गयो और आगै होयगो ताकौं प्रत्यक्ष बरनते हैं तहां भाविक कहते हैं जिनको बुद्धि अच्छी है ते ॥

उदाहरन कबित्त ।

निसि दिन श्रौननि पियूष सो पियत रहैं छाय रह्यो नाद बाँसुरी के सुरग्राम को। तरनि-तनूजा-तीर बन कुंज बीथिन मैं जहां तहां देख-ति हैं रूप छबिधाम को ॥ कबि मतिराम होत हांतो ना हिये ते नैक सुख प्रेम गात को परस अभिराम को। ऊधो तुम कहत बियोग तजि जोग करौ जोग तब करैं जो बियोग होय स्याम को ॥ ४१८ ॥

राति द्यौस काननि सैं अमृत सो पीती रहैं हैं मुरली के सुरग्राम को नाद छाय रह्यो है सूरसुता के तट पै का

ननकुंज की गलीन मैं जहां तहां शोभा के घर को रूप देखती हैं मतिराम कवि कहै है हिया से नैक जुदो नही होय हैं प्रेम को सुख और शरीर का सुन्दर सरस को सुख, हे ऊधो तुम कहते हो वियोग कौं छोड़ि के जोग करो जोग तब करैं जो स्याम को वियोग होय जब। इहां हुई लीला प्रत्यक्ष वरनी याते भाविक है॥ ४१८॥

द्वितीय उदाहरण दोहा।

जनि चलाइये चलन की चरचा स्याम सुजान।
मै देखति हौं वाहि यह वात सुनत बिन प्रान॥

हे कृष्ण प्रवीन गमन की बात नहि करिये मैं उसकौं या बात सुनतैंही प्रानरहित देखती हौं। इहां बिन प्रान होयगी सो बर्तमान मैं बरनी याते भाविक है॥ ४१९॥

अथ द्विविधा उदात्त लक्षण दोहा।

संपति को अधिकार जो अरु उपलक्षण और।
सो उदात्त द्वै भांति को बरनत कबि सिरमौर॥

जो संपति को आधिक्य और उपलक्षण और को, सो उदात्त दोय प्रकार को सिरमौर कबि बरनते हैं॥ ४२०॥

उदाहरण कबित्त।

पुहुमि को पुरहूत शत्रुशाल को सपूत संगर फतूहैं सदा जासौं अनुरागती। दान देत रीझ मैं दिवान भावसिंह जू कौं धनद के धाम की

तनक निधि लागती ॥ कहै मतिराम मजलिस मैं महीपनि की कविन की बानी हाड़ा सुजस मैं पागती । जेती और राजनि के राजनि मैं संपति हैं तेती रोज राव कै चिराकैं जोति जागती ॥ ४२१ ॥

शत्रुशाल को सपूत है सो पृथ्वी को इन्द्र है संग्राम की ध्वजा जिससैं प्रेम करतो है सदा दिवान भावसिंह जी कौं रीझ मैं दान देतैं कुवेर के घर की दौलति थोड़ीसी लगै है, मतिराम कहै है राजानि की सभा मैं कवीश्वरनि की बोली हाड़ान का जस मैं पागै है जितनी और राजान की राज्यन समेत संपति है तितनी रोजीना राव के रोसनी मैं लगती है। इहां भावसिंह जी की संपति को अधिकता है यातैं उदात्त है ॥ ४२१ ॥

पुनः कबित्त ।

पीयुषपयोधि मद्ध मनिन सौं वद्ध भूमि रोध सौं रुचिर रुचि रोचक रवन मैं । कामतरु बिपिनि कदंब उपबन सीरो सुरभि पवन डोलै मृदु सी गवन मैं॥ चिन्तामनि मंडप बिराजै जगदंब सदा सावधान मतिराम सेवक श्रवन मैं । लंपट लुबुध मन भव मैं भँवत कहा करि भूरि भाव ताको भावना-भवन मैं ॥ ४२२ ॥

अमृत के समुद्र के बीच में मनिन सौं जटित पृथ्वी है तीर है सो सुन्दर सें सुन्दर रोचक को रोचक है तामें कल्प वृच्छनि को बन है कदंबनि को बाग है तामें सीरो सुगन्धित समीर डोलै है कोमल चाल में पारस के मंडप में सदा जगमाता बिराजै है मतिराम कहै है दास को पालना में खबरदार है अरे कपटी लोभी मन संसार में काँई भ्रमै है तिसकी रचनाभवन में बहुत भाव करि। इहाँ भगवती को संपति को बड़ाई है यातै उदात्त है ॥ ४२२ ॥

उपलच्चण उदाहरण दोहा।

निकसत जीवहिँ बांधि कै तासौं राखति बाल।
जमुनातट वा कुंज में तुम जु दई बनमाल ॥

जीव निकसै है उसकौं बांधि कै बाल है सो तासौं राखै है जमुना के तीर पै उस कुंज में आपने जो बनमाला दीनी ही। इहा वा कुंज में बनमाला दीनी ही यह उपलच्चण है यातै उदात्त है ॥ ४२३ ॥

अथ अत्युक्ति लच्चण दोहा।

जो सुंदरतादिकनि की अधिक झुठाई होय।
ताहि कहत अत्युक्ति हैं कबि पंडित सब कोय ॥

जो सुन्दरता आदि की बहुत झूंठ होय तिसकौं अत्युक्ति कहते हैं कबि कोबिद सब कोई ॥ ४२४ ॥

उदाहरण सवैया।

ललित बिलास कोटि मन्द मृदुहास अति

अंग की सुबास मृगमद-बास मन्द की । मदन के मद उनमद नैन मन्दिर मैं गति गरबीली मद मोकल गयन्द की ॥ जोबन की जोति जग मग होत मतिराम लोचन चकोरनि की संपति अनंद की । अधिक अँध्यारी मैं उज्यारी होत ज्यौं ज्यौं कछू चन्द की उजारी मैं उजारी मुख चन्द की ॥ ४२५ ॥

सुन्दर बिलासनि सै कोटि गुणौं मन्द कोमल हास्य है शरीर सुगन्ध नै कस्तूरी की गंध अति मन्दी करी है काम-देव के मद सैं नेत्र उन्मत्त हैं महल मैं गरबीली चाल है सो हाथी का मद कौं दूरि करै है मतिराम कहै है मो जोबन जोति जगमग होय है लोचन रूपी चकोर है तिन के आनन्द की संपति है जैसैं अति अंधेरी में कोई चांदनी होती है तैसैं चन्द की चांदनी मैं मुखचन्द्रमा की चांदनी होती है। इहाँ हास्य सुवास गति जोति मुख की उजारी को अतिसय बर्नन है याते अत्युक्ति है ॥ ४२५ ॥

पुनः दोहा ।

बाल-बिलोचन बारि के बारिधि बढ़ैं अपार ।
जारै जो न बियोग की बड़वानल की झार ॥

नायिका के नैन के जल का समुद्र बहुत बढ़ैं जो बियोग की अग्नि की झल नहीं जलावै तौ इहाँ बिरह से आँसून को अतिसय बर्नन है यातै अत्युक्ति है ॥ ४२६ ॥

अथ निरुक्ति लक्षण दोहा।

जहां जोग तें नाम की अर्थ कल्पना और ।
बरनत तहां निरुक्ति हैं कवि कोविद सिरमौर ॥

जहाँ संजोग सें नाम का अर्थ की रचना और होय तहां निरुक्ति बरनतें हैं कवि पंडितन के सिर के मौर ॥४२९॥

उदाहरण कवित्त।

मोहनि मंत्रनि मनमोहन कियो तें बस बारन ज्यों बांधि राखै तामरस ताग सौं । कवि मतिराम आली अलि सो गुबिन्द कीन्हौं मंडित चरन अरविन्द के पराग सौं ॥ ऐसो पति पायो बड़े भागनि सौं प्यारी सदा सुबरनही कौं पघिलावत सुहाग सौं । स्याम स्याम कहिये सिँगार रस राच्यौ तातें लाल लाल कहिये रँग्यो है अनुराग सौं ॥ ४२८ ॥

मोहनि मंत्रनि सौं मैंने मनमोहन बसि कियो जैसें कमल का तार सौं हाथी कौं बांधि राखै मतिराम कवि कहै है हे सखी गोबिन्द कौं भ्रमर सो कियो भूषित पगरूपी कमल का केसर सौं हे प्यारी बड़े भागनि सौं ऐसो पति पायो है सदा सुबरन सें सुहागा कौं तावै है शृङ्गार रस मैं रचि रह्यो है तिससौं स्याम कहिये है अनुराग सौं रँग्यो है तातैं लाल लाल कहिये है। इहां शृंगार अनुराग के

जोग सैं स्याम लाल नाम का अर्थ की और रचना भई यातें निरुक्ति है ॥ ४२८ ॥

पुनः कबित्त ।

ह्वैकै डहडहे दिन समता के पायें विन सांझ सरसिजनि सरमि सिर नायो है । निसा भरि निसापति करिकै उपाय विन पायें रूप बासर बिरूप ह्वै लखायो है ॥ कहै मतिराम तेरे बदन बराबरि को आदरस बिमल बिरंचि न बनायो है । दरप न रह्यौ ताते दरपन कहियत मुकुर परत ताते मुकुर कहायो है ॥ ४२९ ॥

दिन में प्रफुल्लित होय कै बराबरी पाये बिना संध्या में कमलनि नै लज्जित होय कै मस्तक नवायो है चन्द्रमा है सो सारी राति उपाय करिकै रूप पाये बिना दिन में बिना रूप होय कै दोख्यी है मतिराम कहै है तेरे मुख की बराबरी को काच ब्रह्मा नै नहीं बनायो है गर्व नहीं रह्यौ याते दरप न कहिये है फिरि जाय है यातें मुकर कहायो है । इहाँ रूप के जोग दरपन को दूसरो अर्थ हुयो और मुकुर को दूसरो अर्थ भयो यातें निरुक्ति है॥ ४२९ ॥

अथ प्रतिषेध लच्छण दोहा ।

जहां प्रसिद्ध निषेध को अनुकीरतन प्रकास ।
तहां कहत प्रतिषेध हैं कविजन बुद्धिविलास ॥

जहां प्रसिद्ध बात का निषेध को अनुकथन प्रगट होय तहां प्रतिषेध कहते हैं कवि लोग बुद्धि के आनंद सें॥

उदाहरण सवैया।

ऐसी करौ करतूति बलाय ल्यौं नीकी बड़ाई लहौ जग जातैं। आई नई तरुनाई तिहारीही ऐसें छके चितवौ दिन रातैं॥ लीजिये दान हौं दीजिये जान तिहारी सबै हम जानती घातैं। जानौं हमै जनि वै बनिता जिन सौं तुम ऐसी करौ बलि बातैं॥ ४३१॥

वारी जाऊं ऐसी करनी करो जिससैं जगत मैं अच्छी स्तुति पावो आपकी ही नई जवानी आई है ऐसे मस्त हुये राति दिन देखो हो हे कृष्ण दान लीजिये हम कौं जाने दीजे आपकी घात हम सब जानती हैं हमकौं वे स्त्री मति जानौं जिनसौं आप ऐसो बात करो वारी जाऊं। इहां हम कौं वे वनिता मति जानौं यह प्रसिद्ध को निषेध है यातै प्रतिषेध है॥ ४३१॥

अथ विधि लक्षण दोहा।

जहां सिद्धिहो बात को करत प्रसिद्ध बखान।
विधि भूषन तहँ कहत हैं सकल सुकबि सज्ञान॥

जहां सिद्धि बात हैहो ताको प्रसिद्ध बर्नन करै तहां विधि अलंकार कहते हैं संपूर्ण ज्ञानवान सुष्टु कबि॥४३१॥

उदाहरण कवित्त ।

कोप करि संगर मैं खग्ग कौं पकरि कै बहायो बैरि-नारिन को नैन-नीर सोत है । कहै मतिराम कीन्हौ रीझि कै निहाल महीपालनि के रूप सब गुनिन को गोत है । जागै जगसाहिब सपूत सत्रुसाल जू को दसहूं दिसानि जस अमल उदोत है ॥ खलनि के खंडिवे कौं मंगन के मंडिवे कौं महावीर भावसिंह भावसिंह होत है ॥ ४३३ ॥

संग्राम मैं क्रोध करि कै तरवारि कौं पकड़ि कै बैरीन की स्त्रीनि के नेत्रजल को सोत बहायो मतिराम कहै है रीझि करिकै निहाल कियो राजान के डोल को सब गुनवानन को समूह, जागै है जगत मैं राजा शत्रुशाल जी के सपूत को दसौं दिसानि में निर्मल जस को उदोत, दुष्टनि के काटिवे कौं जाचकनि के भूषित करवे कौं महा सूर भावसिंह है सो भावसिंह होय है । इहां सिद्ध भावसिंह कौं सिद्ध कियो यातैं विधि है ॥ ४३३ ॥

अथ हेतु लक्षण दोहा ।

जहां हेतुमत साथही कीजे हेतु बखान ।
तहां हेतु भूषन कहत कवि मतिराम सुजान ॥

जहां कारज के साथही कारन को वर्नन करिये तहां

हेतु अलंकार कहते हैं मतिराम कवि कहै है सुजान हैं तें॥ ४३४ ॥

उदाहरण सवैया।

और सकै कहि को मतिराम सतासुत के बरनै गुन बानी। राव सही दरियाव जहान को आय जहाँ ठहरात है पानी॥ काम-तरोवर धेनु औ पारस नैकु न मंगन के मन मानी। दारिद-दैत्य बिदारिबे कौं भई भाऊ दिवान को रीझ भवानी॥ ४३५॥

मतिराम कहै है और कौन कहि सकै शत्रुशाल के पुत्र के गुन सरस्वती बरनैं, सत्यही राव है सो जगत को समुद्र है जहां आय कै पानी ठहरै है, कल्पवृक्ष कामधेनु पारस जाचक के मन मैं नहीं मानी दरिद्र रूप दानव कौं मारिवे कौं दिवान भावसिंह की रीझ है सो देवी है। इहां भावसिंह की रीझ कारन, दारिद दूरि होओ कारज, तिनको साथ बर्नन है तातैं हेतु है॥ ४३५॥

पुनः दोहा।

दरपन मैं निज रूप लखि नैंननि मोद उमंग।
तियमुख पियबसि करन को बढ़्यो गर्व को रंग॥

काच मैं अपना रूप कौं देखि कै नेत्रनि मैं हर्ष की उमंग देखि कै पीतम कौं बस करवा को अभिमान को

रंग नायिका का मुख पै बढ्यौ। इहां रूप कारन पीतम को बसि होश्रो कारज साथ है यातैं हेतु है । अथवा पीतम को बसि होश्रो कारन गर्व को रंग बढ़िबो कारज साथ है यातैं हेतु है ॥ ४३६ ॥

द्वितीय हेतु लच्चण दोहा ।

जहां हेतुमत हेतु को बरनत एक सरूप ।
तहां हेतु औरौ कहत सब कबि पंडित भूप ॥

जहां कारज कारन को एक रूप बरनै तहां और हेतु कहते हैं सब कबि पण्डितन के राजा ॥ ४३७ ॥

उदाहरण दोहा ।

नैननि को आनन्द है जिय की जीवनि जानि ।
प्रगट दरप कंदर्प को तेरी मृदु मुसकानि ४३८

तेरी कोमल हांसी है सो नेत्रनि को सुख है जीव की जिवायवेवारी जानि कामदेव को जाहर गर्व है इहां हांसी कारन है आनन्द जीवन दर्प कारज है ताको एक सरूप बरन्यौ यातैं द्वितीय हेतु है ॥ ४३८ ॥

तृतीय हेतु लच्चण दोहा ।

जहँ समर्थिवे अर्थ को प्रगट समर्थन होय ।
तहां हेतु औरौ कहत कबि कोबिद सब कोय ।

जहां समर्थन करवे योग्य अर्थ को समर्थन होय तहां और हेतु कहते हैं कबि पण्डित सब कोई ॥ ४३९ ॥

उदाहरण सवैया ।

भौंह कमान कै लोचन बान कै लाजहि मारि रहै बिसवासी । गोल कपोलनि केलि करै भयो कुंडल लोल हिँडोल बिलासी ॥ कोट किरीट कियें मतिराम करै चढ़ि मोर पखानि मवासी । क्यौं मन हाथ करौं सजनी बनमाल मैं बैठि भयो बनवासी ॥ ४४० ॥

भ्रकुटीन कौं धनुष करिकै नेत्रनि कौं तीर करिकै लाज कौं मारिकै बिश्वासो रहै है बर्तुल गालनि पै क्रीड़ा करै है चंचल कुंडल रूप झुलाकि बिलासो भयो मतिराम कहै है मुकुट को किलो कियें हुयें मयूर की पांषनि पै चढ़ि कै मवासी करैं है हे सजनी कैसें मन कौं बस मैं राखौं बन माला मैं बैठि करिकै बन को बासी भयो । इहां मन बस नहि होय इसके समर्थन कौं भौंह कमानादि कहे यातैं हेतु है ॥ ४४० ॥

पुनः कबित्त ।

देखि महिपालनि की कंपति है छाती ऐसी संपति सहित देत जाचकनि दान है । देत स-रनागत नरेशनि अभयदान महाबीर बैरिन कौं देत भयदान है ॥ कहै मतिराम दिल्लीपति कौं

बड़ाई देत शत्रुशालनंद बलाबंध सुलतान है।
राव भावसिंह जू को सुजस बषानियत लीवे कौं
जहान सब दीवे कौं दिवान है ॥ ४४१ ॥

देखि कै राजानि की छाती कांपै है ऐसी संपति समेत दान जाचकनि कौं दै है सरनै आया राजानि कौं अभय दान देहै महा सूर बैरीन को भय दान देहै. मतिराम कहै है दिल्लीनाथ कौं बड़ाई देहै शत्रुशाल को सुत है सो बलाबंध का पातशाह है राव भावसिंह जी को सुजस बखानिये है लेवा कौं सब दुनिया है देवा कौं दिवाण है इहां लेवे कौं जिहान सब दीवे कौं दिवाण है यह समर्थनीय है ताको जाचक सरनागत बैरी दिल्लीपति कौं दातव्यता करि समर्थन कियो यातै तीसरो हेतु है। यह और ग्रंथनि मैं काव्यलिंग लिख्यो है ॥ ४४१ ॥

दोहा।

रुचिर अर्थ भूषन इते रचि जानै मतिराम।
ताकी बानी जगत मैं बिलसै अति अभिराम ॥

सुंदर अर्थालंकार इतने जो बनाय जानै मतिराम कहै है ताकी अति मनोहर बानी जगत मैं अति शोभा कौं प्राप्त होय ॥ ४४२ ॥

छप्पय।

जब लगि कच्छप कोल सहसमुख धरनि

भारधर । जब लगि आठौं दिशनि दिग्ध शोभित दिग्गज बर ॥ जब लगि कबि मतिराम सगिरि सागर महिमण्डल । अनिल अनल जब लग्गि जोति मंडल आखंडल ॥ नृप शत्रुशाल नन्दन नवल भावसिंह भूपालमनि । जग चिरंजीव तब लगि सुखद कहत सकल संसार धनि ॥ ४४३ ॥

जब तांई कच्छप है बराह है शेष धरनी का बोझ कौं धरै तब तांई आठौ दिशानि के भारी सुंदर दिग्गज शोभित हैं मतिराम कवि कहै है जब तक गिरिन सहित समुद्रनि सहित पृथ्वीमण्डल है जब तक पवन है अग्नि की जोति है इन्द्र को मण्डल है राजा शत्रुशाल को मनोहर पुत्र भाव सिंह राजान की मनि तब तांई जगत मैं चिरंजीव सुखदायक रही सब दुनियां धन्य कहै है ॥ ४४३ ॥

दोहा।

कण्ठ करै सो सभनि मैं शोभै अति अभिराम।
भयो सकल संसार हित कविता ललितललाम ॥

जो कण्ठस्थ करै सो सभानि मैं अति शोभा पावे संपूर्ण जगत के वास्तै सुंदर ललितललाम ग्रन्थ भयो है ॥ ५४४ ॥

इति ललितललामः ।

अब कुबलयानन्द मैं पंचदश अलकार और हैं ते कहि-
यतु हैं॥

छप्पय ।

रसवत १ प्रेयस २ दोय तृतिय ऊर्जस्वित३
जानौ । चवथ समाहित ४ नाम पचम भावोदय
५ मानौ ॥ भावसधि ६ षट भाव शबलता ७
सप्तम कहिये । प्रत्यक्ष८रु अनुमान ९ दशम उ-
पमान १० निवहिये॥ पुनि शब्द११रु अर्थापत्ति
१२ पुनि अनुपलब्धि १३ संभव १४ कहौ । ऐ-
तिह्य१५ सहित सब पंचदश कवि गुलाब भूषण
गहौ ॥ १ ॥

रसवत लक्षण दोहा ।

इक रस रस को अंग ह्वै कै स्थाई को होय ।
कै व्यभिचारी भाव को अंग सुरसवत जोय ॥

एक रस दूसरा रस को अंग होय अथवा स्थाई भाव
को अथवा व्यभिचारो भाव को अंग होय सो रसवत अलं
कार देखो ॥ २ ॥

उदाहरण दोहा ।

जयति जयति योगीन्द्रमुनि कुंभज महा अनूप ।
देखि ताके चुलुक मैं कच्छप मत्स्य सरूप ॥ ३ ॥

जोगीन्द्र महा अनूप अगस्त्य मुनि सर्वोत्कर्षेण वर्तते। जाको चुलू में कच्छप ममत्स्य स्वरूपावतार देखे। यहां मुनि विषयक रति भाव को अंग अद्भुत रस है यातें रसवत है॥ ३॥

प्रेय लक्षण दोहा।

भाव होय अँग भाव को कै रस को अँग चार।
सु है प्रेय कहँ याहि कौं कविभावालंकार॥ ४॥

भाव को अंग भाव होय अथवा रस को अंग भाव सो प्रेयोऽलंकार है याही कौं कवि हैं सो भावाऽलंकार कहैं हैं॥

उदाहरण दोहा।

कब बसि मधि बाराणसी धरि कोपीनहि चीर।
हे हर शिव शंकर जपत फिरिहौं गङ्गातीर॥५॥

कौपीनमात्र चीर धारण करिकै काशी मैं बसि कै। हे हर! हे शिव! हे शंकर! ऐसे जपते हुए गङ्गा के तीर पै कब फिरौंगो। इहां सांतरस को चिन्ता संचारी अंग है यातैं प्रेयस है।

ऊर्ज्जस्वित लक्षण चन्द्रायण।

रसाभास जहँ अंग भास को होय वर।
अथवा भावाभास भाव को अंग तर॥
सो ऊर्ज्जस्वित होय भाव रस अनुचितहि।

भावाभासरु रसाभास क्रम सहित लहि ॥ ६ ॥

जहां भाव को अङ्ग रसाभास होय अथवा भाव को अंग भावाभास होय सो ऊर्ज्जस्वित अलंकार होय है ॥ अनुचित भाव है सो भावाभास है और अनुचित रस है सो रसाभास है ॥ ६ ॥

उदाहरण दोहा।

बन बन भीलन सँग रमत तुव बैरिन की बाम।
अरु अरि तुव गुन गनत निति प्रबलप्रतापी राम ॥

हे प्रबल प्रतापी राम तेरे बैरीन को स्त्री भीलन के संग बन बन में रमती हैं इहां प्रभु विषयक रति भाव को अंग रसाभास है यातैं ऊर्ज्जस्वित है। और तेरे गुन सदा गुनते हैं इहां प्रभु विषयक रति भाव को अंग भावाऽऽभास है यातैं ऊर्जस्वित अलंकार है ॥ ७ ॥

समाहित लच्छण दोहा।

अंग होय रस को जहाँ भाव सांति कै होय।
भाव सांति अँग भाव को जानि समाहित सोय।

जहां रस को अंग भाव शांति होय। अथवा भाव को अंग भाव सांति होय सो समाहित जानो ॥ ८ ॥

उदाहरण दोहा।

पिय ठाढ़े भे मान लखि तिय इत रही बिजोय।
देखत हँसि दीनो ललन तिय तब दीनो रोय ॥

मान देखि करिकै पिय हैं सो ठाढ़े ह्वै रहे । इत कौं तिय है सो विशेष देखि रह्यो । देखतैं पिय नै हंसि दियो तब तिय नै रोय दियो । इहां शृंगाररस को अंग कोपशांति है ॥ यातैं समाहित है ॥ ९ ॥

भावोदय लक्षण ।

होय अंग रस को जहां भावोदय कै होय ।
भावोदय अँग भाव को है भावोदय सोय ॥१०॥

भाव को उदय होय सो भावोदय ॥ जहां रस को अंग भावोदय होय अथवा भाव को अंग भावोदय होय सो भावोदय अलंकार है ॥ १० ॥

उदाहरण दोहा ।

सुनि गुन मोहन के रहै हिय हुलसी अति बाम ।
चहतबिचारिबिचारि उर कबमिलिहैं घनश्याम ॥

मोहन के गुन सुनि कै बाम है सो हिया मैं हुलसी रहै है ॥ उर मैं बिचारि बिचारि कै चाहती है घनश्याम कब मिलैंगे । इहां शृंगार रस को अंग औत्सुक्यसंचारी को उदय है ॥ ११ ॥

भाव संधिलक्षण चन्द्रायण ।

भाव सन्धि जहँ अंग रसहि को कै जहाँ ।
भाव संधि ह्वै अंग भाव को बर तहाँ ॥
भाव संधि है जुरैं बिरुद्ध जु भावही ।
भाव संधि तिहिँ नाम समस्त बतावही ॥ १२ ॥

जहां रस को अंग भाव संधि होय अथवा भाव को अंग भाव संधि होय तहां भाव संधि अलंकार है॥ जो विरुद्ध भाव जुरैं तिसको सम्पूर्ण कवि भाव संधि नाम बतावैं हैं। १२॥

उदाहरण दोहा।

चलत बीर संग्राम कौं लखि बिलखी निज बाल।
अरुन बरन तन मैं उठे बिपुल पुलक ततकाल॥

बीर नैं संग्राम कौं चलतै बिलखी हुई अपनी स्त्री देखी ताही समय अरुन बरन तन मैं बहुत रोम उठे। इहां प्रभु विषयक रति भाव को अंग रमणी प्रेम रस उतकण्ठा की सन्धि है यातैं भाव सन्धि है॥ १३॥

भाव सबलतालच्छण॥ चन्द्रायण॥

भाव शबलता होय अंग रस को मता।
कै भावहि को अंग भाव को सबलता॥
भाव शबलता सोय भाव जहँ बहुतही।
उपजै तहँा सुभाव शबलता कवि कही॥१४॥

रस को अंग भाव शबलता होय अथवा भाव को अंग भाव शबलता होय सो भाव शबलता अलंकार है॥ जहां बहुत भाव उपजै तहां कबिन नै भाव सबलता कही है।

उदाहरण दोहा।

बंशीधर बनमालधर हरि उर मांहि रहाय।
कित मैं कित वह कित मिलन सजनी व्योत बताय॥

बंशीधर बनमालधर हरि हैं सो उर में रहे हैं। कहाँ में। कहां वह। कहां मिलाप है। हे सजनी तू ब्यौंत बता यहां बंशीधर बनमाल धर यह तौ स्मरण। कहां मैं कहां वह यह वितर्क॥ कहां मिलन यह दीनता तूं ब्यौंत बता यह उत्कंठा यह भाव सबलता है सो विप्रलंभ शृंगार रस को अङ्ग है यातैं भाव सबलता अलंकार है॥ १५॥

अथ प्रमाणालंकार लिख्यते।

प्रत्यक्ष लक्षण दोहा।

इन्द्रिय अरु मन ये जहाँ विषय आपनौ पाय।
ज्ञान करैं प्रत्यक्ष तिहिँ कहँ गुलाब कबिराय॥

जहां इन्द्रिय और मन हैं सो अपनो विषय पाय करि के ज्ञान करैं तिसकौं गुलाब कहै है कविराज हैं सो प्रत्यक्ष अलंकार कहै हैं॥ १६॥

उदाहरण दोहा।

लखन सुनहु जिहिँ कारनै होत जज्ञ धनुधारि।
मन मानत है देखि यह है वह जनककुमारि॥

रामचन्द्र को उक्ति। हे लक्ष्मण सुनौं॥ जाके वास्ते धनुष उठायबे कौं जज्ञ होत है मेरा मन मानै है॥ देखि यह वही जनककुमारी है। इहां मन नेत्रन सौं प्रत्यक्ष है यातैं प्रत्यक्षअलंकार है॥ १७॥

अनुमान लक्षण दोहा।

कारण के जानै जहां कारज जान्यो जाय।

है अनुमान अलंकृती कबि गुलाब के भाय ॥

उदाहरण दोहा ।

चटकाली दधिमथनधुनि चरणायुध ध्वनिपाय ।
जानि शर्वरीअन्त तिय रहि पिय-हिय लपटाय ॥

चिरीन की ध्वनि दधिमथन ध्वनि मुर्गा की ध्वनि सुनि के राति को अन्त जानि करि कै तिय है सो पिय का हिया सों लपटाय रही ॥ इहां चटकाली दधिमथन मुर्गा की ध्वनि कारन जानै तैं निशांत कारज जान्यौ, कारज जान्यौ यातैं अनुमान है ॥ १९ ॥

उपमान लक्षण ।

उपमा की सादृश्य तैं बिन देख्यौ उपमेय ।
जानि परै उपमान सो अलंकार है ज्ञेय ॥२०॥

उपमान की सादृश्य सें बिना देख्यो उपमेय जानि परै सो जानिवे योग्य उपमान अलंकार है ॥ २० ॥

उदाहरण दोहा ।

मन्मथ सम सुंदर लसै रवि सम तेज विशाल ।
सागर सम गंभीर है सो दसरथ को लाल ॥२१॥

कामदेव की समान सुंदर लसै है। सूर्य समान विशाल तेज है। समुद्र समान गंभीर है सो रामचन्द्र है इहां कामादि उपमानन सै रामचन्द्र जाने गये यातें उपमान है ॥

शब्द लक्षण दोहा।

जहाँ शास्त्र अरु लोक को बचन प्रमाण बखान।
सो शब्दालंकार है भाषत सुकबि सुजान ॥२२॥

जहां शास्त्र और लोक का बचन का प्रमाण को बखान होय सो शब्दालंकार है सुकवि सुजान हैं सो भाषते हैं ॥ २२ ॥

उदाहरण दोहा।

धर्मबिना सुखनहिँ मिलै गुरुबिन लहै न ज्ञान।
ज्ञान बिना नहिँमुक्ति ह्वै पचिपचि मरै अजान ॥

धर्म बिना सुख नहिँ मिलै। गुरु बिना ज्ञान नहि मिलै ज्ञान बिना मुक्ति नहिं होय। अजान हैं सो पचि पचि कै मरे हैं। इहां शास्त्र प्रमाण है यातैं शब्दालंकार है ॥२३॥

अर्थापत्तिलक्षण दोहा।

जहाँ व्यर्थ भे अर्थ कौं और जोग सैं थाप।
अर्थापत्ति अलंकृति सु भाषत सुकवि सदाप॥२४॥

जहां व्यर्थ भये अर्थ कौं और जोग सैं थापै सो अर्थापत्ति अलंकार गर्व सहित सु कवि भाषते हैं॥ २४ ॥

उदाहरण दोहा।

तिय तेरे कटि है यहै मैं कीनौं निर्धार।
जो न होय तौ को धरै बिपुल पयोधर भार॥

हे तिय तेरे कटि है यह मैंने निश्चय कियो है जो नहिं होय तौ भारी कुच भार कौं कौन धारै है यहां नहीं

यह व्यर्थार्थ कुच धारण योग करि ठहरायो । यातैं अर्थापत्ति है ॥ २५ ॥

अथ अनुपलब्धिसंभव लक्षण दोहा ।

जानि परै नहिँ बस्तु कछु अनुपलब्धि है सोय ।
जहँ संभव ह्वै बस्तु को संभव नाम सु होय ॥२६॥

जहां कछु बस्तु नहिं जानि परै सो अनुपलब्धि अलङ्कार है ॥ जहां बस्तु को संभव होय सो संभव नामक अलंकार होय है ॥ २६ ॥

अथ अनुपलब्धि उदाहरण दोहा ।

नहिँ तेरे कटि सबकहत कुच थित बिनआधार ।
इन्द्रजाल यह काम को लोक करत निर्धार ॥

तेरे कटि नहिं है । सब कहते हैं कुचन की स्थिति बिना आधार है । यह कामदेव को इन्द्रजाल है ऐसे लोक निश्चय करते हैं ॥ इहां कटि को अभाव है ॥ यातैं अनुपलब्धि है । २७ ॥

अथ संभव को उदाहरण दोहा ।

सुनी न देखी तुव शदृश हे ब्रृषभानुकुमारि ।
जानत हौं कहु होयगी विपुलाधार बिचारि ॥

हे ब्रृषभानकुमारि समान तो देखी है न सुनी है परन्तु पृथ्वी बड़ो बिचारि कै जानौं हौं कोई होयगी । इहां बस्तु को संभव है यातें संभवालंकार है ॥ २८ ॥

अथ ऐतिह्यलक्षण दोहा ।

सु ऐतिह्य प्राचीन कोउ चलि आई जु कहानि ।
ताको वक्ता प्रथम को नहिन परै पहिचानि ॥

जो कोई प्राचीन कहानी चली आई होय ताको प्रथम वक्ता नहीं पहिचान्यौ परै सो ऐतिह्य अलंकार है ॥

उदाहरण दोहा ।

हे सीता उर धीर धरि जन धरि मन अपघात ।
जीवत सो नर सुख लहै यहै लोक की बात ॥

त्रिजटा की उक्ति । हे सीता हृदय मैं धीरज धरि मन मैं अपघात मति धरै । जो आदमी जीवै सो सुख पावै यह लोक की बात है । इहां जीवत सो नर सुख लहै यह लोक कहानी है यातें ऐतिह्य है ॥ ३० ॥

इति प्रमाणालंकाराः ।

अथ संसृष्टिशंकर लिख्यते दोहा ।

भूषण शब्दरु अर्थ के आपस मै मिलि जाँहि ।
संसृष्टिरु शंकर तहाँ ये जुग नाम कहाँहि ॥३१॥

जहां शब्द और अर्थ के अलंकार आपस में मिलिजांहि तहां संसृष्टि और शंकर ये दो नाम कहावैं हैं ॥ ३१ ॥

अथ संसृष्टि लक्षण दोहा ।

एक अलंकृति कौं रहै नहि दूसर की चाह ।
बाधकहू इक आन को होय नहीं किँहुँ राह ॥३२॥

जुदे जुदे भासैं सकल अपनी अपनी ठाम ।
तिल तंडुल की रीति करि है संसृष्टि सुनाम ॥

एक अलंकार कौं दूसरे अलंकार की चाह नहीं रहै और एक अलंकार दूसरे अलंकार को बाधक भी किसी राह सें नहीं होय ॥ ३२ ॥

तिल तंडुल की रीति करिकै सब अपनो अपनो ठौर पर जुदे जुदे भासैं सो संसृष्टि नाम है ॥ ३३ ॥

अथ संसृष्टि भेद दोहा ।

अर्थं अर्थ के भूषणरु शब्द शब्द के होंय ।
अर्थ शब्द के होंय यौं त्रय संसृष्टि विजोय ॥३४॥

अर्थ अर्थ के अलंकार होंय और शब्द शब्द के अलंकार होंय और अर्थ शब्द के अलंकार होंय ऐसें तीन संसृष्टि देखो ॥ ३४ ॥

अथ शंकर लक्षण दोहा ।

पय पानी की रीति करि होंय परस्पर लीन ।
ताको शंकर नामही भाषत परम प्रवीन ॥३५॥

दूध जल रीति करिकै अलंकार परस्पर लीन होंय ताको परम प्रवीन हैं सो शंकर नाम भाखते हैं ॥ ३५ ॥

अथ शंकर भेद दोहा ।

है अंगांगी भाव अरु सम प्राधान्य वषानि ।
संदेह अरु इक वाचकानुप्रवेश चव मानि ॥३६॥

अंगांगी भाव शंकर है सम प्राधान्य २ शंकर बखानौं संदेह कर ३ और एक बाचकानुप्रवेश शंकर जानौं ये चारि भेद हैं ॥ ३६ ॥

अथ अंगागी भाव लक्षण दोहा ।

बीज वृक्ष के न्याय करि इक इक को अँग होय।
सो अंगांगी भाव है कबि गुलाब मत जोय ।३७।

बीज के न्याय करिकै एक अलङ्कार दूसरे अलंकार को अंग होय सो अंगांगी भाव शंकर है गुलाब कबि के मत मै देखौ ॥ ३७ ॥

अथ सम प्राधान्य शंकर लक्षण दोहा ।

दिन दिनपति के न्याय करि संगप्रगटैं सँगभास।
नाम सम प्राधान्यहो कबिगुलाब कह तास ।३८।

दिन सूर्य्य न्याय करि अलंकार साथ ही प्रगटैं साथ ही भासैं गुलाब कबि है सो ताको नाम समप्रधान्य कहैं हैं ॥

अथ संदेह शङ्कर लक्षण चन्द्रायण ।

प्रथम मिटायें द्वितिय अलंकृति भासही ।
द्वितिय मिटायें प्रथम बिशेष प्रकासही ॥
बाध न इक कौं एक राति दिन न्याय करि ।
तिँहिँ शंकर संदेह कहत कवि मोद धरि ॥३६॥

पहिलो अलंकार मिटाये सैं दूसरो अलंकार भासै दूसरो अलंकार मिटाये सैं पहिलो अलंकार प्रकासै राति दिन

न्याय करि एक कौं एक बाधे नहीं ताकौं संदेह शंकर कहत हैं कबि मोद धरि करि कै ॥ ३९ ॥

अथ एकबाचकानुप्रवेश शंकर लक्षण दोहा ।

न्याय नृसिंहाकार करि पदरु बाक्य इक मांहि ।
जुग भूषण इकवाचकानुप्रवेश कहि ताहि ॥४०॥

नृसिंहाकार न्याय करि एक पद और एक बाक्य मैं दोय अलंकार होंय ताकौं एक बाचकानुप्रबेश शंकर कहौ ॥ ४० ॥

अर्थ अर्थ को प्रथम संसृष्टि को उदाहरण दोहा ।

शशि सो उज्जल मुख लसै खंजन हैं मनु नैंन ।
अधर नासिका बिंब शुक मधुर सुधा से बैन ॥

शशि सो उजलो मुख लसै है नैन हैं सो मानो खंजन हैं ॥ अधर और नासिका हैं सो किंदूरी और शुक हैं ॥ सुधा से मीठे बचन हैं ॥ यहां उपमा उत्प्रेक्षा यथासंख्य अर्थालंकार करि संसृष्टि है ॥ ४१ ॥

अथ कामांधा उदाहरन सवैया ।

छाड़त ना पति कौं छिनहू गुरुलोगन को मन मानत भै ना । कानि करै सखियानहु की न कथै मदमार भरे बड़ बैना ॥ नाक चढ़ाय भ्रमा भृकुटी त्रिपुटी भरि भाल सुभावत सैना ॥ बान मनोभवचापचढ़े सम राखत उन्नत दीरघ नैना॥

दोहा।

स्वभावोक्ति पद त्रयन मैं उपमा चौथे मांहि ।
जुग अर्थालंकार करि ह्यां संसृष्टि सराहि ॥४३॥

द्वितीय संसृष्टि को उदाहरण दोहा।

कर की करकी बर चुरी धूरि-धूसरित देह ।
कत मुकरत परखी परत सुख सौं सनी सनेह ॥

सुन्दर कर की चूरी करकि गई है धूरि करि कै धूसरी देह है। क्यौं नटै है। पिछानी परै है। मुख सौं सनेह मैं सनी है यहां यमकछेकानुप्रास शब्दालंकारन की संसृष्टि है ॥ ४४ ॥

अथ नवल अनंगा उदाहरन सवैया ।

उच्च हँसै नहि रोस करै मधुरै मृदु बैन बखानि सुटेरै। देहरि लांघि कढ़ै घर तैं नहि सासन-सासन नैक न गेरै ॥ कानि करै गुरुलोगन की अति नेह-नही नहि नैनन फेरै। पै पति की बर बात कहै तब भौंह भ्रमाय सखी तन हेरै ॥

दोहा ।

सासन सासन मैं जमक लखि छेकानुप्रास ।
शब्द शब्द जुग योग तैं ह्यां संसृष्टिहि भास।४६।

तृतीय संसृष्टि को उदाहरन दोहा ।

दृग से दृग हैं याहि के मुख सौ मुखही आहि।
कर से कर कुच से कुचहि उपमा उपजै काहि ॥

याके दृग से याके ही दृग हैं। मुख सो मुखही है। कर से कर ही हैं कुच से कुच ही हैं। उपमा कौन कौं उपजै इहां छेकानुप्रास अनन्वय शब्दार्थालंकार की संसृष्टि है ॥

अथ आरूढ़ यौवना उदाहरन सवैया ।

आज लखी इक गोपसुता करि-कुंभन से कुच की छवि ऐना। है नहि चंपक की तन सी दुति आनन सी शशि की दुति है ना ॥ गोल कपोल अमोल मनोहर पोषन-प्रान सुधा सम बैना। कंजन-भंजन खंजन-गंजन है मनरंजन साँजन नैना ॥ ४८ ॥

दोहा ।

पूर्णोपम लुप्तोपमा अनुप्रास अनुमानि ।
चवथ प्रतीप द्वितीय पद यौं संसृष्टि पिछानि ॥

इति संसृष्टिः ।

अथ अंगांगी भाव शंकर उदाहरण दोहा।

हलत पवन सैं तरुनतर दीखत छांह अचूक।
शशिहरि नैं तम-गज हनें मानहु तिनकी टूक॥

पवन सैं हालते वृच्चन के नीचै जो अचूक छाया दीखती है सो मानो शशिसिंह नैं तम रूप हाथी मारे हैं तिनके टूक हैं। यहां शशिहरि तमगज रूपक है सो उत्प्रेच्चा को अंग है यातैं अंगांगी भाव शंकर है॥ ५०॥

सम प्राधान्य शंकर उदाहरण दोहा।

लंघित तुंग पयोधर सु रबितुरगावलि चार।
मध्य अरुण नायक मनहु नभ-श्रीमरकत हार॥

ऊचे मेघन कौं उलाड़ती हुई सूर्य्य का घोड़ान की पंक्ति है सो हमारी रच्चा करो सो मानौं मध्य मैं है लालमणि जाकै असे आकाश लच्मी को पन्ना को हार है॥ इहां स्लेष उत्प्रेच्चा समासोक्ति साथ ही प्रगटते हैं साथही भासते हैं। यातें सम प्राधान्य शंकर है। नभ श्री मैं नायिका व्यवहार को आरोप है सो समासोक्ति है। नायक नाम सारथी और हार की मणि को है। "नायको नेतरि श्रेष्टे हारमध्यमणावपीति" विश्वः॥ ५१॥

अथ संदेह शंकर उदाहरण कवित्त।

शोभा तिहुंलोक की मसालो शेष केलि मेलि
रूप बर भाजन मैं फेरि फेरि जोवती। चंदन

कपूर रस चोवा मधि सानिसानि निज निपुनाई सब ताही मांझ पोवती ॥ सुकबि गुलाब जो ब-नाय बिधि-कारीगर कुंकुम कनक बिज्जुसार जल धोवती। श्रोपनी पियूष लेय नीकी भांति श्रोपती तौ राधामुख चंद की समान चंद होवती ॥

तीनौं लोक की शोभा है सो मसालो इकट्ठो करि रूप है सो सुन्दर भाजन होय तामैं धरि कै फेरि फेरि शुद्ध करती। चन्दन कपूर शृङ्गार रस इनका चोवा मैं सानि कै अपनी सब चतुराई ताही मैं लगाती गुलाब कवि कहै है ब्रह्मा कारीगर है सो केसर सोनो बिजुरी इनको सार है सो जल होय तामैं धोतौ अमृत रूप श्रोपनी लेय कै श्राछी तरह सैं श्रोपतौ तौ राधा का मुख चन्द्रमा की समान चन्द्रमा होतौ यहां संभावना है जो यौं पद सैं श्रौर न श्रैसो चन्द्रमा होय न राधाका मुख की समान होय यह मिथ्याध्यवसित है दोनू मैं असंभव है यातें सन्देह शंकर है। जोवती पोवती धोवती श्रोपती यौं भूत काल मैं अन्वय होय तब तौ संभावना होय। श्रौर जोवै पोवै धोवै श्रोपै तब होवै तौ होवै यौं भविष्यति काल मैं अन्वय होय तब मिथ्याध्यवसिति होय ॥ ५२ ॥

अथ एक बाचकानुप्रवेश शंकर दोहा।

हे हरि दीनदयालु मैं यह मांगौं सिर नाय।
तुव पद पंकज श्रासरै मन मधुकर लगि जाय॥

हे हरि दीनदयालु मैं यह शिर नवाय करि कै मागौं हौं तुह्मारे चरण कमल के आसरे मेरो मन भ्रमर लगि जाय। इहां पदपंकज मनमधुकर मैं रूपक छेकानुप्रास है यातैं एक बाचकानुप्रवेश शंकर है। काहू के मत मैं शब्दार्थालंकार का हो एक बाचकानुप्रवेश होय है । काहू के मत मैं अर्थालंकारन को बी होय है। जहां शब्दार्थालंकार जुदा जुदा होय तहां संसृष्टि है । अरु जहां एक पद मैं दोनौं हौंय तहां एक बाचकानुप्रवेश शंकर है ॥ ५३ ॥

इति संसृष्टिशंकर सम्पूर्णं ॥

श्रीयुत जसयुत विजययुतयुतमन बांछित काम।
राजो महि सिर शेष लों सुतन सहित नृप राम॥
अब संवत उनईस से बावन फागुन मांहि ।
श्रीरघुबीरनरेश नैं सुन्यौ ग्रन्थ चित चाहि ॥५४॥
शीलसदन जनदुखकदन मदनरूप रनधीर ।
अरिमदमर्दन बर बदन निर्मल मन रघुबीर ॥

सवैया ।

धीरन मैं रनधीर महा पर-पीरनिवारन मैं इकलोई । सागरशील सयानन को गुनआगर आहि उजागर जोई ॥ कित्ति दिगन्तन लौं रहि

छाय दया धनदायकता नहि गोई । है महि-
मंडल को मघवा रघुबीर समान न दीसत कोई ॥

दोहा ।

ग्राम दोय ताजी मगज दिये राम रणधीर ।
कंचन कंकन पगन मैं पहिराये रघुबीर ॥ ५७ ॥
दियो हुक्म सुनि ग्रन्थ इमि श्रीरघुबीर भुवाल ।
उदाहरन भूषनन के निज कृत धरहु रसाल ॥
सो सासन सिर धरि धरे मम ग्रंथन तें टारि ।
उदाहरन भूषनन के जिँहिँ ठाँ जोग्य निहारि ॥
जबलगि महि अहि शिर रहै जबलगि सागरनीर ।
तबलगि राजो सुखसहित सुवन सहित रघुबीर ॥

इति श्रीमद्गुलाबकबिरायेण बिरचिता ललितकौमुदी
संपूर्णा ।



भाषा काव्य के ग्रन्थ—अलङ्कार।

अलङ्कार मञ्जरी	०)
कविकुलकण्ठाभरण	०)
कर्णाभरण	०)
चेतचन्द्रिका	।०)
दीपप्रकाश	०)
भाषाभूषण	०)

नायिका भेद।

नायिका भेद बरवै में	०,
रसप्रबोध	।०)
रसराज	।)
शृङ्गारनिर्णय	।०,
सुन्दरशृङ्गार	।)
शृङ्गारसुधाकर	२॥)
सुन्दरी सर्वस्व	२-)
सुन्दरीविलास	।०)
सुधानिधि	॥,
जगतबिनोद	॥)

नखसिख।

केशवदासकृतनख सिख	०)
चन्द्रशेखरकृत नखसिख	०,
बलभद्रकृतनखसिख	०)

मैनेजर भारतजीवन बनारस सिटी।